



पी. एण्ड एस. बैंक

# राजभाषा अंकुर

जून, 2026

पर्यावरण  
विशेषांक



१६ ग्री वाणिज्य नीति २०१६

पंजाब एण्ड सिंध बैंक  
Punjab & Sind Bank

ਪੰਜਾਬ ਐਂਡ ਸਿੰਧ ਬੈਂਕ  
(भारत सरकार का उपक्रम / A Govt. of India Undertaking)

राजभाषा विभाग



## बैंक द्वारा लाभांश चेक की सपुर्दगी



माननीय वित्त एवं कॉरपोरेट मामलों की मंत्री श्रीमती निर्मला सीतारमण को लाभांश चेक की सांकेतिक प्रतिलिपि भेंट करते बैंक के प्रबंध निदेशक व मुख्य कार्यपालक अधिकारी श्री स्वरूप कुमार साहा, कार्यपालक निदेशक श्री रवि मेहरा और श्री राजीवा और साथ में मुख्य वित्तीय अधिकारी श्री अर्नब गोस्वामी।

## कॉरपोरेट सामाजिक दायित्व



बैंक ने अपने कॉरपोरेट सामाजिक दायित्व पहल के अंतर्गत मुख्यमंत्री राहत कोष, असम में ₹50 लाख का योगदान दिया। माननीय मुख्यमंत्री को चेक की सांकेतिक प्रतिलिपि सौंपते हुए अधिकारीगण।

## पंजाब एण्ड सिंध बैंक

प्रधान कार्यालय राजभाषा विभाग की हिंदी पत्रिका

## राजभाषा अंकुर

(केवल आंतरिक वितरण हेतु)

बैंक हाउस, प्रथम तल, 21, राजेन्द्र प्लेस, नई दिल्ली - 110008

## मुख्य संरक्षक

श्री स्वरूप कुमार साहा

प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी

## संरक्षक

श्री रवि मेहरा

कार्यपालक निदेशक

श्री राजीवा

कार्यपालक निदेशक

## मुख्य संपादक

श्री गजराज देवी सिंह ठाकुर

महाप्रबंधक सह मुख्य राजभाषा अधिकारी

## संपादक व प्रकाशक

सुश्री हरप्रीत कौर

मुख्य प्रबंधक (राजभाषा)

## संपादक मंडल

श्री स्वराज चन्द्र

वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा)

श्री बिभाष कुमार

वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा)

डॉ. भारती

प्रबंधक (राजभाषा)

ई-मेल: ho.rajbhasha@psb.bank.in

पंजीकरण संख्या: एफ.2(25) प्रैस.91

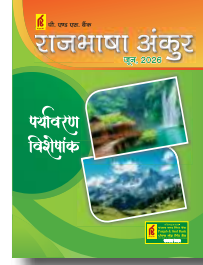
राजभाषा अंकुर में प्रकाशित सामग्री में दिए गए विचार, संबंधित लेखक के अपने हैं। पंजाब एण्ड सिंध बैंक का प्रकाशित विचारों से सहमत होना ज़रूरी नहीं है। सामग्री की मौलिकता एवं कॉपीराइट अधिकारों के प्रति भी लेखक स्वयं उत्तरदायी है।

मुद्रक : बी.एम. ऑफसेट प्रिंटर्स

एच-37, सेक्टर-63, नोएडा (उत्तर प्रदेश)

फोन नं. : 98110 68514

ई-मेल: bmooffsetprinters@gmail.com



जून, 2026

## विषय सूची

| क्र.सं. | विवरण                                                                                 | पृष्ठ संख्या |
|---------|---------------------------------------------------------------------------------------|--------------|
| 1.      | संपादक मंडल/विषय-सूची                                                                 | 1            |
| 2.      | आपकी कलम से                                                                           | 2            |
| 3.      | संपादकीय                                                                              | 3            |
| 4.      | प्लास्टिक (पॉलिमर) नोटों का भविष्य                                                    | 4-7          |
| 5.      | पर्यावरण संरक्षण में बैंकों की भूमिका                                                 | 8-10         |
| 6.      | पर्यावरण संरक्षण और बैंकों की पहल                                                     | 11-14        |
| 7.      | डिजिटल लेन-देन का भारतीय अर्थव्यवस्था पर प्रभाव                                       | 15-16        |
| 8.      | तेल संकट और भारत                                                                      | 17-18        |
| 9.      | एफसीएनआर(बी) जमा और भारतीय अर्थव्यवस्था                                               | 19-20        |
| 10.     | काव्य-मंजूषा                                                                          | 21           |
| 11.     | हिंदी कार्यशाला                                                                       | 22-23        |
| 12.     | राज्य स्तरीय बैंकर्स समिति: वित्तीय समावेशन एवं समन्वित बैंकिंग विकास का सशक्त माध्यम | 25-27        |
| 13.     | भारतीय योग प्रणाली एवं वैश्विक परिकल्पना                                              | 28-29        |
| 14.     | पंडवानी को सजीव करती- मोर तीजन                                                        | 30-31        |
| 15.     | वाराणसी : अनादि संस्कृति, आस्था और ज्ञान की शाश्वत नगरी                               | 32-34        |
| 16.     | हाथरस : ब्रज संस्कृति की मधुर पहचान                                                   | 35-36        |
| 17.     | एकजुटता से ही जीत है, बंटवारे से हार....                                              | 37-38        |
| 18.     | चरित्र निर्माण में पुस्तकों की भूमिका                                                 | 39-42        |
| 19.     | सब कुछ पहले से तय है                                                                  | 43-44        |

## आपकी कलम से



**राजेन्द्र कुमार रैगर**  
मुख्य महाप्रबंधक  
आंचलिक कार्यालय,  
चंडीगढ़

“राजभाषा अंकुर” का मार्च 2026 अंक पढ़कर अत्यंत संतोष और गर्व की अनुभूति हुई। यह अंक विषय-विविधता, प्रस्तुति, भाषा-शैली तथा सामग्री की उपयोगिता के दृष्टिकोण से अत्यंत उत्कृष्ट और प्रशंसनीय है। पत्रिका में समसामयिक विषयों, बैंकिंग क्षेत्र के बदलते परिदृश्य, सामाजिक सरोकारों और साहित्यिक अभिव्यक्तियों का संतुलित एवं सारगर्भित समावेश इसे विशेष बनाता है।

इस अंक की सबसे बड़ी विशेषता इसकी व्यापक विषय-वस्तु है। ‘अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस’ पर आधारित आलेख तथा महिला उद्यमिता से संबंधित प्रेरक सामग्री न केवल जागरूकता बढ़ाती है, बल्कि समाज में महिलाओं की बढ़ती भूमिका और आर्थिक सशक्तिकरण को प्रभावी ढंग से रेखांकित करती है। इसी प्रकार “विकसित भारत @2047 में बैंकों की भूमिका” जैसे लेख देश के आर्थिक विकास में बैंकिंग क्षेत्र के योगदान को स्पष्ट करते हुए पाठकों को नई दिशा प्रदान करते हैं। बैंकिंग के आधुनिकीकरण को दर्शाते हुए ‘कृत्रिम बुद्धिमत्ता पर आधारित आलेख अत्यंत ज्ञानवर्धक है, जिसमें एआई के लाभ, चुनौतियाँ और भविष्य की संभावनाओं का सरल एवं व्यावहारिक विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। यह लेख तकनीकी विषय को सहज भाषा में प्रस्तुत करने का उत्कृष्ट उदाहरण है। पत्रिका में “मानसिक स्वास्थ्य”, “ग्राहक दृष्टिकोण”, “हिंदी कार्यशालाएं” तथा विविध राजभाषा गतिविधियों का समुचित विवरण भी सम्मिलित है, जो न केवल कार्मिक कल्याण और संगठनात्मक विकास को रेखांकित करता है, बल्कि हिंदी के प्रगतिशील उपयोग के प्रति प्रेरित भी करता है।

साहित्यिक पक्ष की दृष्टि से “काव्य-मंजूषा”, यात्रा-वृत्तांत, प्रेरक व्यक्तित्वों के संक्षिप्त परिचय तथा लोक-साहित्य से जुड़े लेख पत्रिका को और अधिक जीवंत एवं पठनीय बनाते हैं। इससे यह स्पष्ट होता है कि पत्रिका केवल प्रशासनिक या तकनीकी प्रकाशन नहीं, बल्कि एक समग्र सांस्कृतिक दस्तावेज भी है। संपूर्ण अंक की भाषा सरल, शुद्ध एवं प्रभावी है, जो पाठकों को सहज रूप से जोड़ती है। साथ ही सज्जा, चित्र चयन और पृष्ठ विन्यास आकर्षक एवं संतुलित होने के कारण पत्रिका की पठनीयता और भी बढ़ जाती है।

अंत में संपादकीय मंडल तथा सभी रचनाकारों को इस उत्कृष्ट प्रकाशन के लिए हार्दिक बधाई देता हूँ। ‘राजभाषा अंकुर’ न केवल हिंदी के संवर्धन में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है, बल्कि ज्ञानवर्धक, प्रेरणादायक और व्यवहारिक सामग्री के माध्यम से बैंक कार्मिकों और पाठकों को निरंतर समृद्ध कर रही है। भविष्य में भी इसी प्रकार उच्च गुणवत्ता से परिपूर्ण अंक प्रकाशित होते रहें।

पंजाब एण्ड सिंध बैंक के प्रधान कार्यालय, राजभाषा विभाग द्वारा प्रकाशित राजभाषा अंकुर पत्रिका का नवीन अंक मार्च 2026 उत्कृष्ट, ज्ञानवर्धक एवं आकर्षक है। पत्रिका की विषय-वस्तु समसामयिक, उपयोगी तथा विविध आयामों को समेटे हुए है। विशेष रूप से इसमें प्रकाशित उड़िया लेख एवं उसका हिंदी अनुवाद भारतीय भाषाओं के मध्य समन्वय एवं भाषाई एकता की भावना को सशक्त रूप से अभिव्यक्त करता है। साथ ही, बैंकिंग एवं अर्थव्यवस्था से संबंधित ज्ञानवर्धक लेख पाठकों के ज्ञान में सार्थक वृद्धि करते हैं तथा वर्तमान बैंकिंग परिदृश्य को सरल एवं प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करते हैं।

पत्रिका में प्रकाशित प्रत्येक लेख विषय की गहराई, भाषा की सहजता तथा प्रस्तुतीकरण की गुणवत्ता का उत्कृष्ट उदाहरण है। इसके अतिरिक्त, पत्रिका में प्रयुक्त चित्रों का बेहतरीन संकलन इसे और अधिक आकर्षक, जीवंत एवं पठनीय बनाता है। चित्र विषय-वस्तु के अनुरूप हैं तथा पाठकों की रुचि बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

यह राजभाषा पत्रिका न केवल हिंदी के प्रचार-प्रसार में महत्वपूर्ण योगदान दे रही है, बल्कि बैंक के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लिए ज्ञान, प्रेरणा और नवाचार का एक प्रभावी मंच भी सिद्ध हो रही है। इस उत्कृष्ट प्रकाशन हेतु प्रधान कार्यालय, राजभाषा विभाग तथा संपादक मंडल को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ।



**राम सहाय मीना**  
क्षेत्रीय प्रबंधक,  
क्षेत्रीय कार्यालय,  
गुरदासपुर



# संपादकीय

प्रिय साथियो,

सनातनी जीवन परंपरा से हमें प्रकृति के साथ सह जीवन की प्रेरणा मिलती है। भारतीय मनीषियों ने हमेशा प्रकृति को उपभोग की वस्तु नहीं, बल्कि जीवन का आधार माना है। अथर्ववेद के 12वें खंड के प्रथम सूक्त में कहा गया है कि 'माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः' अर्थात् 'भूमि मेरी माता है और मैं पृथ्वी का पुत्र हूँ।' उक्त कथन का उद्घोष कर भारत ने सैकड़ों वर्षों से मानव और प्रकृति के अटूट रिश्ते को विश्व पटल पर रेखांकित किया था।

आज विश्व एक साथ कई मोर्चों पर लड़ रहा है। घोर उपभोक्तावादी सोच के कारण अंधे विकास की तेज दौड़ में हम सभी शामिल हैं। आर्थिक विकास और जलवायु परिवर्तन को तराजू के दो अलग-अलग पल्लों में रखकर नहीं देख सकते। हमें दोनों को साथ में लेकर चलना है। बढ़ता तापमान, अनियमित ऋतु चक्र और प्राकृतिक आपदाएं इनकी प्रारंभिक चेतावनी हैं कि पर्यावरण का सिर्फ दोहन करेंगे तो उसका गंभीर परिणाम भुगतना पड़ेगा। इसलिए समय-समय पर पर्यावरण द्वारा दिखाए जाने वाले संकेतों को दरकिनार नहीं किया जा सकता। जैव विविधता पर पड़ता प्रतिकूल प्रभाव यह संकेत देते हैं कि विकास का कोई भी मॉडल पर्यावरणीय संतुलन की उपेक्षा कर दीर्घकाल तक सफल नहीं हो सकता। एक जिम्मेदार समाज के रूप में हमारा दायित्व है कि हम प्रकृति के संरक्षण को अपनी जीवनशैली और विकास यात्रा का अभिन्न अंग बनाएं।

भारतीय संस्कृति सदैव प्रकृति के साथ सह-अस्तित्व का संदेश देती रही है। यही जीवन-दृष्टि आज वैश्विक जलवायु संकट से निपटने का सबसे प्रभावी मार्ग भी है। ऊर्जा संरक्षण, संसाधनों का विवेकपूर्ण उपयोग, हरित प्रौद्योगिकी का विस्तार तथा जनभागीदारी जैसे प्रयास विकास और पर्यावरण के बीच संतुलन स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

वर्ष 2047 तक भारत ने 'विकसित राष्ट्र' बनने का जो महती संकल्प लिया है, उसकी सिद्धि केवल सकल घरेलू उत्पाद के आंकड़ों, गरीबी उन्मूलन, वित्तीय समावेशन आदि से नहीं, बल्कि हमारे पर्यावरण के स्वास्थ्य से मापी जाएगी। यह यात्रा तभी पूर्ण होगी जब हमारी आर्थिक प्रगति पर्यावरणीय उत्तरदायित्व के साथ कदम से कदम मिलाकर चलेगी। 'हरित वित्त' को बढ़ावा देना आज समय की सबसे बड़ी मांग है। बैंकों को अपनी ऋण नीतियों में आमूलचूल बदलाव करते हुए पर्यावरण-अनुकूल उद्योगों, सौर और पवन ऊर्जा परियोजनाओं तथा अपशिष्ट प्रबंधन से जुड़े स्टार्टअप्स को प्राथमिकता देनी होगी। जब पूंजी का प्रवाह 'हरित और सतत' विकास की ओर होगा, तब उद्योग जगत स्वतः ही कार्बन उत्सर्जन कम करने वाली तकनीकों को अपनाने के लिए प्रेरित होगा। उत्तरदायी ऋण नीति के माध्यम से वित्तीय संस्थान यह सुनिश्चित कर सकते हैं कि किसी भी ऐसी परियोजना को वित्तीय सहायता न मिले जो हमारी जैव विविधता को नुकसान पहुंचाती हो।

आज आवश्यकता इस बात की है कि हम आधुनिक हरित प्रौद्योगिकी का विस्तार करें और उसे जनभागीदारी से जोड़ें। ऊर्जा संरक्षण और जल संचयन को हमें अपनी दैनिक आदतों में शामिल करना होगा। आइए, विश्व पर्यावरण संरक्षण की भावना को आत्मसात करते हुए हम सभी एक ऐसे भारत के निर्माण का संकल्प लें, जहाँ आर्थिक समृद्धि, पर्यावरणीय संतुलन और सामाजिक उत्तरदायित्व साथ-साथ आगे बढ़ें। यही विकसित भारत की सच्ची पहचान और आने वाली पीढ़ियों के प्रति हमारी सबसे बड़ी जिम्मेदारी होगी।



( गजराज देवी सिंह ठाकुर )

महाप्रबंधक

सह मुख्य राजभाषा अधिकारी

## प्लास्टिक (पॉलिमर) नोटों का भविष्य



गोपाल कृष्ण

**मा**नव सभ्यता के विकास के साथ-साथ विनिमय प्रणाली भी निरंतर विकसित होती रही है। वस्तु-विनिमय से लेकर धातु मुद्रा, कागजी नोट और अब पॉलिमर बैंकनोट तक की यात्रा आर्थिक विकास तथा वैज्ञानिक प्रगति का प्रतीक है। आधुनिक अर्थव्यवस्था में मुद्रा केवल भुगतान का माध्यम नहीं, बल्कि राष्ट्र की आर्थिक स्थिरता, मौद्रिक नीति तथा नागरिक विश्वास का आधार है।

इक्कीसवीं सदी में मुद्रा प्रबंधन केवल नोटों की छपाई तक सीमित नहीं रह गया है, बल्कि यह राष्ट्रीय सुरक्षा, आर्थिक दक्षता, पर्यावरणीय उत्तरदायित्व तथा तकनीकी नवाचार का समन्वित विषय बन चुका है। बढ़ती जालसाजी, नकदी प्रबंधन की बढ़ती लागत और सतत विकास की वैश्विक आवश्यकता ने अनेक देशों को पारंपरिक कपास-आधारित बैंकनोटों के स्थान पर पॉलिमर बैंकनोट अपनाने के लिए प्रेरित किया है। डिजिटल भुगतान प्रणालियों के तीव्र विस्तार के बावजूद नकदी का महत्व समाप्त नहीं हुआ है। भारत सहित अनेक देशों में करोड़ों लोग प्रतिदिन नकद लेन-देन करते हैं। ऐसी स्थिति में मुद्रा का टिकाऊ, सुरक्षित, स्वच्छ और कम लागत वाला होना अत्यंत आवश्यक है।

मुद्रा केवल लेन-देन का माध्यम नहीं, बल्कि किसी राष्ट्र की आर्थिक शक्ति, प्रशासनिक क्षमता तथा नागरिकों के विश्वास का प्रतीक भी है। वैश्विक स्तर पर बढ़ती जालसाजी, नकदी प्रबंधन की बढ़ती लागत तथा पर्यावरणीय चुनौतियों ने केंद्रीय बैंकों को नई तकनीकों की ओर उन्मुख किया है। इन्हीं प्रयासों का परिणाम है पॉलिमर बैंकनोट।

वर्तमान समय में विश्व की अधिकांश केंद्रीय बैंक मुद्रा को अधिक सुरक्षित, टिकाऊ तथा पर्यावरण-अनुकूल बनाने की दिशा में कार्य कर रही हैं। इसी क्रम में पॉलिमर बैंकनोट आधुनिक मुद्रा प्रबंधन का एक महत्वपूर्ण नवाचार बनकर उभरे हैं। डिजिटल मुद्रा तथा डिजिटल भुगतान में तेजी के उपरांत भी देश में लगभग ३42 लाख करोड़ की मुद्रा परिचालन में है। इनमें से छोटे मूल्य के नोट का जीवन काल मात्र एक से दो वर्षों का ही रहता है। इसलिए भारतीय रिज़र्व बैंक द्वारा नियमित रूप से नोट छापने का कार्य चलता रहता है। भारत में भी आरबीआई द्वारा लगभग डेढ़ दशक पूर्व पॉलिमर नोट के प्रचालन व प्रयोग के संबंध में एक सीमित पायलट परीक्षण किया गया था। तदुपरांत यह 10 और 20 रुपये के पॉलिमर नोटों (प्लास्टिक से बने नोट) के



परीक्षण की दूसरी तैयारी कर रहा है। यह केवल मुद्रा के स्वरूप का परिवर्तन नहीं, बल्कि भारतीय नकदी प्रबंधन प्रणाली में एक व्यापक तकनीकी परिवर्तन का संकेत है।

मुद्रा किसी भी राष्ट्र की आर्थिक संप्रभुता, वित्तीय विश्वसनीयता और जनविश्वास का सबसे सशक्त प्रतीक होती है। बदलती प्रौद्योगिकी, बढ़ती जालसाजी, नकदी प्रबंधन की बढ़ती लागत तथा पर्यावरण संरक्षण की वैश्विक चिंताओं ने विश्वभर के केंद्रीय बैंकों को पारंपरिक कागजी मुद्रा के स्थान पर पॉलिमर बैंकनोट अपनाने की दिशा में प्रेरित किया है। आज विश्व के अनेक विकसित और विकासशील देशों ने पॉलिमर बैंकनोटों को या तो पूर्णतः अपनाया है अथवा चुनिंदा मूल्यवर्गों में उनका सफल प्रयोग किया है।

इन बैंकनोटों की विशिष्ट संरचना उन्हें पारंपरिक कपास-आधारित नोटों की तुलना में अधिक सुरक्षित, टिकाऊ और पर्यावरण-अनुकूल बनाती है। ऑस्ट्रेलिया, कनाडा, यूनाइटेड किंगडम, न्यूजीलैंड और रोमानिया जैसे देशों के अनुभव बताते हैं कि पॉलिमर बैंकनोट केवल तकनीकी नवाचार नहीं, बल्कि आर्थिक दक्षता का भी महत्वपूर्ण माध्यम है।

भारत में भी नकली मुद्रा की चुनौती, छोटे मूल्यवर्ग के नोटों का शीघ्र नष्ट होना तथा मुद्रा प्रबंधन की बढ़ती लागत को देखते हुए भारतीय रिज़र्व बैंक समय-समय पर पॉलिमर बैंकनोटों के परीक्षण की दिशा में कार्य करता रहा है। यदि भविष्य में इनका व्यापक उपयोग प्रारंभ होता है, तो यह भारतीय मुद्रा प्रणाली के इतिहास का एक महत्वपूर्ण परिवर्तन होगा।

## पॉलिमर बैंकनोट क्या हैं?

पॉलिमर बैंकनोट विशेष प्रकार के द्विअक्षीय उन्मुख पॉलीप्रोपाइलीन से निर्मित होते हैं। सामान्य कागजी नोटों की तरह इनमें कपास आधारित लुगदी का प्रयोग नहीं किया जाता, बल्कि बहुलकीय पदार्थ की पारदर्शी एवं अत्यंत टिकाऊ फिल्म का उपयोग किया जाता है। इस पर बहुस्तरीय सुरक्षा विशेषताएँ, सूक्ष्म मुद्रण, होलोग्राम, पारदर्शी विंडो, रंग परिवर्तित करने वाली स्याही तथा मशीन द्वारा पढ़ी जा सकने वाली सुरक्षा संरचनाएँ अंकित की जाती हैं।

वैश्विक स्तर पर ऑस्ट्रेलिया से प्रारंभ हुई यह तकनीक आज विश्व के कई देशों द्वारा अपनाई जा चुकी है। भारत भी इस दिशा में परीक्षण चरण में है। इस आलेख में पॉलिमर बैंकनोटों की अवधारणा, विकास, वैश्विक अनुभव, आर्थिक एवं पर्यावरणीय प्रभाव, सुरक्षा विशेषताएँ, भारत की संभावनाएँ तथा चुनौतियों का समग्र विश्लेषण किया जाएगा। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि प्रारंभिक लागत अधिक होने के बावजूद पॉलिमर बैंकनोट दीर्घकाल में अधिक लाभकारी सिद्ध होते हैं।

पॉलिमर मुद्रा का इतिहास 1967 में ऑस्ट्रेलिया में बढ़ती नकली मुद्रा की समस्या से प्रारंभ होता है। कई वर्षों के अनुसंधान के बाद 1988 में ऑस्ट्रेलिया ने विश्व का पहला आधुनिक पॉलिमर बैंकनोट जारी किया। 1996 तक उसके सभी बैंकनोट पॉलिमर में परिवर्तित हो चुके थे।

इसके पश्चात न्यूजीलैंड, रोमानिया, कनाडा, वियतनाम, ब्रुनेई, यूनाइटेड किंगडम, मालदीव, बारबाडोस, ओमान तथा पूर्वी केरेबियाई देशों सहित अनेक राष्ट्र इस दिशा में आगे बढ़े। आंशिक रूप से अथवा चरणबद्ध ढंग से इसे अपनाने वाले प्रमुख देशों में भारत, सिंगापुर, मलेशिया, थाईलैंड, चीन, संयुक्त अरब अमीरात, दक्षिण अफ्रीका, ब्राजील, मेक्सिको, सऊदी अरब मुख्य रूप से देखा जा सकता है।

वर्तमान में लगभग 60 देशों में पॉलिमर बैंकनोट पूर्णतः अथवा आंशिक रूप से प्रचलन में हैं। यह तथ्य उल्लेखनीय है कि जिन देशों ने पॉलिमर मुद्रा अपनाई, वहाँ नकली/जाली नोटों की संख्या में उल्लेखनीय कमी आई तथा बैंकनोटों का औसत जीवनकाल कई गुना बढ़ गया।

पिछले तीन दशकों में पॉलिमर बैंकनोटों ने पारंपरिक कागजी मुद्रा की अनेक सीमाओं को चुनौती दी है। उनकी अधिक आयु, उन्नत सुरक्षा विशेषताएँ तथा पुनर्चक्रण की क्षमता ने उन्हें भविष्य की मुद्रा के रूप में स्थापित किया है।

## पॉलिमर बैंकनोट की अवधारणा

पॉलिमर बैंकनोट विशेष प्रकार के प्लास्टिक-द्विअक्षीय उन्मुख पॉलीप्रोपाइलीन से निर्मित होते हैं। इनमें बहुस्तरीय सुरक्षा तकनीकें सम्मिलित होती हैं, जैसे पॉलिमर नोटों में पारदर्शी विंडो, होलोग्राम,

सूक्ष्म मुद्रण, रंग परिवर्तित करने वाली स्याही तथा बहुस्तरीय सुरक्षा विशेषताएँ होती हैं जिन्हें नकली बनाना अत्यंत कठिन है। यही कारण है कि ऑस्ट्रेलिया, कनाडा और ब्रिटेन जैसे देशों में नकली मुद्रा की घटनाओं में उल्लेखनीय कमी दर्ज की गई। कागजी नोटों की तुलना में पॉलिमर नोट औसतन 2.5 से 4 गुना अधिक समय तक चलते हैं। वे जल्दी फटते नहीं, घिसते नहीं तथा सामान्य उपयोग में लंबे समय तक नए जैसे बने रहते हैं।

कागज या कपास के बैंक नोटों की तुलना में पॉलिमर बैंक नोटों का उपयोग करने के कई फायदे हैं। पॉलिमर नोटों पर व्यापक रूप से विस्तृत छवियों को उत्पन्न करने के लिए उपयोग की जाने वाली अपेक्षाकृत महंगी तकनीक नकली बनाना मुश्किल बनाती है। नए पॉलिमर नोटों में कई उन्नत सुरक्षा विशेषताएँ भी हैं, जिन्हें आसानी से सत्यापित किया जा सकता है, लेकिन नकली बनाना कठिन है। चूंकि पॉलिमर नोट पूरी तरह से जलरोधी होते हैं, इसलिए वे कागजी नोटों की तरह नमी को अवशोषित नहीं करते हैं। पॉलिमर नोटों में एक सुरक्षात्मक परत होती है जो उन्हें गंदगी, तेल और तरल से बचाती है। इसलिए, कागजी बैंकनोटों की तुलना में, पॉलिमर बैंकनोट काफी साफ हैं। यदि पॉलिमर नोटों की ठीक से देखभाल की जाए, तो वे गंदे नहीं होंगे और आसानी से लटकेंगे नहीं। पॉलिमर बैंकनोट कागजी नोटों की तुलना में अधिक टिकाऊ होते हैं, क्योंकि उन्हें कागजी नोटों की तुलना में कम से कम 2.5 बार अधिक समय तक इस्तेमाल किया जा सकता है। पॉलिमर नोटों की दीर्घायु न केवल नोटों के प्रसंस्करण और प्रतिस्थापन की लागत को कम करती है, बल्कि पर्यावरण पर भी कम प्रभाव डालती है। इस प्रकार, यद्यपि बहुलक नोटों की मुद्रण लागत कागजी नोटों की तुलना में अधिक महंगी होती है, लेकिन वे अपने स्थायित्व और दीर्घायु को देखते हुए लागत प्रभावी होते हैं। कागज के नोटों के विपरीत, बहुलक नोट आसानी से फाड़े नहीं जा सकते हैं, और धोने या गलती से वाशिंग मशीन में डालने पर खराब नहीं होते हैं। पॉलिमर नोट 100 डिग्री सेल्सियस तक के उच्च तापमान को सहन कर सकते हैं। इस प्रकार, वे अप्रत्याशित घटनाओं का सामना कर सकते हैं, जैसे कि कार दुर्घटना में या घर की आग में नोट्स छोड़ना। हालाँकि, इसका मतलब यह नहीं है कि आपको पॉलिमर बैंकनोटों को इस्त्री करना चाहिए। एटीएम और मनी डिपॉजिट मशीनों का उपयोग करके पॉलिमर नोटों को फीड करना, प्रोसेस करना और गिनना आसान होता है।

इसके कुछ नुकसान भी हैं। पॉलिमर बैंकनोट के कई लाभों के बावजूद, इन नोटों के साथ पहचाने गए कुछ नुकसान भी हैं। पॉलिमर बैंकनोटों को मोड़ने में कठिनाई होती है जबकि कागज के नोट को मोड़ने में बहुत आसानी होती है हम कागज के नोट को आसानी से मोड़ सकते हैं और इसे अपनी जेब में रख सकते हैं। लेकिन चूंकि बहुलक बैंकनोट विशेष रूप से मोड़ने के प्रयास का विरोध करने के लिए डिज़ाइन किए गए हैं, वे उन लोगों के लिए उपयुक्त नहीं हैं जो फोल्डिंग वॉलेट का उपयोग करते

हैं या अपनी जेब में नोट ले जाने की इच्छा रखते हैं। यदि हम एक पॉलिमर बैंकनोट को मोड़ने की कोशिश करते हैं, तो यह नोट के बीच में एक झुर्री पैदा करेगा जो स्थायी रूप से वहीं रहेगा। गीले होने पर चिपचिपा क्योंकि पॉलिमर नोट्स प्लास्टिक से बने होते हैं, वे एक साथ चिपक जाते हैं जब ये नोट्स पानी या किसी अन्य तरल के संपर्क में आते हैं। एक बार ऐसा हो जाने के बाद, उन्हें अलग करना बहुत मुश्किल हो जाता है। गीले पॉलिमर नोटों का उपयोग करके लेनदेन एक अप्रिय अनुभव हो सकता है क्योंकि एक साथ चिपके दो नोटों को आसानी से एक नोट के रूप में गलत समझा जा सकता है। बैंक टेलर को भी इस समस्या का सामना करना पड़ सकता है क्योंकि चिपचिपे नोटों को हाथ से गिनना अधिक कठिन हो सकता है। मौजूदा मशीनों को पुनः केलिब्रेट करने की भारी लागत पॉलीमर बैंक नोट बैंकों और अन्य थोक नकदी संचालन व्यवसायों में मौजूदा छंटाई मशीनों के साथ संगत नहीं हो सकते हैं जो कागज के बैंकनोटों को संभालने के लिए निर्मित हैं। पॉलिमर नोट पानी, तेल, धूल और नमी से कम प्रभावित होते हैं। यदि वे गलती से धुल भी जाएँ तो सामान्यतः सुरक्षित रहते हैं। इससे बैंकनोट अधिक स्वच्छ रहते हैं तथा संक्रमण फैलने की संभावना भी कम होती है।

यद्यपि इनके निर्माण में प्लास्टिक आधारित पदार्थ का उपयोग होता है, किन्तु उनका जीवनकाल लंबा होने के कारण कम संख्या में नोटों का उत्पादन करना पड़ता है। प्रयुक्त पॉलिमर नोटों को पुनर्चक्रित कर प्लास्टिक उत्पादों—जैसे गमले, फर्नीचर एवं अन्य उपयोगी वस्तुओं—के निर्माण में प्रयोग किया जा सकता है।

बैंक ऑफ कनाडा तथा बैंक ऑफ इंग्लैंड के अध्ययनों के अनुसार पॉलिमर नोटों का कार्बन उत्सर्जन कागजी नोटों की तुलना में कम पाया गया है।

प्रारंभिक मुद्रण लागत अधिक होने के बावजूद लंबे जीवनकाल के कारण परिवहन, भंडारण, छंटाई, प्रतिस्थापन तथा विनाश की लागत कम हो जाती है। ऑस्ट्रेलिया के रिजर्व बैंक के अध्ययन के अनुसार 25 वर्षों में पॉलिमर बैंकनोटों ने लगभग एक अरब ऑस्ट्रेलियाई डॉलर की समग्र बचत कराई।

जहाँ पॉलिमर नोट अनेक दृष्टियों से श्रेष्ठ हैं, वहीं इनके समक्ष कुछ व्यावहारिक चुनौतियाँ भी हैं—

- प्रारंभिक मुद्रण लागत कागजी नोटों से अधिक होती है।
- एटीएम एवं नोट गिनने वाली मशीनों का पुनः अंशांकन आवश्यक होता है।
- कुछ उपयोगकर्ताओं को नोटों का अधिक फिसलनयुक्त होना असुविधाजनक लगता है।

- अधिक मोड़ने पर स्थायी क्रीज पड़ सकती है।
- उष्णकटिबंधीय देशों में अत्यधिक आर्द्रता के कारण नोट कभी-कभी आपस में चिपक जाते हैं।
- जनता की व्यवहारगत आदतों के अनुसार इन्हें अपनाने में समय लगता है।

इन देशों के अनुभव बताते हैं कि पॉलिमर नोटों के कारण नकली मुद्रा, रखरखाव व्यय तथा नोटों के प्रतिस्थापन की लागत में उल्लेखनीय कमी आई है। बैंकों को कम मात्रा में नोट बदलने पड़ते हैं, जिससे परिचालन लागत में कमी आती है तथा नकदी प्रबंधन अधिक कुशल बनता है। आज जाली मुद्रा वैश्विक अर्थव्यवस्था के लिए गंभीर चुनौती है। पॉलिमर बैंकनोट इस समस्या का प्रभावी समाधान प्रस्तुत करते हैं।

पॉलिमर नोटों की सबसे बड़ी विशेषता उनका पर्यावरणीय योगदान है। पॉलिमर एक स्पष्ट, पतला और लचीला प्लास्टिक पदार्थ है जो कागज से अधिक मजबूत होता है। पॉलिमर दो प्रकार के होते हैं: प्राकृतिक रूप से पाए जाने वाले और सिंथेटिक या मानव निर्मित। पॉलीमर बैंकनोट एक बहुलक जैसे कि द्विअक्षीय रूप से उन्मुख पॉलीप्रोपाइलीन (बीओपीपी) से बने बैंकनोट हैं। इस तरह के नोटों में कई सुरक्षा विशेषताएं शामिल हैं जो कागज के बैंकनोटों में उपलब्ध नहीं हैं, जिसमें मेटामेरिक स्याही का उपयोग भी शामिल है। परंपरागत रूप से, मुद्रा नोटों के निर्माण में उपयोग की जाने वाली मुख्य सामग्री कपास है। दुनिया भर में प्रचलन में मौजूद 95% से अधिक करेंसी नोट कपास से बने हैं। हालाँकि लोकप्रिय रूप से 'कागज के पैसे' के रूप में जाना जाता है, वे बिल्कुल भी कागज से नहीं बनाए जाते हैं। ये कपास की लुगदी के मिश्रण से बनाए जाते हैं, अपने मुद्रा के पर्यावरणीय प्रभाव के बारे में चिंतित देशों के लिए, पॉलीमर नोटों में बदलाव समझ में आता है जैसे-जैसे देश जलवायु परिवर्तन पर पेरिस समझौते पर हस्ताक्षर करते हैं और अधिक टिकाऊ बनने का प्रयास करते हैं, कई लोग अपनी मुद्रा के पर्यावरणीय प्रभाव के साथ-साथ इसकी स्थायित्व और सुरक्षा पर भी विचार कर रहे हैं

बैंक ऑफ कनाडा ने 2011 में कागज़ और प्लास्टिक के नोटों के उत्पादन के पर्यावरणीय प्रभाव का आकलन करने के बाद, बैंकनोटों को पॉलिमर में बदलने की प्रक्रिया शुरू की। एक जीवन-चक्र मूल्यांकन ने कपास उगाने से लेकर बैंकनोट पेपर का उत्पादन करने या पुराने नोटों के विनाश और निपटान के माध्यम से पॉलीमर नोटों के लिए कच्चे माल का उत्पादन करने तक, उत्पादन के प्रत्येक चरण के प्रभाव की जांच की - जिसमें प्राथमिक ऊर्जा की मांग और ग्लोबल वार्मिंग की संभावना शामिल है

सभी श्रेणियों और चरणों में, पॉलिमर ने कागज से बेहतर प्रदर्शन किया। अध्ययन में पाया गया कि एक पॉलिमर बिल पेपर की तुलना में ग्लोबल वार्मिंग क्षमता में 32 प्रतिशत की कमी और प्राथमिक ऊर्जा मांग में 30 प्रतिशत की कमी का वादा करता है। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि, बहुलक नोट कागजी नोटों की तुलना में दोगुने से अधिक समय तक चलते हैं - और उच्च मूल्यवर्ग, जिन्हें कम बार संभाला जाता है, और भी अधिक समय तक चलते हैं। इसका मतलब है कि एक शृंखला के जीवनकाल में कम पॉलिमर नोटों का निर्माण और वितरण करना होगा। और पॉलिमर नोटों का वजन कागज के नोटों से कम होता है, इसलिए उनका परिवहन और वितरण भी पर्यावरण के लिए आसान होता है अपने जीवन के अंत में, कागजी बिलों को आमतौर पर फाड़ दिया जाता है और लैंडफिल में डाल दिया जाता है। लेकिन प्रचलन से बाहर किए गए पॉलिमर नोटों को कतर दिया जाता है, छरों में परिवर्तित किया जाता है, और लॉन फर्नीचर जैसी रोजमर्रा की प्लास्टिक वस्तुओं को बनाने के लिए उपयोग किया जाता है।

### बैंक ऑफ कनाडा तथा बैंक ऑफ इंग्लैंड के अध्ययनों के अनुसार-

- ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन कम होता है।
- ऊर्जा की खपत कम होती है।
- नोटों का जीवनकाल अधिक होता है।
- कम संख्या में नोट छापने पड़ते हैं।
- पुराने नोटों का पुनर्चक्रण सम्भव है।

पुराने पॉलिमर नोटों से प्लास्टिक फर्नीचर, गमले तथा अन्य उपयोगी वस्तुएँ बनाई जा सकती हैं।

भारत में प्रतिदिन करोड़ों मुद्रा नोट प्रचलन में रहते हैं। छोटे मूल्यवर्ग के नोट अत्यधिक उपयोग के कारण शीघ्र नष्ट हो जाते हैं।

यदि भारत चरणबद्ध तरीके से पॉलिमर नोट अपनाता है तो, नकली नोटों में कमी आएगी, नोटों की आयु बढ़ेगी, नोट छापने में लगने वाला सरकारी व्यय कम होगा, बैंकिंग व्यवस्था अधिक कुशल बनेगी, पर्यावरणीय लाभ मिलेंगे तथा नकदी प्रबंधन सरल होगा। भविष्य की मुद्रा केवल सुरक्षित नहीं होगी, बल्कि स्मार्ट भी होगी। आने वाले वर्षों में पॉलिमर बैंकनोटों में, डिजिटल प्रमाणीकरण, नैनो सुरक्षा, उन्नत होलोग्राम, स्मार्ट ट्रेकिंग तकनीक, पर्यावरण-अनुकूल पुनर्चक्रण, जैसी विशेषताओं का समावेश होगा।

भारत यदि समयबद्ध योजना के साथ इस दिशा में आगे बढ़ता है तो उसकी मुद्रा प्रणाली विश्व की सबसे सुरक्षित और आधुनिक प्रणालियों में सम्मिलित हो सकती है। ₹10 और ₹20 के पॉलिमर नोटों के परीक्षण की योजना भारत की मुद्रा प्रणाली के

आधुनिकीकरण की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम मानी जा रही है। यदि परीक्षण सफल रहता है तो भविष्य में छोटे मूल्यवर्गों से आरम्भ होकर बड़े मूल्यवर्गों तक इसका विस्तार किया जा सकता है।

विश्व अनुभव यह दर्शाता है कि भविष्य की मुद्रा केवल सुरक्षित ही नहीं, बल्कि टिकाऊ, पर्यावरण-अनुकूल और तकनीकी रूप से उन्नत भी होगी। पॉलिमर बैंकनोट इस दिशा में एक महत्वपूर्ण पड़ाव हैं। आने वाले वर्षों में स्मार्ट सुरक्षा तकनीकों, नैनो-मुद्रण, डिजिटल प्रमाणीकरण तथा पुनर्चक्रण आधारित मुद्रा प्रणालियों का विकास पॉलिमर नोटों को और अधिक प्रभावी बनाएगा।

भारत के लिए यह केवल नोट बदलने का प्रश्न नहीं है, बल्कि एक ऐसी मुद्रा व्यवस्था विकसित करने का अवसर है जो आर्थिक दक्षता, पर्यावरणीय उत्तरदायित्व और राष्ट्रीय सुरक्षा-तीनों को समान रूप से सुदृढ़ करे।

पॉलिमर बैंकनोट आधुनिक मुद्रा विज्ञान का एक महत्वपूर्ण नवाचार हैं। प्रारंभिक निवेश अपेक्षाकृत अधिक होने के बावजूद उनकी दीर्घायु, सुरक्षा, पर्यावरणीय लाभ तथा दीर्घकालिक लागत बचत उन्हें भविष्य की मुद्रा का सशक्त विकल्प बनाती है। विश्व के अनेक देशों के सफल अनुभव इस तथ्य की पुष्टि करते हैं कि यदि भारत चरणबद्ध, वैज्ञानिक एवं सुविचारित रणनीति के साथ पॉलिमर नोटों को अपनाता है, तो इससे न केवल नकदी प्रबंधन अधिक कुशल होगा, बल्कि मुद्रा में जनविश्वास, आर्थिक सुरक्षा तथा पर्यावरणीय संतुलन भी सुदृढ़ होगा।

इस प्रकार, पॉलिमर बैंकनोटों का भविष्य केवल 'प्लास्टिक के नोट' भर नहीं है, बल्कि यह भारत की मुद्रा प्रणाली के आधुनिकीकरण, वित्तीय दक्षता और सतत विकास की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम सिद्ध हो सकता है।

पॉलिमर बैंकनोट आधुनिक मुद्रा विज्ञान की सबसे महत्वपूर्ण उपलब्धियों में से एक हैं। वे केवल कागजी नोटों का विकल्प नहीं, बल्कि एक ऐसी समग्र मुद्रा प्रणाली का प्रतिनिधित्व करते हैं जो सुरक्षा, टिकारूपन, पर्यावरण संरक्षण और आर्थिक दक्षता का संतुलित समन्वय प्रस्तुत करती है।

विश्व के अनेक देशों के अनुभव यह सिद्ध करते हैं कि प्रारम्भिक लागत अधिक होने के बावजूद पॉलिमर नोट दीर्घकाल में अधिक लाभकारी सिद्ध होते हैं। भारत जैसे विशाल और विविधतापूर्ण देश में इनका क्रियान्वयन चरणबद्ध, वैज्ञानिक तथा व्यावहारिक दृष्टिकोण से किया जाना चाहिए। यदि आरबीआई के परीक्षण सफल रहते हैं, तो निकट भविष्य में भारत भी आधुनिक पॉलिमर मुद्रा प्रणाली की दिशा में निर्णायक कदम बढ़ा सकता है।

महाप्रबंधक  
प्रधान कार्यालय

## पर्यावरण संरक्षण में बैंकों की भूमिका



अगम कुमार

**प**र्यावरण संरक्षण आज विश्व की सबसे बड़ी चुनौतियों में से एक है। जलवायु परिवर्तन, वायु एवं जल प्रदूषण, वन दोहन, जैव-विविधता का ह्रास तथा प्राकृतिक संसाधनों के अंधाधुंध दोहन ने मानव जीवन के समक्ष गंभीर संकट उत्पन्न कर दिया है। इन चुनौतियों से निपटने के लिए केवल सरकारों और पर्यावरण संगठनों के प्रयास पर्याप्त नहीं हैं, बल्कि समाज के प्रत्येक क्षेत्र को अपनी भूमिका निभानी होगी। इस संदर्भ में बैंकिंग क्षेत्र का महत्व भी अत्यंत बढ़ जाता है। बैंक किसी भी देश की आर्थिक व्यवस्था की रीढ़ होते हैं और विकास परियोजनाओं के वित्तपोषण के माध्यम से वे पर्यावरण संरक्षण में महत्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं।

आधुनिक युग में बैंकों की भूमिका केवल जमा स्वीकार करने और ऋण प्रदान करने तक सीमित नहीं रह गई है। वे सतत विकास के वाहक के रूप में उभर रहे हैं। पर्यावरण-अनुकूल नीतियों को अपनाकर तथा हरित परियोजनाओं को बढ़ावा देकर बैंक आर्थिक विकास और पर्यावरण संरक्षण के बीच संतुलन स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

### पर्यावरण संरक्षण का महत्व

पर्यावरण मानव जीवन का आधार है। स्वच्छ वायु, शुद्ध जल, उपजाऊ भूमि और संतुलित जलवायु मानव अस्तित्व के लिए आवश्यक हैं। यदि पर्यावरण असंतुलित हो जाता है तो इसका प्रतिकूल प्रभाव कृषि, उद्योग, स्वास्थ्य तथा अर्थव्यवस्था पर पड़ता है। वैश्विक तापमान में वृद्धि, अनियमित वर्षा, सूखा, बाढ़ और प्राकृतिक आपदाओं की बढ़ती घटनाएँ पर्यावरणीय असंतुलन का परिणाम हैं। इसलिए पर्यावरण संरक्षण केवल एक सामाजिक दायित्व नहीं, बल्कि मानव सभ्यता के अस्तित्व का प्रश्न बन चुका है।

### बैंक और सतत विकास

बैंक आर्थिक गतिविधियों के प्रमुख वित्तपोषक होते हैं। वे विभिन्न उद्योगों, व्यवसायों और विकास परियोजनाओं को ऋण प्रदान करते हैं। यदि बैंक पर्यावरणीय दृष्टि से जिम्मेदार परियोजनाओं को प्राथमिकता दें और प्रदूषण फैलाने वाली गतिविधियों को वित्तीय सहायता देने में सावधानी बरतें, तो पर्यावरण संरक्षण को प्रभावी रूप से बढ़ावा मिल सकता है।

सतत विकास का अर्थ है वर्तमान पीढ़ी की आवश्यकताओं की पूर्ति इस प्रकार करना कि भविष्य की पीढ़ियों की आवश्यकताओं



पर कोई प्रतिकूल प्रभाव न पड़े। बैंक अपनी ऋण नीतियों और निवेश निर्णयों के माध्यम से सतत विकास को प्रोत्साहित कर सकते हैं।

### हरित बैंकिंग की अवधारणा

पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्र में बैंकों की भूमिका को “हरित बैंकिंग” के नाम से जाना जाता है। हरित बैंकिंग का उद्देश्य बैंकिंग गतिविधियों के पर्यावरणीय प्रभाव को कम करना तथा पर्यावरण-अनुकूल परियोजनाओं को प्रोत्साहित करना है। हरित बैंकिंग के अंतर्गत निम्नलिखित पहलें शामिल हैं—

1. कागज रहित बैंकिंग
2. डिजिटल लेन-देन को बढ़ावा
3. ऊर्जा संरक्षण
4. हरित परियोजनाओं को ऋण
5. नवीकरणीय ऊर्जा को वित्तीय सहायता
6. पर्यावरणीय जोखिम मूल्यांकन

आज अधिकांश बैंक इंटरनेट बैंकिंग, मोबाइल बैंकिंग, ई-स्टेटमेंट तथा डिजिटल भुगतान सेवाओं को बढ़ावा देकर कागज की खपत को कम कर रहे हैं, जिससे लाखों पेड़ों की कटाई रोकी जा सकती है।

### हरित परियोजनाओं के वित्तपोषण में बैंकों की भूमिका

बैंक पर्यावरण-अनुकूल परियोजनाओं को वित्तीय सहायता प्रदान करके पर्यावरण संरक्षण में प्रत्यक्ष योगदान दे सकते हैं। उदाहरण—

### 1. सौर ऊर्जा परियोजनाएँ

सौर ऊर्जा स्वच्छ एवं नवीकरणीय ऊर्जा का महत्वपूर्ण स्रोत है। बैंक सौर ऊर्जा संयंत्रों, रूफटॉप सोलर सिस्टम तथा सौर उपकरणों के लिए ऋण उपलब्ध कराकर स्वच्छ ऊर्जा को बढ़ावा दे सकते हैं।

### 2. पवन ऊर्जा परियोजनाएँ

पवन ऊर्जा से विद्युत उत्पादन जीवाश्म ईंधनों पर निर्भरता कम करता है। बैंक पवन ऊर्जा परियोजनाओं में निवेश को प्रोत्साहित कर सकते हैं।

### 3. इलेक्ट्रिक वाहन वित्तपोषण

वाहनों से होने वाला प्रदूषण पर्यावरण के लिए बड़ी चुनौती है। बैंक इलेक्ट्रिक वाहनों की खरीद हेतु रियायती ऋण देकर स्वच्छ परिवहन को बढ़ावा दे सकते हैं।

### 4. जल संरक्षण परियोजनाएँ

वर्षा जल संचयन, जल पुनर्चक्रण तथा जल संरक्षण संबंधी परियोजनाओं को वित्तीय सहायता देकर बैंक जल संकट के समाधान में योगदान दे सकते हैं।

### पर्यावरणीय जोखिम प्रबंधन

आज विश्वभर के बैंक ऋण स्वीकृत करते समय पर्यावरणीय प्रभावों का भी मूल्यांकन करने लगे हैं। यदि कोई उद्योग अत्यधिक प्रदूषण फैलाता है या पर्यावरणीय मानकों का उल्लंघन करता है, तो बैंक उसे ऋण देने में सावधानी बरतते हैं।

इस प्रक्रिया को पर्यावरणीय एवं सामाजिक जोखिम प्रबंधन कहा जाता है। इससे उद्योगों को पर्यावरण-अनुकूल तकनीकों को अपनाने के लिए प्रेरणा मिलती है।

### डिजिटल बैंकिंग और पर्यावरण संरक्षण

डिजिटल बैंकिंग पर्यावरण संरक्षण का एक प्रभावी माध्यम बन चुकी है। इंटरनेट बैंकिंग, मोबाइल बैंकिंग, यूपीआई, ई-स्टेटमेंट और डिजिटल भुगतान प्रणाली के कारण कागज के उपयोग में उल्लेखनीय कमी आई है।

### डिजिटल बैंकिंग के प्रमुख लाभ—

- कागज की बचत
- परिवहन में कमी
- ईंधन की बचत
- कार्बन उत्सर्जन में कमी
- समय एवं संसाधनों की बचत

आज बैंक ग्राहकों को पासबुक प्रिंटिंग और कागजी स्टेटमेंट के बजाय ई-स्टेटमेंट अपनाने के लिए प्रोत्साहित कर रहे हैं।

### बैंकों द्वारा पर्यावरण जागरूकता

बैंक केवल वित्तीय संस्थान नहीं हैं, बल्कि सामाजिक उत्तरदायित्व निभाने वाले संगठन भी हैं। अपने कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व कार्यक्रमों के माध्यम से बैंक पर्यावरण जागरूकता बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं और निम्नलिखित गतिविधियाँ आयोजित करते हैं—

- वृक्षारोपण अभियान
- स्वच्छता अभियान
- जल संरक्षण कार्यक्रम
- पर्यावरण दिवस समारोह
- जागरूकता रैलियाँ
- विद्यालयों एवं महाविद्यालयों में पर्यावरण संबंधी कार्यक्रम

इन पहलों के माध्यम से समाज में पर्यावरण संरक्षण के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित होता है।

### बैंकिंग क्षेत्र में ऊर्जा संरक्षण

बैंक अपने कार्यालयों में ऊर्जा संरक्षण के उपाय अपनाकर भी पर्यावरण संरक्षण में योगदान दे सकते हैं। उदाहरण—

- एलईडी प्रकाश व्यवस्था का उपयोग
- सौर ऊर्जा आधारित शाखाएँ
- ऊर्जा दक्ष उपकरणों का प्रयोग
- वर्षा जल संचयन प्रणाली
- हरित भवन का निर्माण

इन उपायों से ऊर्जा की खपत कम होती है तथा कार्बन उत्सर्जन में कमी आती है।

### भारत में बैंकों की पर्यावरणीय पहल

भारत में अनेक सार्वजनिक एवं निजी क्षेत्र के बैंक पर्यावरण संरक्षण हेतु उल्लेखनीय कार्य कर रहे हैं। विभिन्न बैंक डिजिटल बैंकिंग को बढ़ावा देने, सौर ऊर्जा परियोजनाओं के वित्तपोषण, इलेक्ट्रिक वाहनों हेतु ऋण प्रदान करने तथा वृक्षारोपण कार्यक्रम आयोजित करने में सक्रिय भूमिका निभा रहे हैं।

भारतीय रिजर्व बैंक तथा सरकार भी सतत वित्त और हरित बैंकिंग को प्रोत्साहित कर रहे हैं। इससे बैंकिंग क्षेत्र में पर्यावरणीय उत्तरदायित्व की भावना मजबूत हुई है।

### चुनौतियाँ

पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्र में बैंकों के समक्ष कुछ चुनौतियाँ भी हैं—

1. हरित परियोजनाओं की प्रारंभिक लागत अधिक होना।
2. पर्यावरणीय जोखिमों का सटीक मूल्यांकन कठिन होना।
3. ग्राहकों में जागरूकता की कमी।

4. हरित प्रौद्योगिकी की सीमित उपलब्धता।
5. लाभ और पर्यावरणीय उत्तरदायित्व के बीच संतुलन स्थापित करना।

इन चुनौतियों के बावजूद बैंक निरंतर हरित वित्तपोषण और सतत विकास की दिशा में आगे बढ़ रहे हैं।

### निष्कर्ष

पर्यावरण संरक्षण आज समय की सबसे बड़ी आवश्यकता है और इस दिशा में बैंकों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। हरित बैंकिंग, डिजिटल बैंकिंग, पर्यावरण-अनुकूल परियोजनाओं का वित्तपोषण, ऊर्जा संरक्षण तथा जन-जागरूकता कार्यक्रमों के माध्यम से बैंक पर्यावरण संरक्षण में महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं। यदि बैंक अपने

वित्तीय निर्णयों में पर्यावरणीय उत्तरदायित्व को और अधिक महत्व दें, तो वे सतत एवं समावेशी विकास के लक्ष्य को प्राप्त करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

अतः यह कहा जा सकता है कि बैंक केवल आर्थिक विकास के साधन नहीं हैं, बल्कि पर्यावरण संरक्षण के प्रभावी साझेदार भी हैं। आर्थिक प्रगति और पर्यावरणीय संतुलन के बीच सामंजस्य स्थापित कर बैंक आने वाली पीढ़ियों के लिए एक सुरक्षित, स्वच्छ और हरित भविष्य के निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं।

क्षेत्रीय प्रबंधक  
क्षेत्रीय कार्यालय, आगरा

## नराकास उपलब्धि



नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा आयोजित राजभाषा शील्ड प्रतियोगिता में क्षेत्रीय कार्यालय आगरा को विशेष पुरस्कार प्राप्त हुए।



नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा आयोजित प्रतियोगिता में प्रतिभागी को पुरस्कार प्राप्त हुआ।



नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा आयोजित राजभाषा शील्ड प्रतियोगिता में शाखा झज्जर को विशेष पुरस्कार प्राप्त हुए।



नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा आयोजित राजभाषा शील्ड प्रतियोगिता में शाखा गोरखपुर को विशेष पुरस्कार प्राप्त हुए।

## पर्यावरण संरक्षण और बैंकों की पहल



अरफा नेशाई खानम

### हरित भविष्य की राह में वित्तीय संस्थानों की जिम्मेदारी :

सुबह की पहली किरण जब किसी खेत की मेड़ पर उठरती है, किसी नदी के पानी पर सुनहरी परत बनाती है, किसी पेड़ की पत्तियों को चुपचाप चमका देती है, तब शायद हमें यह एहसास नहीं होता कि प्रकृति कितनी उदार है। वह बिना शोर किए देती रहती है— हवा, पानी, मिट्टी, छाया, भोजन और जीवन। लेकिन पिछले कुछ वर्षों में हमने यह भी देखा है कि यही प्रकृति अब कहीं रूठी-सी लगती है। कभी असामान्य गर्मी, कभी बेमौसम बारिश, कभी बाढ़, कभी सूखा, तो कभी प्रदूषण की ऐसी परत कि साँस लेना भी भारी लगे। विकास की तेज रफ्तार में हम बहुत आगे तो बढ़े, लेकिन इस दौड़ में कहीं न कहीं हमने पर्यावरण की कीमत को कम आँक लिया।

आम तौर पर जब पर्यावरण संरक्षण की बात होती है, तो चर्चा पेड़ लगाने, प्लास्टिक कम करने, नदियाँ बचाने, प्रदूषण रोकने और जलवायु परिवर्तन तक सीमित रह जाती है। वहीं “बैंक” शब्द सुनते ही हमारे मन में जमा-निकासी, ऋण, ब्याज, चेक, पासबुक, डिजिटल भुगतान और आर्थिक लेन-देन की तस्वीर उभरती है। पहली नजर में लगता है कि पर्यावरण और बैंक—दोनों का संसार अलग-अलग है। एक प्रकृति से जुड़ा है, दूसरा अर्थव्यवस्था से। लेकिन यदि थोड़ा गहराई से देखें, तो स्पष्ट हो जाता है कि पर्यावरण संरक्षण की लड़ाई में बैंकों की भूमिका बहुत बड़ी, बहुत प्रभावशाली और बहुत निर्णायक है।

आज बैंक केवल पैसे रखने या कर्ज देने की संस्था नहीं हैं। वे अर्थव्यवस्था की दिशा तय करने वाली संस्थाएँ हैं। समाज की बचत बैंक में जमा होती है, और वही पैसा आगे चलकर उद्योगों, व्यापार, कृषि, आवास, ऊर्जा, परिवहन और विकास परियोजनाओं तक पहुँचता है। यानी बैंक केवल वित्त नहीं देते, वे विकास की धारा को दिशा भी देते हैं। इसलिए यह प्रश्न अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाता है कि बैंक किस प्रकार के विकास को बढ़ावा दे रहे हैं— ऐसा विकास जो प्रकृति का सम्मान करता हो, या ऐसा जो अल्पकालिक लाभ के लिए पर्यावरण को पीछे छोड़ देता हो?

यहीं से शुरू होती है पर्यावरण संरक्षण में बैंकों की भूमिका की वास्तविक कहानी।



### बैंक: सिर्फ आर्थिक संस्था नहीं, विकास की दिशा तय करने वाली शक्ति

किसी भी समाज का विकास केवल सरकारी योजनाओं से नहीं होता। उसके पीछे वित्तीय संस्थाओं का मजबूत सहयोग होता है। कोई उद्योग स्थापित करना हो, कोई आवासीय परियोजना शुरू करनी हो, कोई सोलर प्लांट लगाना हो, किसानों को कृषि ऋण देना हो, किसी व्यवसाय को विस्तार देना हो— हर जगह वित्त की आवश्यकता होती है। और इस वित्त का एक बड़ा स्रोत बैंक हैं। इसलिए बैंक जिस क्षेत्र को ऋण देते हैं, जिस गतिविधि को प्रोत्साहन देते हैं और जिस परियोजना पर भरोसा जताते हैं, वही क्षेत्र तेजी से आगे बढ़ता है।

यही कारण है कि पर्यावरण संरक्षण के संदर्भ में बैंक एक निष्क्रिय दर्शक नहीं रह सकते। वे चाहे तो हरित अर्थव्यवस्था के वाहक बन सकते हैं, और यदि लापरवाही बरतें तो अनजाने में पर्यावरणीय संकट को बढ़ाने में भी उनकी भूमिका हो सकती है। इसीलिए आधुनिक समय में बैंकिंग को केवल आर्थिक गतिविधि नहीं, बल्कि सामाजिक और पर्यावरणीय उत्तरदायित्व के साथ देखने की आवश्यकता है।

### पर्यावरण संरक्षण और बैंकिंग: रिश्ता कहाँ से जुड़ता है?

सरल शब्दों में कहें तो बैंक पर्यावरण संरक्षण में दो स्तरों पर महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं—

#### 1. अपने आंतरिक संचालन को पर्यावरण-अनुकूल बनाकर

यानी बैंक अपनी शाखाओं, कार्यालयों, कागज के उपयोग,

बिजली की खपत, यात्रा, रिकॉर्ड प्रबंधन, कचरा निस्तारण और तकनीकी व्यवस्था को इस प्रकार संचालित करें कि पर्यावरण पर कम बोझ पड़े।

## 2. वित्तीय निर्णयों के माध्यम से

यानी बैंक यह सोच-समझकर तय करें कि किन परियोजनाओं, उद्योगों और गतिविधियों को ऋण देना है, किन्हें प्राथमिकता देनी है और किन मामलों में पर्यावरणीय जोखिम को ध्यान में रखना है।

इन दोनों स्तरों पर बैंक यदि गंभीरता से काम करें, तो उनका योगदान केवल प्रतीकात्मक नहीं रहेगा, बल्कि वास्तविक परिवर्तन का आधार बन सकता है।

### ग्रीन बैंकिंग: बैंकिंग का नया और जरूरी चेहरा

पिछले कुछ वर्षों में “ग्रीन बैंकिंग” शब्द तेजी से चर्चा में आया है। कई बार लोग इसे केवल प्रचार या आधुनिक शब्दावली मान लेते हैं, लेकिन सच यह है कि ग्रीन बैंकिंग एक गहरी सोच का परिणाम है। इसका अर्थ है— ऐसी बैंकिंग व्यवस्था जो आर्थिक गतिविधियों को पर्यावरणीय जिम्मेदारी के साथ जोड़ती हो।

ग्रीन बैंकिंग का मतलब केवल इतना नहीं कि बैंक अपने परिसर में पौधे लगा दे या पर्यावरण दिवस पर कोई कार्यक्रम कर दे। इसका असली अर्थ है—

- कागज की खपत कम करना
- डिजिटल बैंकिंग को बढ़ावा देना
- ऊर्जा की बचत करना
- पर्यावरण-अनुकूल बैंक शाखाएँ विकसित करना

यदि बैंकिंग को अर्थव्यवस्था का रक्त-संचार कहा जाए, तो ग्रीन बैंकिंग उस रक्त-संचार को स्वच्छ, संतुलित और टिकाऊ बनाने की कोशिश है।

### कागज से क्लिक तक: पेपरलेस बैंकिंग की पर्यावरणीय शक्ति

एक समय था जब बैंकिंग का मतलब था— फॉर्म, फाइलें, रजिस्टर, चेकबुक, पासबुक, स्टेटमेंट, आवेदन-पत्र और दस्तावेजों का बड़ा ढेर। बैंक शाखाओं में रोजाना बड़ी मात्रा में कागज का उपयोग होता था। कागज का मतलब है पेड़ों की कटाई, उत्पादन में पानी और ऊर्जा का इस्तेमाल, परिवहन और अंततः कचरे का बोझ।

डिजिटल बैंकिंग ने इस व्यवस्था को बदलना शुरू किया है। आज ग्राहक घर बैठे मोबाइल बैंकिंग, इंटरनेट बैंकिंग, यूपीआई, ई-स्टेटमेंट, ऑनलाइन फंड ट्रांसफर, ई-केवाईसी और डिजिटल रसीदों के माध्यम से कई काम आसानी से कर लेते हैं। यह केवल सुविधा नहीं है; यह पर्यावरण के लिए भी एक बड़ी राहत है।

कल्पना कीजिए कि यदि लाखों ग्राहक हर महीने पेपर स्टेटमेंट लेने के बजाय ई-स्टेटमेंट अपनाएँ, यदि शाखाएँ अनावश्यक प्रिंटिंग कम करें, यदि रिकॉर्ड डिजिटल रूप में सुरक्षित रखे जाएँ, तो कितने पेड़ों को कटने से बचाया जा सकता है। एक शाखा में बचाया गया कागज मामूली लग सकता है, लेकिन जब वही आदत देशभर के हजारों बैंक कार्यालयों और करोड़ों ग्राहकों तक पहुँचती है, तब उसका प्रभाव बहुत बड़ा हो जाता है।

इसलिए पेपरलेस बैंकिंग केवल तकनीकी सुविधा नहीं, बल्कि हरित सोच की व्यवहारिक शुरुआत है।

### डिजिटल बैंकिंग: सुविधा से आगे, पर्यावरण के लिए भी उपयोगी

आज हम मोबाइल से भुगतान करते हैं, बिजली-पानी के बिल जमा करते हैं, फिक्स्ड डिपॉजिट खोलते हैं, बैलेंस चेक करते हैं, लोन की किस्त भरते हैं और बैंकिंग से जुड़े अनेक काम घर बैठे कर लेते हैं। इस बदलाव ने बैंकिंग को आसान तो बनाया ही है, साथ ही पर्यावरण पर भी सकारात्मक प्रभाव डाला है।

जब कोई ग्राहक छोटे-छोटे कामों के लिए बार-बार शाखा जाने के बजाय डिजिटल माध्यम का उपयोग करता है, तो अप्रत्यक्ष रूप से ईंधन की बचत होती है, यात्रा कम होती है और कार्बन उत्सर्जन में कमी आती है। लाखों लोगों के स्तर पर देखें तो यह परिवर्तन बेहद महत्वपूर्ण है। यही वजह है कि डिजिटल बैंकिंग को बढ़ावा देना केवल आधुनिकता नहीं, बल्कि पर्यावरणीय जिम्मेदारी का भी हिस्सा है।

हाँ, यह भी सही है कि डिजिटल बैंकिंग के लिए ऊर्जा, डेटा सेंटर और तकनीकी संसाधन चाहिए, लेकिन यदि इसकी तुलना बार-बार होने वाली भौतिक यात्रा, कागज के बड़े पैमाने पर उपयोग और पारंपरिक प्रक्रिया की लागत से की जाए, तो यह अपेक्षाकृत अधिक टिकाऊ विकल्प के रूप में सामने आती है।

### बैंक शाखाएँ भी बन सकती हैं “ग्रीन स्पेस”

पर्यावरण संरक्षण की शुरुआत बैंक अपने परिसर से भी कर सकते हैं। शाखा और कार्यालयों में रोज बिजली, पानी, स्टेशनरी और इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों का व्यापक उपयोग होता है। यदि इन संसाधनों का विवेकपूर्ण उपयोग किया जाए, तो बैंक न केवल खर्च कम कर सकते हैं, बल्कि पर्यावरणीय जिम्मेदारी का उदाहरण भी बन सकते हैं।

बैंक शाखाओं को हरित बनाने के लिए कई व्यावहारिक कदम उठाए जा सकते हैं—

- एलईडी लाइटों का उपयोग करना।
- ऊर्जा-कुशल एयर कंडीशनर और उपकरण स्थापित करना।
- सौर ऊर्जा पैनल लगाना।
- प्राकृतिक रोशनी और वेंटिलेशन का बेहतर उपयोग करना।

जब कोई बैंक शाखा इस तरह के कदम उठाती है, तो वह केवल अपने बिजली बिल में कटौती नहीं करती, बल्कि यह संदेश भी देती है कि संस्थागत स्तर पर भी पर्यावरण-अनुकूल जीवनशैली अपनाई जा सकती है।

**बैंकों की सबसे बड़ी ताकत: किसे वित्त देना है, यह तय करने की क्षमता**

पर्यावरण संरक्षण में बैंकों की सबसे प्रभावशाली भूमिका उनके ऋण और निवेश निर्णयों से जुड़ी है। किसी भी परियोजना, उद्योग या उद्यम के लिए पूंजी की आवश्यकता होती है। यदि बैंक पर्यावरण-अनुकूल क्षेत्रों को प्राथमिकता दें, तो वे हरित अर्थव्यवस्था को गति दे सकते हैं।

बैंक किन क्षेत्रों को विशेष प्रोत्साहन दे सकते हैं?

- सौर ऊर्जा परियोजनाएँ
- पवन ऊर्जा और जैव-ऊर्जा
- इलेक्ट्रिक वाहन और चार्जिंग स्टेशन
- ग्रीन बिल्डिंग और ऊर्जा-कुशल भवन
- कचरा प्रबंधन और रीसाइक्लिंग इकाइयाँ

यदि बैंक ऐसे क्षेत्रों के लिए विशेष ऋण योजनाएँ, कम ब्याज दर, आसान पुनर्भुगतान अवधि या प्रोत्साहन आधारित उत्पाद विकसित करें, तो हरित परियोजनाओं की राह आसान हो सकती है। अक्सर पर्यावरण-अनुकूल विकल्पों की शुरुआती लागत थोड़ी अधिक होती है; ऐसे में बैंक का सहयोग निर्णायक साबित हो सकता है।

**जिम्मेदार वित्तपोषण: केवल लाभ नहीं, प्रभाव भी देखना होगा**

किसी बैंक के लिए यह उतना ही महत्वपूर्ण है कि वह किन परियोजनाओं को ऋण देता है, जितना यह कि वह किन परियोजनाओं को ऋण देने से पहले सावधानी बरतता है। यदि कोई उद्योग पर्यावरणीय नियमों की अनदेखी करता है, प्रदूषण फैलाता है, जल स्रोतों को नुकसान पहुँचाता है या स्थानीय समुदाय पर गंभीर प्रतिकूल प्रभाव डालता है, तो बैंक को उसके वित्तपोषण के बारे में गंभीरता से सोचना चाहिए।

आधुनिक बैंकिंग में अब यह समझ विकसित हो रही है कि ऋण स्वीकृति केवल बैलेंस शीट देखकर नहीं की जा सकती। परियोजना के पर्यावरणीय और सामाजिक प्रभाव भी उतने ही महत्वपूर्ण हैं। क्या उस परियोजना के पास आवश्यक पर्यावरणीय स्वीकृतियाँ हैं? क्या वह प्रदूषण नियंत्रण मानकों का पालन करती है? क्या उसकी गतिविधि स्थानीय जल, वायु, भूमि और जैव विविधता पर नकारात्मक प्रभाव डालेगी? क्या वह टिकाऊ संसाधन उपयोग का पालन करती है? ये प्रश्न अब केवल सरकार या पर्यावरण विभाग के नहीं, बल्कि बैंकों के लिए भी प्रासंगिक हो चुके हैं।

यही सोच रिस्पोन्सिबल फाइनेंस या जिम्मेदार वित्तपोषण की आधारशिला है।

**कृषि, ग्रामीण भारत और पर्यावरण: बैंक की भूमिका और भी महत्वपूर्ण**

भारत की पर्यावरणीय चुनौतियों को समझना हो, तो गाँव, किसान, जल, मिट्टी और खेती को केंद्र में रखना होगा। देश की बड़ी आबादी आज भी कृषि पर निर्भर है। जलवायु परिवर्तन का सबसे पहला असर अक्सर किसान पर ही पड़ता है—कभी वर्षा कम हो जाती है, कभी बहुत अधिक हो जाती है, कभी फसल चक्र बिगड़ जाता है, कभी मिट्टी की उर्वरता घटने लगती है।

ऐसे में बैंक केवल कृषि ऋण देने तक सीमित न रहें, बल्कि किसानों को टिकाऊ खेती की दिशा में प्रेरित करें, तो उसका लाभ बहुत व्यापक होगा। उदाहरण के लिए—

- ड्रिप और स्प्रिंकलर सिंचाई के लिए ऋण।
- सोलर पंप और नवीकरणीय ऊर्जा आधारित कृषि उपकरण।
- जैविक खाद और प्राकृतिक खेती के लिए वित्तीय सहायता।
- फसल विविधीकरण को बढ़ावा।
- कृषि अपशिष्ट प्रबंधन और गोबर गैस जैसी इकाइयाँ।
- जल संरक्षण संरचनाओं के लिए ऋण या विशेष योजनाएँ।

यदि बैंक शाखाएँ किसानों को यह समझाएँ कि पर्यावरण-अनुकूल खेती केवल “आदर्श” नहीं, बल्कि दीर्घकाल में लाभकारी भी है, तो यह बदलाव अधिक टिकाऊ होगा। यहाँ बैंक केवल पैसा देने वाले नहीं, बल्कि विकास के मार्गदर्शक बन सकते हैं।

**जलवायु परिवर्तन: बैंकिंग के लिए भी एक वास्तविक जोखिम**

काफी समय तक पर्यावरण को एक सामाजिक या नैतिक मुद्दे की तरह देखा जाता रहा, लेकिन अब यह स्पष्ट हो चुका है कि यह वित्तीय जोखिम भी है। जलवायु परिवर्तन का असर केवल तापमान या मौसम तक सीमित नहीं है; यह कृषि उत्पादन, उद्योग, सप्लाई चेन, संपत्तियों, बीमा, ऋण वसूली और समग्र आर्थिक स्थिरता को प्रभावित कर सकता है।

यदि किसी क्षेत्र में बार-बार बाढ़ आती है, तो वहाँ की संपत्तियाँ और व्यवसाय प्रभावित होंगे। यदि सूखा पड़ता है, तो किसानों की आय कम होगी और कृषि ऋण की अदायगी पर असर पड़ेगा। यदि कोई उद्योग पर्यावरणीय मुकदमों या नियामकीय कार्रवाई में फँस जाता है, तो उसकी वित्तीय स्थिति डगमगा सकती है। इसका सीधा असर बैंक के ऋण पोर्टफोलियो पर पड़ता है।

इसलिए आज समझदार बैंक यह देखने लगे हैं कि उनके ऋण पोर्टफोलियो में जलवायु जोखिम कितना है। कौन-से क्षेत्र भविष्य में अधिक संवेदनशील हो सकते हैं? किन उद्योगों को

पर्यावरणीय बदलावों से बड़ा खतरा है? किस प्रकार के निवेश भविष्य में अधिक टिकाऊ सिद्ध होंगे? यह सोच केवल आदर्शवाद नहीं, बल्कि दूरदर्शी बैंकिंग का हिस्सा है।

### ग्राहक जागरूकता: बैंक केवल सेवा प्रदाता नहीं, सामाजिक शिक्षक भी

भारत जैसे देश में बैंकों की पहुँच बहुत व्यापक है। शहरों से लेकर गाँवों तक, व्यापारी से लेकर किसान तक, युवा से लेकर वरिष्ठ नागरिक तक—बैंक का संपर्क समाज के लगभग हर वर्ग से है। यही कारण है कि बैंक पर्यावरण के विषय में जन-जागरूकता फैलाने की महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

वे ग्राहकों को प्रेरित कर सकते हैं—

- पेपर स्टेटमेंट छोड़कर ई-स्टेटमेंट अपनाने के लिए।
  - डिजिटल भुगतान को प्राथमिकता देने के लिए।
  - बिजली, पानी और कागज की बचत जैसे छोटे-छोटे कदम अपनाने के लिए।
  - पर्यावरण-अनुकूल वित्तीय योजनाओं के बारे में जानने के लिए।
- इसके अलावा बैंक स्कूलों, कॉलेजों, स्वयं सहायता समूहों, किसान क्लबों और स्थानीय समुदायों के साथ मिलकर पौधारोपण, जल संरक्षण, स्वच्छता, प्लास्टिक-मुक्त अभियान और पर्यावरण शिक्षा से जुड़े कार्यक्रम चला सकते हैं। बैंक की बात आम नागरिक तक आसानी से पहुँचती है, क्योंकि बैंक एक भरोसेमंद संस्था है। इस भरोसे का उपयोग केवल वित्तीय साक्षरता के लिए नहीं, बल्कि पर्यावरणीय साक्षरता के लिए भी किया जा सकता है।

### कॉर्पोरेट सामाजिक दायित्व और बैंक

आज कई बैंक सामाजिक दायित्व के अंतर्गत शिक्षा, स्वास्थ्य, स्वच्छता, पेयजल और सामुदायिक विकास से जुड़े कार्यक्रमों में भाग लेते हैं। यदि इन पहलों में पर्यावरण संरक्षण को केंद्र में रखा जाए, तो उनका असर और भी सार्थक हो सकता है। उदाहरण के लिए—

- जल संरक्षण और वर्षा जल संचयन परियोजनाएँ
- सार्वजनिक स्थलों और विद्यालयों में पौधारोपण
- सोलर स्ट्रीट लाइट या सौर ऊर्जा आधारित सामुदायिक सुविधाएँ
- प्लास्टिक-मुक्त परिसर और स्वच्छता अभियान
- पर्यावरण शिक्षा से जुड़े स्थानीय कार्यक्रम

हालाँकि, यहाँ एक महत्वपूर्ण बात यह है कि पर्यावरण के नाम पर केवल औपचारिकता पूरी कर देने से काम नहीं चलेगा। एक-दिवसीय पौधारोपण कार्यक्रम से ज्यादा महत्वपूर्ण है उन पौधों की देखभाल। एक बैनर या नारा लगाने से ज्यादा असर तब होगा जब संस्था अपने नियमित व्यवहार में हरित सोच को उतारे।

इसलिए बैंक भी तभी सार्थक है जब उसमें निरंतरता, स्थानीय आवश्यकता और ईमानदार प्रतिबद्धता हो।

### आगे की राह: बैंक क्या कर सकते हैं?

यदि बैंकों को सचमुच पर्यावरण संरक्षण में प्रभावी भूमिका निभानी है, तो कुछ ठोस कदमों पर गंभीरता से काम करना होगा—

- स्पष्ट ग्रीन बैंकिंग नीति तैयार करना
- ऋण स्वीकृति में पर्यावरणीय जोखिम मूल्यांकन को शामिल करना
- हरित परियोजनाओं के लिए विशेष ऋण योजनाएँ चलाना
- पेपरलेस और डिजिटल बैंकिंग को डिफॉल्ट संस्कृति बनाना
- शाखाओं को ऊर्जा-कुशल और संसाधन-संवेदनशील बनाना

### निष्कर्ष:

### जब बैंक बदलेंगे, तब विकास की दिशा भी बदलेगी

पर्यावरण संरक्षण अब केवल पेड़ लगाने का अभियान नहीं, बल्कि जीवन और विकास की नई समझ है। यह समझ कहती है कि आर्थिक प्रगति और पर्यावरणीय संतुलन को एक-दूसरे का विरोधी मानना भूल है। असली प्रगति वही है जो आने वाली पीढ़ियों के हिस्से की हवा, पानी, मिट्टी और संसाधनों को न छीन ले। और इस प्रगति की राह तय करने में बैंक की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है।

बैंक समाज की बचत के संरक्षक हैं, लेकिन उससे भी बढ़कर वे समाज के भविष्य के निर्माता हैं। वे तय करते हैं कि धन किस दिशा में जाएगा, कौन-सी परियोजनाएँ आगे बढ़ेंगी, किस प्रकार के उद्योग फलेंगे-फूलेंगे और विकास का चेहरा कैसा होगा। इसलिए यदि बैंक पर्यावरण-अनुकूल सोच को अपनाते हैं, तो वे केवल अपनी संस्था को आधुनिक नहीं बनाते, बल्कि पूरे समाज को अधिक जिम्मेदार दिशा में ले जाते हैं।

आज आवश्यकता इस बात की है कि बैंक पर्यावरण को “अतिरिक्त विषय” न मानें, बल्कि उसे अपने मूल कामकाज का हिस्सा बनाएँ। वे अपनी शाखाओं को हरित बनाएँ, कागज और ऊर्जा की बचत करें, डिजिटल बैंकिंग को बढ़ावा दें, हरित परियोजनाओं को वित्त दें, किसानों और ग्राहकों को जागरूक करें और जिम्मेदार वित्तपोषण की संस्कृति विकसित करें। ऐसा करके वे केवल कारोबार नहीं करेंगे, बल्कि विश्वास और भविष्य—दोनों की रक्षा करेंगे।

अधिकारी  
शाखा गोरखपुर  
(क्षेत्रीय कार्यालय लखनऊ)

## डिजिटल लेन-देन का भारतीय अर्थव्यवस्था पर प्रभाव



सुदेश कुमार

**भ**ारतीय अर्थव्यवस्था विश्व की पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है तथा यह लगातार प्रगति के पथ पर अग्रसर है। वर्तमान में सभी देश स्वयं को एक आर्थिक शक्ति के रूप में प्रस्थापित करने के लिए प्रयासरत हैं एवं अत्याधुनिक तकनीकी ज्ञान, नवीन आर्थिक सुधार, आधारभूत ढाँचे एवं फिनटेक जैसे कारकों पर लगातार कार्य कर रहे हैं। भारत ने भी सन 1991 में उदारीकरण के पश्चात अर्थव्यवस्था के क्षेत्र में लगातार नए आयामों को छुआ है एवं कई नए उपायों को अंगीकार किया है। इनमें से एक प्रमुख कदम है - डिजिटल लेनदेन की पहल।

### परिचय एवं विकास-क्रम -

डिजिटल लेनदेन से तात्पर्य उस लेनदेन से है जिसमें मुद्रा का आदान-प्रदान भौतिक रूप से नहीं होता है बल्कि आभासी या ऑनलाइन तरीके से होता है। इसके लिए इलेक्ट्रॉनिक माध्यम का प्रयोग किया जाता है। इसमें लेनदेन की गई धनराशि खाते में स्वतः जुड़ या कट जाती है एवं उसका विवरण खाते में अंकित हो जाता है। इसमें डेबिट कार्ड, क्रेडिट कार्ड, चेक, यू पी आई, ई-वॉलेट, ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म, पी ओ एस, मोबाइल भुगतान एप, बायोमेट्रिक भुगतान, राष्ट्रीय इलेक्ट्रॉनिक टोल संग्रह (फास्टैग), यू एस एस डी, बैंक प्रीपेड कार्ड, इंटरनेट बैंकिंग, मोबाइल बैंकिंग, माइक्रो ए टी एम आदि सम्मिलित हैं।

वैसे तो भारत में डिजिटल लेनदेन बैंकिंग सेवाओं के कम्प्यूटरीकृत होने के साथ ही प्रारम्भ हो चुका था किन्तु इसमें महत्वपूर्ण गति तब आई जब जुलाई 2015 में सरकार ने लोगों में डिजिटल साक्षरता को बढ़ाने हेतु, भारत को डिजिटल रूप से सशक्त राष्ट्र बनाने हेतु एवं भारतीय अर्थव्यवस्था को एक ज्ञान आधारित प्रगतिशील अर्थव्यवस्था में परिवर्तित करने हेतु 'डिजिटल इंडिया' कार्यक्रम की शुरुआत की। डिजिटल लेनदेन इसका एक पहलू है जो पारंपरिक भुगतान प्रणाली के लिए एक तेज और अधिक सुविधाजनक विकल्प प्रदान करता है। भारत सरकार ने ई-गवर्नेंस की पहुँच आम जनता तक प्रभावी बनाकर सरकारी योजनाओं का लाभ हर घर के दरवाजे तक सुनिश्चित करने के लिए यह कार्यक्रम शुरू किया था। नवंबर 2016 में सरकार द्वारा लागू किये गए विमुद्रीकरण के पश्चात डिजिटल लेनदेन ने तेज रफ्तार पकड़ी एवं जनता ने इसमें उल्लेखनीय बढ़ोत्तरी दर्ज करवाई। डिजिटल लेनदेन के लाभ एवं उनसे अर्थव्यवस्था पर पड़े प्रभावों पर एक नजर डालना आवश्यक है।



### डिजिटल लेनदेन के लाभ:

1. डिजिटल लेनदेन से समय की बचत होती है। जिस कार्य को नगदी से करने में घंटों लग जाते हैं, वह कार्य कुछ मिनटों में संपन्न हो जाता है। नगदी के खोने या चोरी हो जाने का भय भी समाप्त हो जाता है। यदि थोड़ी सावधानी बरती जाए तो डिजिटल लेनदेन में धोखाधड़ी या जालसाजी का भी खतरा कम हो जाता है।
2. इसके द्वारा सही धनराशि का भुगतान कर सकते हैं और खुले पैसों की समस्या भी नहीं होती। इसके द्वारा व्यापारियों को और ग्राहकों को नकली नोटों की समस्या से भी रूबरू नहीं होना पड़ता।
3. इसके द्वारा किए गए किसी भी लेनदेन को आसानी से चेक किया जा सकता है, इसीलिए नगदी की तुलना में यह अधिक प्रभावी एवं पारदर्शी होता है और इसमें कोई गलत लेनदेन होने की संभावना भी कम हो जाती है।
4. विभिन्न प्रकार के डिजिटल लेनदेन के चैनल और ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म खरीदी गई वस्तुओं पर विभिन्न प्रकार के केशबैक और ऑफर देते हैं जिससे लोगों को फायदा होता है।

- डिजिटल लेनदेन करने वाले लोग आसानी से उनके द्वारा किए गए खर्चों के प्रवाह को नियंत्रित कर सकते हैं क्योंकि वह उन्हें हर समय दिख रहा होता है।
- भौतिक अवसंरचना और कागजी कार्रवाई की आवश्यकता नहीं होने के कारण डिजिटल लेनदेन सस्ता पड़ता है।
- राष्ट्रीय इलेक्ट्रॉनिक टोल संग्रहण (एनईटीसी) प्रणाली द्वारा प्रौद्योगिकी का उपयोग करके टोल पर बिना रुके तथा बिना राजमार्ग पर घंटों जाम लगाए टोल संग्रहण को आसान तथा त्वरित कर दिया गया है जिससे समय तथा ईंधन की बचत हुई है।

#### डिजिटल लेनदेन से भारतीय अर्थव्यवस्था पर पड़े प्रभाव:

- डिजिटल लेनदेन की निगरानी आसान होती है इसीलिए इससे सरकार को काले धन के प्रवाह पर नकेल कसने में सहायता मिली है एवं भ्रष्टाचार पर नियंत्रण स्थापित हुआ है।
- इससे भारतीय आबादी के एक बड़े हिस्से तक बैंकिंग सेवाओं की पहुँच आसान हुई है जिससे वित्तीय समावेशन में सहायता मिली है।
- इससे फिनटेक उद्योग को भी बढ़ावा मिला है, जिससे रोजगार के नए अवसर उत्पन्न हुए हैं।
- इसके बढ़ते चलन के परिणामस्वरूप नगदी के प्रयोग में कमी आई है जिसके कारण मुद्रा नोटों की छपाई, उनके परिवहन की लागत तथा अन्य सम्बंधित खर्चों में कमी आई है।
- नगदी में होने वाले लेनदेन से एक अव्यवस्थित एवं अनौपचारिक व्यवस्था का संचालन होता है जिसमें सरकार को कर-निर्धारण एवं कर-संग्रहण में कठिनाई होती है



जबकि डिजिटल लेनदेन कर-निर्धारण एवं कर-संग्रहण की दृष्टि से एक बेहतर व्यवस्था है।

- नगद व्यवस्था में सरकारी सामाजिक सुरक्षा योजनाओं का धन-लाभ आम जनता तक कम होकर पहुँचता था या उन्हें मिलता था जो इन योजनाओं के पात्र नहीं होते थे जबकि डिजिटल लेनदेन में प्रत्यक्ष लाभ हस्तांतरण (डी बी टी) द्वारा शत-प्रतिशत धन-लाभ वास्तविक लाभार्थियों को मिलने लगा है।

किन्तु इस क्षेत्र में सरकार के सम्मुख कई चुनौतियाँ भी हैं जिनका निवारण किए बिना आगे की डगर अत्यंत मुश्किल हो सकती है।

#### डिजिटल लेनदेन- सरकार के समक्ष चुनौतियाँ



डिजिटल लेनदेन में लम्बी छलांग लगाने के बावजूद प्रतिदिन सामने आते धोखाधड़ी एवं ऑनलाइन ठगी के मामलों के चलते जनसामान्य के बीच इसकी शत-प्रतिशत स्वीकार्यता, ग्रामीण एवं सुदूर क्षेत्रों में आधारभूत डिजिटल ढाँचे का अभाव, भारतीय जनसंख्या के एक बड़े वर्ग में व्याप्त तकनीकी निरक्षरता, भारत के एक बड़े भौगोलिक क्षेत्र में इंटरनेट की धीमी गति तथा साइबर सुरक्षा हेतु मजबूत तंत्र का अभाव कुछ ऐसी चुनौतियाँ हैं जिनका समाधान किए बिना डिजिटल लेनदेन की आगे की डगर बहुत कठिन हो सकती है।

अतः यह सुस्पष्ट है कि आने वाला समय पूर्णतः डिजिटल लेनदेन का ही होगा लेकिन इसे सफल बनाने हेतु सरकार को डिजिटल आधारभूत अवसंरचना की मजबूती, सुगम एवं साइबर सुरक्षा से युक्त तंत्र की स्थापना तथा जनसामान्य में डिजिटल लेनदेन से सम्बंधित जानकारी का प्रचार-प्रसार एवं स्वीकार्यता स्थापित करने के प्रयासों की आवश्यकता होगी जिसके बिना निर्धारित लक्ष्य पाना दिवा-स्वप्न ही होगा।

ग्राहक सेवा सहयोगी  
क्षेत्रीय कार्यालय, दिल्ली-2

## तेल संकट और भारत



पुलकित रॉय

द्वितीय विश्व युद्ध के बाद की अवधि में दो सबसे बड़े तेल संकट विश्व ने देखा था। मार्च 2026 के अमेरिका-इजरायल और ईरान के बीच शुरू हुए युद्ध के कारण तीसरा बड़ा तेल, गैस संकट विश्व के सामने उभरा है। विश्व अर्थव्यवस्था के इतिहास में तेल केवल ऊर्जा का स्रोत नहीं, बल्कि आर्थिक और सामरिक शक्ति का सबसे प्रभावशाली माध्यम रहा है। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद विश्व ने 1973 और 1979 के दो बड़े तेल संकट से गुजरा, जिन्होंने वैश्विक अर्थव्यवस्था को गहरे संकट में डाल दिया। वर्ष 2026 के प्रारंभ से पश्चिम एशिया में अमेरिका-इजरायल और ईरान के बीच बढ़ते संघर्ष तथा होर्मुज जलडमरूमध्य में उत्पन्न अनिश्चितता ने तीसरे बड़े वैश्विक तेल संकट की आशंकाओं को जन्म दे दिया है। यह संकट केवल तेल की उपलब्धता तक सीमित नहीं है, बल्कि इसका प्रभाव महँगाई, व्यापार, उद्योग, परिवहन, कृषि तथा वैश्विक अर्थव्यवस्था और लोगों के जीवन पर भी पड़ा है।

वर्ष 1973 में योम किप्पुर युद्ध के बाद ओपेक के अरब देशों ने तेल उत्पादन में कटौती और निर्यात प्रतिबंध लगाए। परिणामस्वरूप तेल की कीमतें कई गुना बढ़ गईं और विश्व अर्थव्यवस्था मंदी तथा उच्च मुद्रास्फीति के दौर में प्रवेश कर गई। परिणामस्वरूप तेल की कीमतें कुछ ही महीनों में कई गुना बढ़ गईं। विश्व अर्थव्यवस्था में पहली बार 'स्टैगफ्लेशन' अर्थात् आर्थिक मंदी और ऊँची मुद्रास्फीति एक साथ देखने को मिली। इसके बाद वर्ष 1979 की ईरानी क्रांति ने पुनः वैश्विक ऊर्जा बाजार को झकझोर दिया। इन दोनों संकटों ने विकसित देशों को ऊर्जा दक्षता बढ़ाने, परमाणु ऊर्जा तथा नवीकरणीय ऊर्जा (सौर, पवन आदि) जैसे वैकल्पिक ऊर्जा स्रोतों की ओर बढ़ने के लिए प्रेरित किया।

आज विश्व तेल व्यापार का लगभग पाँचवाँ हिस्सा तेल और एलएनजी का होर्मुज जलडमरूमध्य से होकर गुजरता है। यदि यह मार्ग बाधित होता है तो वैश्विक ऊर्जा आपूर्ति श्रृंखला गंभीर रूप से प्रभावित होती है। इसी कारण वर्तमान पश्चिम एशियाई संघर्ष ने विश्व बाजार में तेल की कीमतों, समुद्री परिवहन लागत तथा ऊर्जा सुरक्षा को लेकर नई चिंताएँ पैदा कर दी हैं। एक समय कच्चे तेल के दाम 100 डॉलर प्रति बैरल से ऊपर चला गया था तो वहीं भी गैस और क्लोरोसिन तेल का गंभीर संकट भारत में भी देखने को मिला।

भारत विश्व का तीसरा सबसे बड़ा तेल उपभोक्ता देश है। जहाँ प्रतिदिन लगभग 5.3 से 5.5 मिलियन बैरल कच्चे तेल की

खपत होती है, जबकि घरेलू उत्पादन केवल 0.6 मिलियन बैरल प्रतिदिन है। अर्थात् भारत अपनी लगभग 85 से 90 प्रतिशत तेल आवश्यकताओं के लिए आयात पर निर्भर है। भारत के कुल तेल आयात का लगभग आधा हिस्सा खाड़ी देशों (इराक, सऊदी अरब, संयुक्त अरब अमीरात और कुवैत) से आता है, जो होर्मुज जलडमरूमध्य से होकर भारत पहुँचता है। इसलिए इस मार्ग में किसी भी प्रकार की बाधा भारत की ऊर्जा सुरक्षा के लिए गंभीर चुनौती बन सकती है।

यदि अंतरराष्ट्रीय बाजार में कच्चे तेल की कीमतें \$100 प्रति बैरल या उससे अधिक बनी रहती हैं तो भारत की आर्थिक वृद्धि पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है। सकल घरेलू उत्पाद की वृद्धि दर में गिरावट, मुद्रास्फीति में वृद्धि, चालू खाता घाटे का विस्तार तथा रुपये पर दबाव जैसी स्थितियाँ उत्पन्न हो सकती हैं। विशेषज्ञों के अनुसार कच्चे तेल की कीमतों में प्रत्येक \$10 प्रति बैरल की वृद्धि से भारत का वार्षिक आयात बिल लगभग \$12 से \$15 अरब तक बढ़ सकता है। इससे ईंधन, परिवहन, बिजली, उर्वरक तथा खाद्य वस्तुओं की कीमतों में भी वृद्धि होगी। साथ ही सरकार पर ईंधन एवं उर्वरक सब्सिडी का बोझ बढ़ेगा और राजकोषीय घाटे पर अतिरिक्त दबाव पड़ेगा। साथ ही विमानन, लॉजिस्टिक्स, निर्माण, रसायन तथा उर्वरक उद्योगों की लागत भी बढ़ेगी।

यदि लंबे समय तक तेल का औसत मूल्य \$100 प्रति बैरल राहत है, तो भारत की जीडीपी वृद्धि 7% से घटकर 6.6% हो सकती है, जबकि मुद्रास्फीति में 40 आधार अंकों की वृद्धि हो सकती है। मुख्य रूप से उर्वरक और ईंधन सब्सिडी में वृद्धि के कारण भारत सरकार का वार्षिक व्यय ₹3.6 ट्रिलियन (\$39 बिलियन) तक बढ़ सकता है। 100 डॉलर प्रति बैरल की निरंतर कीमत जीडीपी के कारण चालू खाता घाटा (सीएडी) 1.9%-2.2% तक बढ़ा सकती, जिससे रुपये पर रिकॉर्ड दबाव पड़ेगा। रुपये के और नीचे गिरने की संभावना है। यदि तेल की कीमतें एक वर्ष के लिए औसतन \$100 प्रति बैरल रहती हैं, तो वैश्विक जीडीपी में 0.4% की कमी आ सकती है।

भारत सरकार ने हाल के वर्षों में ऊर्जा स्रोतों के विविधीकरण की दिशा में महत्वपूर्ण कदम उठाए हैं। रूस से रियायती कच्चे तेल की खरीद, रणनीतिक पेट्रोलियम भंडार का निर्माण, अमेरिका, अफ्रीका तथा लैटिन अमेरिकी देशों से आयात बढ़ाने के प्रयास तथा नवीकरणीय ऊर्जा में निवेश इसी रणनीति का हिस्सा हैं। भारत सरकार ने प्राकृतिक गैस की आपूर्ति के लिए प्राथमिकता

व्यवस्था लागू की है, जिसके अंतर्गत घरेलू उपभोक्ताओं, एलपीजी, सीएनजी, आवश्यक सेवाओं तथा उर्वरक उद्योग को प्राथमिकता दी जा रही है। साथ ही घरेलू तेल कंपनियों को एलपीजी उत्पादन बढ़ाने और आपातकालीन भंडार तैयार करने के निर्देश दिए गए हैं।

वर्तमान संकट यह स्पष्ट संकेत देता है कि केवल आयात आधारित ऊर्जा व्यवस्था किसी भी देश की दीर्घकालिक आवश्यकता पूरी नहीं कर सकती। भारत को सौर, पवन, हरित हाइड्रोजन, जैव ईंधन, इलेक्ट्रिक वाहनों तथा ऊर्जा दक्षता कार्यक्रमों में निवेश व रणनीति तेज करनी होगी। इस ढांचे के तहत लागू किए गए विभिन्न मिशनों को सफलता मिली है, जैसे कि “राष्ट्रीय सौर मिशन” के तहत, 2022 में लक्ष्य से दोगुनी 61 गीगावाट सौर ऊर्जा क्षमता स्थापित की गई; “राष्ट्रीय संवर्धित ऊर्जा दक्षता मिशन” ने तेल के समकक्ष 6.63 मिलियन टन की ऊर्जा बचत का लक्ष्य निर्धारित किया; “राष्ट्रीय हरित भारत मिशन” के कारण हरित आवरण के लिए पूंजी का आवंटन बढ़ा है और इसका लक्ष्य 6 मिलियन हेक्टेयर वनरोपण करना है “राष्ट्रीय सतत कृषि मिशन” जो खाद्य सुरक्षा को बढ़ाने के लिए सतत कृषि के लिए विचार प्रस्तुत करता है और “राष्ट्रीय हिमालयी पारिस्थितिकी तंत्र को बनाए रखने का मिशन” का उद्देश्य देश में हिमालय क्षेत्र में जैव विविधता और हिमनद के पिघलने की रक्षा करना है। कहने का अभिप्राय यह है कि नवीकरणीय ऊर्जा की तरफ बढ़ने से न केवल पर्यावरण को संरक्षित कर सकते हैं अपितु अपने ऊर्जा आयात बिल को भी कम कर सकते हैं। इन सब के साथ-साथ रणनीतिक पेट्रोलियम भंडार और विस्तार, घरेलू तेल एवं गैस उत्पादन में वृद्धि तथा ऊर्जा स्रोतों का विविधीकरण राष्ट्रीय प्राथमिकता बनना चाहिए। साथ ही ऊर्जा संरक्षण भी उतना ही महत्वपूर्ण है। सार्वजनिक परिवहन को बढ़ावा देना, ऊर्जा दक्ष भवन, उद्योगों में आधुनिक तकनीक तथा ईंधन की बचत जैसे उपाय भारत को भविष्य के संकटों के प्रति अधिक सक्षम बना सकते हैं।

वर्ष 2047 तक विकसित राष्ट्र बनने के दिशा में ऊर्जा की आवश्यकता कई गुना बढ़ने वाली है। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में देखें तो पेट्रोलियम और गैस आधुनिक समाज का सबसे महत्वपूर्ण ऊर्जा आधार है। औद्योगिक उत्पादन से लेकर परिवहन, कृषि, रक्षा, विमानन, बिजली उत्पादन और घरेलू आवश्यकताओं तक लगभग प्रत्येक क्षेत्र प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से तेल एवं गैस पर निर्भर है। यही कारण है कि वैश्विक राजनीति में तेल केवल व्यापारिक वस्तु नहीं, बल्कि सामरिक शक्ति का सबसे प्रभावशाली साधन माना जाता है।

वर्ष 2026 के संघर्ष तथा होर्मुज जलडमरूमध्य में उत्पन्न अस्थिरता ने विश्व के सामने एक नए तेल संकट की आशंका खड़ी कर दी है। यदि यह संकट लंबा खिंचता है तो इसका प्रभाव केवल तेल बाजार तक सीमित नहीं रहेगा, बल्कि वैश्विक आर्थिक वृद्धि, मुद्रास्फीति, अंतरराष्ट्रीय व्यापार, वित्तीय बाजार, खाद्य सुरक्षा और ऊर्जा व्यवस्था पर भी व्यापक रूप से दिखाई देगा। भारत जैसे देश, जो अपनी ऊर्जा आवश्यकताओं का अधिकांश भाग आयात से पूरा करते हैं, इस संकट के प्रति विशेष रूप से संवेदनशील हैं।

जैसा कि हमें ज्ञात है कि आज विश्व का लगभग 20 प्रतिशत तेल और एलएनजी व्यापार होर्मुज जलडमरूमध्य से होकर गुजरता है। यह विश्व की ऊर्जा आपूर्ति की सबसे महत्वपूर्ण समुद्री जीवनरेखा है। यदि इस मार्ग में व्यवधान उत्पन्न होता है तो वैश्विक तेल आपूर्ति प्रभावित होती है, समुद्री मालभाड़ा कई गुना बढ़ जाता है, माल हेतु बीमा लागत बढ़ती है, एलपीजी एवं एलएनजी की उपलब्धता कम होती है जिसके कारण सामान्य लोगों के किचन तक बुरा प्रभाव पड़ता है। भारत जैसे ऊर्जा आयातक देशों पर गंभीर आर्थिक दबाव और अनिश्चितता का वातावरण बनता है।

भारत विश्व का तीसरा सबसे बड़ा तेल उपभोक्ता है। देश प्रतिदिन लगभग 5.5 मिलियन बैरल कच्चे तेल की खपत करता है जबकि घरेलू उत्पादन केवल लगभग 0.6 मिलियन बैरल प्रतिदिन है। भारत के कुल तेल आयात का लगभग आधा भाग इराक, सऊदी अरब, संयुक्त अरब अमीरात और कुवैत से आता है तथा यह लगभग पूरा तेल होर्मुज जलडमरूमध्य से होकर भारत पहुँचता है। इस मार्ग पर लंबे समय तक गतिरोध रहने के कारण अर्थव्यवस्था पर नकारात्मक प्रभाव पड़ेगा।

इतिहास सिखाता है कि प्रत्येक तेल संकट केवल आर्थिक संकट नहीं होता, बल्कि वह नई ऊर्जा क्रांति का मार्ग भी प्रशस्त करता है। 1973 के संकट ने विकसित देशों को ऊर्जा दक्षता और वैकल्पिक ऊर्जा की ओर प्रेरित किया था। वर्ष 2026 का संकट भारत के लिए भी चेतावनी है कि ऊर्जा आत्मनिर्भरता अब विकल्प नहीं, बल्कि सामरिक व रणनीतिक आवश्यकता है।

भारत यदि आयात निर्भरता कम करते हुए नवीकरणीय ऊर्जा, ऊर्जा संरक्षण, रणनीतिक भंडारण, वैकल्पिक ईंधनों और संतुलित ऊर्जा कूटनीति को प्राथमिकता देता है, तो वह न केवल इस संकट का सफलतापूर्वक सामना कर सकेगा, बल्कि भविष्य की वैश्विक ऊर्जा व्यवस्था में एक सशक्त और आत्मनिर्भर राष्ट्र के रूप में उभर सकता है।

**“ऊर्जा सुरक्षा ही आर्थिक सुरक्षा है, और आर्थिक सुरक्षा ही राष्ट्रीय शक्ति का आधार है।”**

तेल संकट केवल ऊर्जा का संकट नहीं, बल्कि आर्थिक स्थिरता, राष्ट्रीय सुरक्षा और विकास की गति से जुड़ा प्रश्न है। इतिहास बताता है कि हर बड़े तेल संकट ने विश्व को नई ऊर्जा नीतियां अपनाने के लिए प्रेरित किया है। भारत के लिए भी यह समय आत्मनिर्भर ऊर्जा व्यवस्था विकसित करने, आयात निर्भरता कम करने और स्वच्छ ऊर्जा (नवीकरणीय) आधारित भविष्य की ओर निर्णायक कदम बढ़ाने का है। यदि आज सही नीतिगत निर्णय लिए जाते हैं, तो वर्तमान संकट भविष्य में भारत की ऊर्जा सुरक्षा को और अधिक मजबूत बनाने का अवसर भी सिद्ध हो सकता है।

वरिष्ठ प्रबंधक  
संकाय सदस्य, एसटीसी, रोहिणी

## एफसीएनआर (बी) जमा और भारतीय अर्थव्यवस्था



विभाष कुमार

वैश्विक आर्थिक अनिश्चितता, भू-राजनीतिक तनाव, ऊर्जा संकट तथा वित्तीय बाजारों में बढ़ती अस्थिरता के बीच किसी भी देश की आर्थिक मजबूती उसके विदेशी मुद्रा भंडार और बाह्य क्षेत्र की स्थिरता पर निर्भर करती है। भारत जैसे आयात-निर्भर देश के लिए विदेशी मुद्रा भंडार केवल आयात भुगतान का साधन नहीं, बल्कि आर्थिक सुरक्षा कवच भी है। ऐसे समय में भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा विदेशी मुद्रा अनिवासी (बैंक) अर्थात् एफसीएनआर (बी) जमा को प्रोत्साहित करने के लिए उठाए गए कदम अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। 8 जून 2026 को घोषित इस विशेष योजना के अंतर्गत आरबीआई ने तीन से पाँच वर्ष की विदेशी मुद्रा जमा जुटाने वाले बैंकों को हेजिंग लागत में राहत, सीआरआर एवं एसएलआर आवश्यकताओं से छूट तथा स्वैप सुविधा उपलब्ध कराई है। इन प्रवधानों का उद्देश्य विश्वभर में फैले लगभग 3.5 करोड़ प्रवासी भारतीयों की बचत को भारतीय बैंकिंग प्रणाली की ओर आकर्षित करना है। योजना के प्रारंभ होने के उपरांत, 8 जून 2026 से 26 जुलाई 2026 के बीच लगभग \$40 अरब अमेरिकी की अतिरिक्त विदेशी मुद्रा प्राप्त हुई, जिसमें लगभग \$26 अरब डॉलर एफसीएनआर (बी) जमा के माध्यम से प्राप्त हुई है। मोतीलाल ओसवाल फाइनेंशियल सर्विसेज ने वित्त वर्ष 2027 के दौरान \$40-50 अरब अमेरिकी डॉलर के प्रवाह का अनुमान लगाया है, जबकि गोल्डमैन सैक्स का अनुमान है कि आरबीआई की इन योजनाओं से चालू वित्त वर्ष में करीब \$60 अरब का अतिरिक्त विदेशी निवेश भारत में आ सकता है। एक अन्य अनुमान के अनुसार इस योजना के माध्यम से \$70 अरब अमेरिकी तक की विदेशी मुद्रा देश में आएगी।

भारतीय रिजर्व बैंक का यह पहल केवल बैंकिंग उत्पाद को बढ़ावा देने तक सीमित नहीं है, बल्कि भारतीय अर्थव्यवस्था, विदेशी मुद्रा भंडार, रुपये की स्थिरता और वित्तीय प्रणाली को सुदृढ़ करने की एक व्यापक रणनीति का हिस्सा है। विदेशी मुद्रा बैंक अनिवासी (एफसीएनआर) जमा एक विशेष सावधि जमा योजना है, जिसे अनिवासी भारतीय और भारतीय मूल के व्यक्ति भारत के अधिकृत बैंकों में विदेशी मुद्रा में खोल सकते हैं। यह खाता अमेरिकी डॉलर, ब्रिटिश पाउंड, यूरो, जापानी येन, ऑस्ट्रेलियाई डॉलर तथा कनाडाई डॉलर जैसी अनुमोदित विदेशी मुद्राओं में संचालित किया जाता है। इस योजना की अवधि सामान्यतः एक वर्ष से पाँच वर्ष तक होती है। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि जमा राशि और ब्याज दोनों विदेशी मुद्रा में ही रहते हैं, जिससे भारतीय रुपये के उतार-चढ़ाव का कोई प्रभाव निवेशक पर नहीं पड़ता।

एफसीएनआर (बी) खाते की लोकप्रियता का सबसे बड़ा कारण इसके बहुआयामी लाभ हैं। सर्वप्रथम इस खाते पर अर्जित ब्याज भारत में आयकर से पूर्णतः मुक्त है, बशर्ते खाताधारक अनिवासी भारतीय है। इससे निवेशकों को कर के बाद बेहतर प्रतिफल प्राप्त होता है। यह खाता विनिमय दर जोखिम से पूर्ण सुरक्षा प्रदान करता है। यदि रुपये का मूल्य गिरता है, तब भी निवेशक की मूल विदेशी मुद्रा सुरक्षित रहती है। इसलिए निवेश का वास्तविक मूल्य प्रभावित नहीं होता। इसके अंतर्गत मूलधन और ब्याज दोनों का पूर्ण प्रत्यावर्तन संभव है। निवेशक बिना किसी सीमा के अपनी राशि विदेश भेज सकता है। आवश्यकता पड़ने पर अपनी एफसीएनआर (बी) जमा के विरुद्ध रुपये अथवा विदेशी मुद्रा में ऋण भी प्राप्त कर सकता है। इसके अतिरिक्त निश्चित ब्याज दर, नामांकन सुविधा, लचीली अवधि और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर स्वीकार्य मुद्रा में निवेश जैसी विशेषताएँ इसे एनआरआई के लिए अत्यंत आकर्षक बनाती हैं।

पिछले कुछ वर्षों में वैश्विक स्तर पर बढ़ती अनिश्चितता, जिसमें रूस-यूक्रेन युद्ध तथा खाड़ी के देशों में चल रहे युद्ध के चलते कच्चे तेल व गैस की ऊँची कीमतें तथा पूंजी प्रवाह में उतार-चढ़ाव के कारण भारतीय रुपये पर दबाव बढ़ा। इसे देखते हुए आरबीआई ने एफसीएनआर (बी) जमा को प्रोत्साहित करने के लिए विशेष पैकेज की घोषणा की। इसके अंतर्गत बैंकों को विदेशी मुद्रा जमा पर हेजिंग लागत में राहत दी गई। साथ ही इन अतिरिक्त जमाओं को सीआरआर और एसएलआर आवश्यकताओं से अस्थायी छूट प्रदान की गई। इससे बैंकों की फंडिंग लागत लगभग 60-65 आधार अंक कम हो गई। इस लागत बचत का लाभ बैंकों ने एनआरआई ग्राहकों को अधिक ब्याज दर के रूप में दिया। कई बैंकों ने एफसीएनआर (बी) जमा पर ब्याज दरें 7% से अधिक कर दीं, जिससे विदेशी मुद्रा जमा के लिए प्रतिस्पर्धा तेज हो गई।

सर्वप्रथम इजराइल ने वर्ष 1951 में इजराइल हेतु विकास निगम (डीसीइ) के माध्यम से दुनिया भर (विशेषकर अमेरिका) में फैले यहूदी प्रवासियों से विदेशी मुद्रा (डॉलर) जुटाने के लिए विशेष बॉन्ड योजना प्रारंभ की थी। भारत के पड़ोसी देश पाकिस्तान और श्रीलंका भी अपने प्रवासी नागरिकों के माध्यम से अपने देश में डॉलर को आकर्षित करने के उद्देश्य से इस तरह की योजना प्रारंभ कर चुका है। भारत भी इससे पूर्व वर्ष 2013 में प्रवासी नागरिकों हेतु इस तरह की योजना लाया था। इस योजना के जरिए कुछ ही महीनों में रिकॉर्ड \$26 बिलियन अमेरिकी का विदेशी मुद्रा भंडार

जुटाया, जो उस समय के कुल विदेशी मुद्रा भंडार का लगभग 12% था। देश में डॉलर आने से रुपये में रिकॉर्ड गिरावट तुरंत रुक गई। अगस्त 2013 में रुपया जो अपने ऐतिहासिक निचले स्तर (₹68.85) पर पहुंच गया था, वह मार्च 2014 तक मजबूत होकर ₹59.91 पर आ गया अर्थात् इसमें करीब 13% की रिकवरी देखी गई। वर्ष 2026 में इसके माध्यम से विदेशी मुद्रा भंडार का लगभग 10% प्राप्त होने की संभावना है। डॉलर के आने के बाद रुपये में स्थिरता देखने को मिलेगी। वर्तमान तेल संकट और आर्थिक स्थिरता के कारण रुपया अपने सबसे न्यूनतम स्तर तक पहुंच गया है। भारतीय रिजर्व बैंक की इस पहल से न केवल विदेशी मुद्रा भंडार में वृद्धि होगी अपितु रुपया में आई इस गिरावट में भी सुधार आएगा। जब एनआरआई विदेशी मुद्रा भारत में जमा करते हैं, तो इससे देश के पास डॉलर, यूरो और अन्य विदेशी मुद्राओं का भंडार बढ़ता है। विदेशी मुद्रा भंडार जितना अधिक होगा, भारत उतना ही सुरक्षित रूप से अपने आयातों का भुगतान कर सकेगा तथा बाहरी आर्थिक झटकों का सामना कर सकेगा। डॉलर की पर्याप्त उपलब्धता से विदेशी मुद्रा बाजार में संतुलन बना रहता है। इससे रुपये पर मूल्यहास का दबाव कम होता है तथा आयातकों और निवेशकों का विश्वास बढ़ता है। स्थिर रुपया महंगाई को नियंत्रित रखने में भी सहायता करता है क्योंकि भारत अपने अधिकांश कच्चे तेल और अन्य आवश्यक वस्तुओं का आयात करता है। एफसीएनआर (बी) जमा के माध्यम से बैंकों को सस्ती विदेशी मुद्रा उपलब्ध होती है। इससे उनकी फंडिंग लागत कम होती है तथा वे उद्योग, व्यापार और आधारभूत संरचना वाली परियोजनाओं को अधिक प्रतिस्पर्धी दरों पर ऋण प्रदान कर सकते हैं। विशेषज्ञों का अनुमान है कि आरबीआई के इन उपायों से वित्त वर्ष 2026-27 में \$70 अरब अमेरिकी तक अतिरिक्त विदेशी मुद्रा भारत आ सकती है। यह भारत के भुगतान संतुलन को मजबूत बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। उच्च विदेशी मुद्रा भंडार किसी भी देश की आर्थिक साख को मजबूत करता है। इससे अंतरराष्ट्रीय रेटिंग एजेंसियों और विदेशी निवेशकों का विश्वास बढ़ता है तथा भारत को वैश्विक बाजारों से कम लागत पर पूंजी उपलब्ध होती है।

अवगत हो कि एफसीएनआर (बी) जमा केवल विदेशी मुद्रा आकर्षित करने का साधन नहीं है, बल्कि रुपये की रक्षा का प्रभावी माध्यम भी है। जब विदेशी मुद्रा का पर्याप्त प्रवाह होता है, तब आरबीआई को बाजार में अत्यधिक हस्तक्षेप करने की आवश्यकता कम पड़ती है। आवश्यकता पड़ने पर केंद्रीय बैंक अपने विदेशी मुद्रा भंडार से डॉलर बेचकर रुपये को स्थिर कर सकता है। इसके अतिरिक्त आरबीआई विदेशी मुद्रा स्वैप, स्पोर्ट मार्केट हस्तक्षेप तथा बंध्याकरण जैसे उपायों के माध्यम से मुद्रा बाजार में संतुलन बनाए रखता है। यदि डॉलर खरीदने से बाजार में रुपये की अधिकता हो जाए, तो सरकारी प्रतिभूतियाँ बेचकर अतिरिक्त तरलता को वापस खींच लिया जाता है।

वर्तमान परिस्थितियों में घोषित एफसीएनआर योजना वर्ष 2013 में घोषित योजना से भी अधिक व्यापक है। एफसीएनआर

योजना के अंतर्गत वर्ष 2013 की तुलना में वर्ष 2026 में दो महत्वपूर्ण बदलाव किए गए हैं। प्रथम आरबीआई बैंकों की पूरी हेजिंग लागत खुद उठा रहा है जोकि वर्ष 2013 में आरबीआई ने बैंकों को 3.5% की रियायती दर पर डॉलर-रुपया स्वैप का विकल्प दिया था। दूसरा सबसे महत्वपूर्ण बात यह रही कि वर्ष 2013 के तुलना में वर्ष 2026 में एक वर्ष का न्यूनतम लॉक-इन अवधि का प्रावधान रखा गया है। प्रारंभिक संकेत बताते हैं कि इस बार विदेशी मुद्रा प्रवाह पहले से अधिक हो सकता है। विशेषज्ञों का अनुमान है कि इस योजना के अंतर्गत प्राप्त विदेशी मुद्रा का आधे से ज्यादा योगदान अकेले यूआई का हो सकता है।

भारत का विदेशी मुद्रा भंडार चार प्रमुख भागों में विभाजित है। विदेशी मुद्रा व आस्तियों के अंतर्गत लगभग 80 प्रतिशत विदेशी मुद्रा भारतीय रिजर्व बैंक रखता है। स्वर्ण भंडार में लगभग 15 प्रतिशत, विशेष आहरण अधिकार में और अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष में आरक्षित निधि में क्रमशः 2.7 प्रतिशत व 0.7 प्रतिशत विदेशी मुद्रा का निवेश किया गया है।

भारत विश्व का सबसे बड़ा प्रवासी समुदाय रखने वाले देशों में शामिल है। यदि इस समुदाय की बचत का एक छोटा हिस्सा भी भारतीय बैंकिंग प्रणाली में आकर्षित किया जाए, तो इससे विदेशी मुद्रा भंडार, निवेश, बैंकिंग प्रणाली तथा आर्थिक विकास को दीर्घकालिक लाभ मिलेगा। डिजिटल बैंकिंग, सरल खाता खोलने की प्रक्रिया, प्रतिस्पर्धी ब्याज दरें तथा कर प्रोत्साहनों के माध्यम से एफसीएनआर (बी) को और अधिक लोकप्रिय बनाया जा सकता है। यद्यपि एफसीएनआर (बी) योजना अत्यंत लाभकारी है, फिर भी कुछ चुनौतियाँ बनी रहती हैं। यदि भविष्य में वैश्विक ब्याज दरों में भारी परिवर्तन होता है, तो एनआरआई निवेश के प्रवाह में कमी आ सकती है। इसके अतिरिक्त बड़ी मात्रा में जमा की परिपक्वता एक ही समय पर होने पर बैंकों को पुनर्वित्त की चुनौती का सामना करना पड़ सकता है। इसलिए आरबीआई को परिपक्वता प्रोफाइल का संतुलित प्रबंधन तथा पर्याप्त विदेशी मुद्रा भंडार बनाए रखना आवश्यक होगा।

एफसीएनआर (बी) जमा केवल एक बैंकिंग उत्पाद नहीं, बल्कि भारत की व्यापक आर्थिक रणनीति का महत्वपूर्ण उपकरण है। यह विदेशी मुद्रा भंडार बढ़ाने, रुपये को स्थिर रखने, बैंकिंग प्रणाली को सस्ती विदेशी पूंजी उपलब्ध कराने तथा वैश्विक निवेशकों का विश्वास मजबूत करने में अत्यंत प्रभावी सिद्ध हो सकता है। आरबीआई द्वारा हेजिंग लागत में राहत, सीआरआर-एसएलआर छूट तथा स्वैप सुविधा जैसे कदमों ने इस योजना को और अधिक आकर्षक बना दिया है। यदि इन उपायों का प्रभावी क्रियान्वयन जारी रहता है, तो भारत न केवल अपने विदेशी मुद्रा भंडार को और मजबूत कर सकेगा, बल्कि वैश्विक आर्थिक अनिश्चितताओं के बीच भी वित्तीय स्थिरता बनाए रखने में सफल होगा। आने वाले वर्षों में एफसीएनआर (बी) भारतीय बैंकिंग और अर्थव्यवस्था दोनों के लिए विदेशी पूंजी जुटाने का एक महत्वपूर्ण स्तंभ बन सकता है।

वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा)  
प्रधान कार्यालय, राजभाषा विभाग

## काव्य-मंजूषा

### घर पीछे रह गया

ट्रांसफर का ऑर्डर कभी शोर मचाकर नहीं आता...  
वो चुपचाप आता है... जैसे कोई सच, जिसे आप टालते रहे हों... पर  
जो एक दिन सामने खड़ा मिल ही जाता है।

बैंकर की जिंदगी में शहर बदलना कोई घटना नहीं, एक सिलसिला है।  
हर कुछ साल में एक नई जगह, नया ब्रांच, नई शुरुआत।  
आप एक अजनबी की तरह पहुँचते हैं— एक सूटकेस, कुछ  
जिम्मेदारियाँ और बहुत सारी उम्मीदें लेकर।

शुरुआत में सब कुछ पराया लगता है।  
सड़कें, लोग, आवाज़ें... सब।  
फिर धीरे-धीरे... सब बदलने लगता है।

वही छोटा-सा कमरा अपना लगने लगता है।  
ब्रांच के पास वाला चाय वाला बिना पूछे आपकी चाय बना देता है।  
कुछ चेहरे रोज़ दिखने लगते हैं... फिर पहचान बनने लगती है... और  
कब वो पहचान अपनापन बन जाती है, पता ही नहीं चलता।

और फिर एक दिन... आप ठान लेते हैं—  
अब अपना घर बनाना है।

ईएमआई की हर किस्त के साथ, आप सिर्फ़ पैसे नहीं देते...  
आप अपने सपनों का एक-एक टुकड़ा उसमें जोड़ते हैं।  
दीवारों का रंग चुनते हैं, पर्दों का कपड़ा देखते हैं, फर्नीचर सजाते हैं...  
और उस घर के हर कोने में अपनी मेहनत, अपनी थकान, अपनी  
उम्मीदें रख देते हैं।

वो घर... सिर्फ़ घर नहीं रहता...  
आपकी कहानी बन जाता है।

पहली बार लगता है— अब सब ठीक है... अब सब अपना है।  
और ठीक उसी वक्त...  
एक कागज़ आता है।  
“ट्रांसफर।”  
बस एक शब्द...  
और सब कुछ उलट जाता है।

आप उसी घर में खड़े होते हैं, जिसे आपने इतने प्यार से बनाया था...  
दीवारों को देखते हैं, जैसे वो कुछ कहेंगी...  
कमरों में घूमते हैं, जैसे वो आपको रोक लेंगे...  
पर नहीं।

आपको फिर से अपना सामान समेटना होता है।  
फिर से एक नई जगह जाना होता है।  
और दिल के किसी कोने में... कुछ टूटता है।

क्योंकि छोड़ना आसान नहीं होता...  
खासकर तब, जब आपने दिल लगाकर कुछ बनाया हो।  
पर शायद... आपने जो बनाया, वो आप समझ ही नहीं पाए।

आप सोच रहे होंगे...  
मैं उस पक्के मकान की बात कर रहा हूँ...  
वो दीवारें, वो छत, वो दरवाज़े... जिन पर आपका नाम लिखा है।  
पर नहीं...

मैं उस घर की बात ही नहीं कर रहा था।  
असल घर तो वो था—  
वो दोपहरें, जो लंच ब्रेक से ज्यादा दिल के करीब थीं...  
वो चाय के कप, जिनमें सुकून घुला होता था...  
वो बेवजह की हँसी, जो सबसे सच्ची लगती थी...  
वो बातें, जो कभी खत्म ही नहीं होती थीं...  
वो लोग...  
आपके दोस्त।

जो एक अजनबी शहर को अपना बना देते हैं...  
जो काम के बोझ को हल्का कर देते हैं...  
जो बिना कहे, आपके दिन का सबसे जरूरी हिस्सा बन जाते हैं...  
वही थे... आपका घर।  
और सच तो ये है...  
जब ट्रांसफर होता है ना—  
तो पीछे दीवारें नहीं छूटतीं...

पीछे छूट जाते हैं वो लोग...  
वो रिश्ते...  
वो पल...  
जो फिर कभी वैसे नहीं मिलते।  
तो हाँ...  
“घर पीछे रह गया...”  
वो नहीं, जो ईंटों से बना था—  
बल्कि वो, जो लोगों से बना था।



भाविक सरोया,  
अधिकारी, क्षेत्रीय कार्यालय,  
चंडीगढ़

## हिंदी कार्यशाला



क्षेत्रीय कार्यालय आगरा



क्षेत्रीय कार्यालय पटना



क्षेत्रीय कार्यालय वाराणसी



क्षेत्रीय कार्यालय गुवाहाटी



क्षेत्रीय कार्यालय मुंबई



एसटीसी, रोहिणी

## हिंदी कार्यशाला



क्षेत्रीय कार्यालय पटियाला



क्षेत्रीय कार्यालय दिल्ली-2



क्षेत्रीय कार्यालय चंडीगढ़



क्षेत्रीय कार्यालय होशियारपुर



क्षेत्रीय कार्यालय कोलकाता



क्षेत्रीय कार्यालय अमृतसर

## काव्य-मंजूषा

### स्वप्न

### शहर

भारत वर्ष के भोले युवा, देखें स्वप्न हजार  
कर स्नातक हो गए हैं, इज्जत के हकदार

देख लुभावने विज्ञापन, कोचिंग के बारम्बार  
फिर लग गये पढ़ाई में, पिछली मेहनत बेकार

शत प्रतिशत है नौकरी, दावा है चमकदार  
हम ही बनाते बाबू, साहब, जज और थानेदार

भूखे प्यासे मेहनत करें, सालों तक लगातार  
हो जाते पेपर लीक, फिर जाते हिम्मत हार

पार हुई सीमा उम्र की, अब हो गए लाचार  
सब्र रखें कब तक युवा, कब तक रहें ताबेदार

अथक श्रम का फल बेबसी, फिर रहे हैं बेकार  
हर दर से बेइज्जती, बेरोजगारी मिली उपहार

कौन सुने दुःख अपना, कौन आमजन का वफादार  
मुजरिम, नेता, पत्रकार सब एक दूजे के यार

सवाल पूछते युवा को, दे देते तगड़ी दुत्कार  
न्यायपालिका कहे, ये कॉक्रोच इन्हें क्या अधिकार

बुनियादी सुविधाएं काटते, बजट पर करते हाहाकार  
जनता के टैक्स से हुए, जीवन भर पेंशन के हकदार

आधी आबादी महिलाओं की, कहां उनके अधिकार  
अन्याय देख भी मौन रहे, आज वही है समझदार

खूब कमा कर भरोसा, नेता बन गए अदाकार  
दल बदल कर कहे, बस हम ही हैं वफादार

मुजरिम नेता बन गए, नेता बन गए हैं कलाकार  
ढूंढ सको तो ढूंढ लो, कौन देश का गुनाहगार

हर दिन एक नई समस्या,  
विवेक हुआ बेकार  
युवा स्तब्ध हो पृष्ठता,  
मेलोडी क्यों मीठी है यार



रीना आर्या,  
प्रबंधक, क्षेत्रीय कार्यालय,  
दिल्ली-1

मैं लोगो को अपनी ओर आकर्षित करता हूँ  
मुझमें एक सम्मोहन है

चाहे मैं न्यूयॉर्क, पेरिस, लंदन, सिडनी  
मैड्रिड, लीमा, कराची, दुबई हूँ या ग्लासगो

चाहे दिल्ली, पूना, एथेंस, बर्लिन या टोरंटो  
इस्तांबुल, एम्स्टर्डम, बीजिंग या मास्को

हर कोई मेरे चमकते कंगूरे को देखता है  
मेरी चमक में वो ऐसा खो जाता है कि

बस अपनी नींव छोड़कर भागा-भागा  
मेरे पास आता है, और मुझमें समाना चाहता है

और वो मुझमें समा भी जाते हैं  
मेरे बाजारों में खो जाते हैं

उन्हें लगता है कि यह सब मुझसे गुलज़ार है  
अब उन्हें कौन बताए

मेरा कंगूरा ऊंचा इन्होंने ही किया है  
इन्हें जंगल पसंद है

इन्होंने कंक्रीट के जंगल बना दिए  
अब इन्हें मेरी आदत पड़ चुकी है

वैसे ये कभी-कभी तीज त्यौहार में  
गाँव, खेत, खलिहान घूम आते थे

इस बार...  
मैंने इन्हें कंगूरे से खुद ही धकेल दिया  
जाओ तुम! अपने गाँव जाओ  
अब आवाज आ रही है...  
धडाम...

.  
. .  
. . .  
धडाम!!!



सुधाकर शुक्ला,  
अधिकारी, औचलिक  
कार्यालय दिल्ली

## राज्य स्तरीय बैंकर्स समिति : वित्तीय समावेशन एवं समन्वित बैंकिंग विकास का सशक्त माध्यम



नारायण निरंजन

**भा**रत जैसे विशाल और विविधतापूर्ण देश में आर्थिक विकास को गति देने तथा बैंकिंग सेवाओं को समाज के प्रत्येक वर्ग तक पहुँचाने के लिए सरकार, भारतीय रिजर्व बैंक, नाबार्ड तथा बैंकों के बीच प्रभावी समन्वय अत्यंत आवश्यक है। इसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु राज्य स्तरीय बैंकर्स समिति की स्थापना की गई। एसएलबीसी राज्य स्तर पर बैंकिंग और विकास से संबंधित विभिन्न योजनाओं के क्रियान्वयन, समीक्षा तथा समन्वय का प्रमुख मंच है। यह समिति राज्य सरकार, बैंकिंग संस्थानों, वित्तीय संस्थाओं तथा विभिन्न सरकारी विभागों को एक साझा मंच प्रदान करती है, जहाँ राज्य की बैंकिंग आवश्यकताओं, वित्तीय समावेशन तथा ऋण वितरण संबंधी विषयों पर विचार-विमर्श किया जाता है। एसएलबीसी राज्य में बैंकिंग क्षेत्र के विकास के लिए मार्गदर्शन प्रदान करने के साथ-साथ सरकारी योजनाओं को जन-जन तक पहुँचाने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

### एसएलबीसी का गठन एवं उद्देश्य

एसएलबीसी की अवधारणा वर्ष 1970 के दशक में रिजर्व बैंक द्वारा प्रस्तुत की गई थी। इसका उद्देश्य राज्य स्तर पर बैंकों और सरकारी एजेंसियों के मध्य समन्वय स्थापित करना तथा प्राथमिकता क्षेत्र ऋण के लक्ष्यों को प्रभावी रूप से प्राप्त करना था।

एसएलबीसी के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं—

1. राज्य में बैंकिंग विकास की समीक्षा करना।
2. वित्तीय समावेशन को बढ़ावा देना।
3. प्राथमिकता क्षेत्र ऋण लक्ष्यों की निगरानी करना।
4. सरकारी प्रायोजित योजनाओं के प्रभावी क्रियान्वयन को सुनिश्चित करना।
5. कृषि, एमएसएमई, शिक्षा, आवास तथा अन्य क्षेत्रों में ऋण प्रवाह को बढ़ाना।
6. बैंकों तथा राज्य सरकार के मध्य समन्वय को मजबूत बनाना।
7. बैंकिंग सेवाओं से वंचित क्षेत्रों की पहचान कर उन्हें बैंकिंग नेटवर्क से जोड़ना।

### एसएलबीसी की संरचना

प्रत्येक राज्य में एक प्रमुख बैंक को 'संयोजक बैंक' का दायित्व

सौंपा जाता है। यह बैंक एसएलबीसी की बैठकों का आयोजन करता है तथा राज्य में बैंकिंग गतिविधियों की समीक्षा करता है। एसएलबीसी की संरचना में सामान्यतः निम्न सदस्य शामिल होते हैं—

- राज्य सरकार के वरिष्ठ अधिकारी
- भारतीय रिजर्व बैंक के प्रतिनिधि
- नाबार्ड के प्रतिनिधि
- सभी अनुसूचित वाणिज्यिक बैंक
- क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक
- सहकारी बैंक
- वित्तीय संस्थान
- राज्य स्तरीय विकास एजेंसियाँ

एसएलबीसी की अध्यक्षता प्रायः संयोजक बैंक के वरिष्ठ अधिकारी द्वारा की जाती है तथा बैठकों में मुख्य सचिव, वित्त सचिव तथा अन्य विभागीय अधिकारी भी भाग लेते हैं।

### बैंकिंग विकास में एसएलबीसी की भूमिका

एसएलबीसी राज्य में बैंकिंग क्षेत्र के समग्र विकास की दिशा तय करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यह बैंक शाखाओं के विस्तार, जमा और ऋण वृद्धि, वित्तीय समावेशन तथा डिजिटल बैंकिंग के विकास की नियमित समीक्षा करती है।

राज्य के बैंकिंग परिदृश्य के विश्लेषण के माध्यम से एसएलबीसी विभिन्न बैंकों की प्रगति, शाखा नेटवर्क, कारोबार प्रतिनिधि जमा, अग्रिम तथा क्रेडिट-डिपॉजिट अनुपात की समीक्षा करती है। इससे बैंकिंग सेवाओं में सुधार के लिए आवश्यक रणनीतियाँ तैयार की जाती हैं।

### वित्तीय समावेशन में योगदान

वित्तीय समावेशन का अर्थ है समाज के प्रत्येक व्यक्ति को औपचारिक वित्तीय सेवाओं तक पहुँच प्रदान करना। लाखों लोग अभी भी ग्रामीण और दूरस्थ क्षेत्रों में बैंकिंग सुविधाओं से पूर्णतः नहीं जुड़ पाए हैं।

एसएलबीसी निम्नलिखित माध्यमों से वित्तीय समावेशन को प्रोत्साहित करती है—

- बैंकिंग सुविधा रहित गाँवों की पहचान
- बैंक मित्र की नियुक्ति
- जन-धन खाते खोलना
- डिजिटल भुगतान को बढ़ावा देना
- वित्तीय साक्षरता कार्यक्रम आयोजित करना
- महिलाओं एवं कमजोर वर्गों के लिए विशेष पहल

देश में प्रधानमंत्री जन-धन योजना, डिजिटल इंडिया तथा वित्तीय साक्षरता अभियानों की सफलता में एसएलबीसी की महत्वपूर्ण भूमिका रही है।

### कृषि क्षेत्र के विकास में एसएलबीसी की भूमिका

भारत की अर्थव्यवस्था का एक बड़ा हिस्सा कृषि पर आधारित है। किसानों को समय पर ऋण उपलब्ध कराना कृषि उत्पादन बढ़ाने के लिए अत्यंत आवश्यक है।

एसएलबीसी कृषि क्षेत्र में निम्नलिखित विषयों की समीक्षा करती है—

- कृषि ऋण वितरण
- किसान क्रेडिट कार्ड
- कृषि अवसंरचना कोष
- पशुपालन एवं मत्स्य पालन ऋण
- सिंचाई परियोजनाओं का वित्तपोषण
- कृषि यंत्रीकरण

एसएलबीसी बैठकों में कृषि ऋण उपलब्धता और विभिन्न कृषि योजनाओं की प्रगति की समीक्षा की जाती है, जिससे किसानों तक बैंकिंग सहायता समय पर पहुँच सके।

### एमएसएमई क्षेत्र के लिए एसएलबीसी का महत्व

सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम देश की आर्थिक प्रगति का महत्वपूर्ण आधार हैं। रोजगार सृजन और औद्योगिक विकास में इनकी भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है।

एसएलबीसी एमएसएमई क्षेत्र से संबंधित निम्न कार्य करती है—

- एमएसएमई ऋण वितरण की समीक्षा
- ऋण स्वीकृति प्रक्रियाओं में सुधार
- उद्यमियों के लिए जागरूकता कार्यक्रम
- सरकारी योजनाओं की निगरानी
- नए उद्यमों के वित्तपोषण को बढ़ावा

एमएसएमई क्षेत्र को पर्याप्त ऋण उपलब्ध कराने से रोजगार अवसर बढ़ते हैं तथा स्थानीय अर्थव्यवस्था को मजबूती मिलती है।

### सरकारी योजनाओं के क्रियान्वयन में भूमिका

सरकार की अनेक सामाजिक एवं आर्थिक योजनाएँ बैंकों के माध्यम से संचालित होती हैं। इन योजनाओं के सफल क्रियान्वयन हेतु एसएलबीसी नियमित निगरानी एवं समीक्षा करती है।

प्रमुख योजनाएँ—

#### 1. प्रधानमंत्री स्वनिधि योजना

सड़क विक्रेताओं को कार्यशील पूंजी ऋण उपलब्ध कराने हेतु।

#### 2. प्रधानमंत्री विश्वकर्मा योजना

पारंपरिक कारीगरों एवं शिल्पकारों के सशक्तिकरण हेतु।

#### 3. प्रधानमंत्री आवास योजना

आवास निर्माण एवं खरीद हेतु वित्तीय सहायता।

#### 4. प्रधानमंत्री सूर्य घर योजना

घरेलू सौर ऊर्जा को बढ़ावा देने के लिए।

एसएलबीसी इन योजनाओं की प्रगति पर निगरानी रखती है तथा लक्ष्य प्राप्ति में आने वाली बाधाओं का समाधान सुझाती है। विभिन्न योजनाओं के अंतर्गत आवेदन, स्वीकृति एवं वितरण की स्थिति की समीक्षा भी की जाती है।

### ऋण जमा अनुपात की निगरानी

एसएलबीसी का एक प्रमुख कार्य राज्य के ऋण जमा अनुपात की समीक्षा करना है।

$$\text{ऋण जमा अनुपात} = \frac{\text{कुल ऋण}}{\text{कुल जमा}} \times 100$$

यह अनुपात बताता है कि बैंकों द्वारा एकत्रित जमा राशि का कितना भाग ऋण के रूप में वितरित किया जा रहा है।

कम ऋण जमा अनुपात यह संकेत देता है कि राज्य में पर्याप्त ऋण प्रवाह नहीं हो रहा है। ऐसी स्थिति में एसएलबीसी बैंकिंग संस्थानों को ऋण विस्तार बढ़ाने हेतु दिशा-निर्देश देती है। राज्य की आर्थिक गतिविधियों को प्रोत्साहित करने में ऋण जमा अनुपात की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

### वित्तीय साक्षरता और डिजिटल बैंकिंग

आज के डिजिटल युग में वित्तीय साक्षरता उतनी ही आवश्यक है जितनी बैंकिंग सुविधा। एसएलबीसी विभिन्न जागरूकता कार्यक्रमों के माध्यम से लोगों को बैंकिंग सेवाओं के प्रति शिक्षित करती है। मुख्य गतिविधियाँ—

- डिजिटल भुगतान जागरूकता
- साइबर सुरक्षा जागरूकता
- यूपीआई एवं मोबाइल बैंकिंग प्रचार

- वित्तीय साक्षरता शिविर
- ग्रामीण क्षेत्रों में वित्तीय शिक्षा

इससे लोगों का बैंकिंग प्रणाली पर विश्वास बढ़ता है तथा नकदी आधारित अर्थव्यवस्था से डिजिटल अर्थव्यवस्था की ओर संक्रमण आसान होता है।

### एसएलबीसी बैठकों का महत्व

एसएलबीसी की बैठकें सामान्यतः त्रैमासिक आधार पर आयोजित की जाती हैं। इन बैठकों में राज्य के बैंकिंग प्रदर्शन की विस्तृत समीक्षा की जाती है।

बैठकों में चर्चा के प्रमुख विषय—

- वार्षिक ऋण योजना
- प्राथमिकता क्षेत्र ऋण
- कृषि एवं एमएसएमई वित्तपोषण
- वित्तीय समावेशन
- बैंकिंग शिकायतें
- सरकारी योजनाओं की प्रगति
- डिजिटल भुगतान
- साइबर सुरक्षा
- बैंक शाखाओं का विस्तार

इन बैठकों के माध्यम से नीति निर्माण और क्रियान्वयन के बीच की दूरी कम होती है।

### चुनौतियाँ

यद्यपि एसएलबीसी ने बैंकिंग विकास में उल्लेखनीय योगदान दिया है, फिर भी अनेक चुनौतियाँ बनी हुई हैं—

1. ग्रामीण क्षेत्रों में अपर्याप्त बैंकिंग पहुँच।
2. वित्तीय जागरूकता की कमी।
3. कम ऋण जमा अनुपात वाले जिले।
4. सरकारी योजनाओं में आवेदन प्रक्रिया संबंधी समस्याएँ।
5. तकनीकी एवं डिजिटल अवसंरचना की कमी।
6. कृषि एवं एमएसएमई ऋण की वसूली संबंधी चुनौतियाँ।
7. साइबर धोखाधड़ी के बढ़ते मामले।

इन चुनौतियों का समाधान करने के लिए सभी हितधारकों के बीच और अधिक समन्वय की आवश्यकता है।

### भविष्य की संभावनाएँ

भविष्य में एसएलबीसी की भूमिका और अधिक महत्वपूर्ण होने जा रही है। डिजिटल बैंकिंग, वित्तीय समावेशन, हरित वित्त, ग्रामीण उद्यमिता तथा स्टार्टअप वित्तपोषण के क्षेत्र में एसएलबीसी नई दिशा प्रदान कर सकती है।

भविष्य के प्रमुख फोकस क्षेत्र—

- 100% वित्तीय समावेशन
- डिजिटल भुगतान का व्यापक प्रसार
- महिला उद्यमिता को बढ़ावा
- स्टार्टअप वित्तपोषण
- हरित एवं सतत वित्त
- कृषि तकनीकी निवेश
- कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित बैंकिंग सेवाएँ

इन पहलों से राज्य की आर्थिक प्रगति को नई गति मिल सकती है।

राज्य स्तरीय बैंकर्स समिति एसएलबीसी भारत की बैंकिंग व्यवस्था का एक अत्यंत महत्वपूर्ण संस्थागत तंत्र है। यह राज्य सरकार, भारतीय रिजर्व बैंक, नाबार्ड तथा बैंकों के मध्य प्रभावी समन्वय स्थापित कर आर्थिक विकास को गति प्रदान करती है। वित्तीय समावेशन, कृषि वित्तपोषण, एमएसएमई विकास, डिजिटल बैंकिंग तथा सरकारी योजनाओं के सफल क्रियान्वयन में एसएलबीसी की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है।

आज जब भारत विकसित राष्ट्र बनने की दिशा में अग्रसर है, तब एसएलबीसी की जिम्मेदारी और भी बढ़ गई है। यदि एसएलबीसी द्वारा निर्धारित लक्ष्यों को प्रभावी ढंग से क्रियान्वित किया जाए तथा बैंकिंग सेवाओं को समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुँचाया जाए, तो यह न केवल वित्तीय समावेशन को मजबूत करेगा बल्कि समावेशी एवं सतत आर्थिक विकास का मार्ग भी प्रशस्त करेगा। इस प्रकार एसएलबीसी वास्तव में राज्य के समग्र आर्थिक एवं सामाजिक विकास की आधारशिला है।

मुख्य प्रबंधक  
प्र.का. कार्यनीति विभाग

**गुलाब को उपदेश देने की आवश्यकता नहीं होती। वह तो केवल अपनी खुशबू बिखेरता है।  
उसकी खुशबू ही उसका संदेश है।**

—महात्मा गांधी

# भारतीय योग प्रणाली एवं वैश्विक परिकल्पना



मनीषा खटीक

**भ**ारत की सांस्कृतिक और आध्यात्मिक परंपराओं में योग का विशेष स्थान है। योग केवल शारीरिक व्यायाम नहीं, बल्कि जीवन को संतुलित, स्वस्थ और सार्थक बनाने की एक संपूर्ण जीवन-पद्धति है। भारतीय ऋषि-मुनियों द्वारा हजारों वर्ष पूर्व विकसित की गई यह प्रणाली आज विश्वभर में स्वास्थ्य, मानसिक शांति और आध्यात्मिक उन्नति का माध्यम बन चुकी है। वर्तमान समय में जब तनाव, अवसाद, अनियमित जीवनशैली और विभिन्न रोग मानव जीवन को प्रभावित कर रहे हैं, तब योग एक प्रभावी समाधान के रूप में उभरकर सामने आया है। यही कारण है कि योग की भारतीय अवधारणा आज वैश्विक स्तर पर स्वीकार्यता प्राप्त कर चुकी है।

## भारतीय योग प्रणाली का स्वरूप

‘योग’ शब्द संस्कृत धातु ‘युज्’ से बना है, जिसका अर्थ है – जोड़ना या एकत्व स्थापित करना। योग का उद्देश्य शरीर, मन और आत्मा के बीच सामंजस्य स्थापित करना है। भारतीय दर्शन में योग को आत्म-साक्षात्कार और मोक्ष प्राप्ति का साधन माना गया है।

योग का सबसे व्यवस्थित स्वरूप महर्षि पतंजलि द्वारा रचित योगसूत्र में मिलता है। पतंजलि ने योग को आठ अंगों में विभाजित किया है, जिन्हें अष्टांग योग कहा जाता है –

- यम
- नियम
- आसन
- प्राणायाम
- प्रत्याहार
- धारणा
- ध्यान
- समाधि



इन आठ अंगों के माध्यम से व्यक्ति अपने जीवन में अनुशासन, मानसिक स्थिरता और आध्यात्मिक उन्नति प्राप्त कर सकता है। भारतीय योग प्रणाली केवल शरीर को स्वस्थ रखने तक सीमित नहीं है, बल्कि यह नैतिक मूल्यों, आत्मसंयम और आत्मबोध पर भी बल देती है।

## योग का ऐतिहासिक विकास

योग की परंपरा वैदिक काल से चली आ रही है। वेदों, उपनिषदों, भगवद्गीता तथा विभिन्न पुराणों में योग का विस्तृत वर्णन मिलता है। भगवान श्रीकृष्ण ने भगवद्गीता में कर्मयोग, ज्ञानयोग और भक्तियोग की महत्ता बताई है। मध्यकाल में विभिन्न संतों और योगाचार्यों ने योग को जन-जन तक पहुँचाने का कार्य किया।

आधुनिक युग में स्वामी विवेकानंद, स्वामी शिवानंद, महर्षि अरविंद और अनेक योग गुरुओं ने योग के प्रचार-प्रसार में महत्वपूर्ण योगदान दिया। उनके प्रयासों से योग भारत की सीमाओं को पार कर विश्व के विभिन्न देशों तक पहुँचा।

## योग का वैज्ञानिक महत्व

आज विज्ञान भी योग के लाभों को स्वीकार करता है। विभिन्न शोधों से यह सिद्ध हुआ है कि नियमित योगाभ्यास से शरीर और मन दोनों स्वस्थ रहते हैं। योग के प्रमुख लाभ निम्नलिखित हैं –

- ❖ तनाव और चिंता में कमी
- ❖ रक्तचाप का नियंत्रण
- ❖ हृदय रोगों की रोकथाम
- ❖ मधुमेह नियंत्रण में सहायता
- ❖ रोग प्रतिरोधक क्षमता में वृद्धि
- ❖ एकाग्रता और स्मरण शक्ति में सुधार
- ❖ बेहतर नींद और मानसिक शांति

प्राणायाम और ध्यान जैसी योग पद्धतियाँ मानसिक स्वास्थ्य को सुदृढ़ बनाती हैं तथा व्यक्ति को सकारात्मक सोच विकसित करने में सहायता करती हैं।

## वैश्विक परिप्रेक्ष्य में योग

इक्कीसवीं सदी में योग ने एक वैश्विक रूपांतरण का रूप ले लिया है। आज अमेरिका, ब्रिटेन, फ्रांस, जर्मनी, जापान, ऑस्ट्रेलिया सहित विश्व के अनेक देशों में लाखों लोग नियमित रूप से योग का अभ्यास करते हैं। अस्पतालों, विद्यालयों, विश्वविद्यालयों और कॉर्पोरेट संस्थानों में भी योग को अपनाया जा रहा है।

योग की बढ़ती लोकप्रियता का सबसे बड़ा प्रमाण यह है कि संयुक्त राष्ट्र महासभा ने वर्ष 2014 में भारत के प्रस्ताव को स्वीकार करते हुए 21 जून को अंतरराष्ट्रीय योग दिवस घोषित किया। वर्ष 2015 से विश्वभर में यह दिवस उत्साहपूर्वक मनाया जा रहा है। इस पहल ने योग को एक वैश्विक स्वास्थ्य आंदोलन का स्वरूप प्रदान किया है।

### योग और वैश्विक कल्याण की परिकल्पना

विश्व आज अनेक चुनौतियों का सामना कर रहा है, जिनमें तनाव, मानसिक रोग, पर्यावरणीय संकट, सामाजिक असंतुलन और जीवनशैली से जुड़ी बीमारियाँ प्रमुख हैं। भारतीय योग प्रणाली इन समस्याओं के समाधान की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है।

योग व्यक्ति को आत्म-अनुशासन, सहिष्णुता, करुणा और संतुलित जीवन का संदेश देता है। यह केवल व्यक्तिगत स्वास्थ्य का माध्यम नहीं है, बल्कि सामाजिक और वैश्विक शांति का आधार भी है। योग की भावना 'वसुधैव कुटुम्बकम्' अर्थात् सम्पूर्ण विश्व एक परिवार है, के सिद्धांत को सशक्त बनाती है।

योग के माध्यम से विभिन्न देशों और संस्कृतियों के लोग एक साझा मंच पर आते हैं, जिससे वैश्विक भाईचारे और सांस्कृतिक संवाद को बढ़ावा मिलता है। इस प्रकार योग मानवता को जोड़ने वाली एक सार्वभौमिक भाषा बन गया है।

### भारत की भूमिका

भारत योग की जन्मभूमि होने के कारण इसके संरक्षण और प्रचार-प्रसार की विशेष जिम्मेदारी निभा रहा है। भारत सरकार द्वारा योग शिक्षा, अनुसंधान और प्रशिक्षण को बढ़ावा दिया जा रहा है। विभिन्न संस्थानों, विश्वविद्यालयों तथा आयुष मंत्रालय के माध्यम से योग के वैज्ञानिक और व्यावहारिक पक्षों पर कार्य किया जा रहा है।

भारत विश्व को यह संदेश दे रहा है कि योग केवल व्यायाम नहीं, बल्कि स्वस्थ जीवन, मानसिक संतुलन और आध्यात्मिक उन्नति का मार्ग है। यह भारत की सांस्कृतिक विरासत और 'सॉफ्ट पावर' का एक प्रभावशाली माध्यम भी बन चुका है।

वैज्ञानिक दृष्टि से देखा जाए तो योग शरीर की विभिन्न प्रणालियों जैसे श्वसन तंत्र, तांत्रिक तंत्र, पाचन तंत्र तथा हृदय-वाहिका यंत्र के कार्यों को संतुलित करने में सहायक होता है। योगासन, प्राणायाम और ध्यान के अभ्यास से शरीर में रक्त संचार बेहतर

होता है, फेफड़ों की क्षमता बढ़ती है तथा हृदय स्वस्थ रहता है। नियमित योग करने से रक्तचाप नियंत्रित रहता है और मधुमेह, मोटापा तथा हृदय रोग जैसी समस्याओं के जोखिम को कम करने में सहायता मिलती है।

मानसिक स्वास्थ्य के क्षेत्र में योग का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। वर्तमान समय में तनाव, चिंता और अवसाद जैसी समस्याएं तेजी से बढ़ रही हैं। वैज्ञानिक अध्ययनों से यह सिद्ध हुआ है कि योग और ध्यान मस्तिष्क में तनाव उत्पन्न करने वाले हार्मोनों के स्तर को कम करते हैं तथा मानसिक शांति और एकाग्रता को बढ़ावा देते हैं। योग का नियमित अभ्यास स्मरण शक्ति, निर्णय क्षमता और आत्मविश्वास में वृद्धि करता है।

योग प्रतिरक्षा प्रणाली को मजबूत करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह शरीर की ऋग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाकर विभिन्न रोगों से लड़ने में सहायता प्रदान करता है। साथ ही, योग शरीर के लचीलेपन, संतुलन और मांसपेशियों की शक्ति को भी बढ़ाता है, जिससे व्यक्ति अधिक ऊर्जावान और सक्रिय महसूस करता है।

आज के वैज्ञानिक युग में अनेक शोध संस्थान और चिकित्सक योग को एक सहायक चिकित्सा पद्धति के रूप में स्वीकार कर रहे हैं। कैंसर, उच्च रक्तचाप, अनिद्रा, तनाव और अन्य जीवनशैली संबंधी रोगों के उपचार एवं प्रबंधन में योग के सकारात्मक परिणाम देखने को मिले हैं। यही कारण है कि विश्वभर में योग पर अनुसंधान निरंतर बढ़ रहे हैं।

भारतीय योग प्रणाली मानव जीवन को समग्र रूप से विकसित करने वाली एक अद्भुत और कालजयी परंपरा है। यह शरीर, मन और आत्मा के संतुलन का विज्ञान है, जो व्यक्ति को स्वस्थ, शांत और सकारात्मक बनाता है। आज जब विश्व तनाव और असंतुलन की चुनौतियों से जूझ रहा है, तब योग वैश्विक कल्याण का प्रभावी मार्ग प्रस्तुत करता है। भारतीय योग प्रणाली की वैश्विक स्वीकार्यता न केवल भारत की सांस्कृतिक समृद्धि का प्रमाण है, बल्कि यह भी दर्शाती है कि प्राचीन भारतीय ज्ञान आज भी मानवता के लिए उतना ही प्रासंगिक है। योग के माध्यम से एक स्वस्थ, शांतिपूर्ण और समरस विश्व की परिकल्पना को साकार किया जा सकता है।

वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा)  
क्षेत्रीय कार्यालय, चैन्नई

## पंडवानी को सजीव करती- मोर तीजन



डॉ. भारती



छत्तीसगढ़ की लोक संस्कृति अत्यंत प्राचीन, समृद्ध और विविधतापूर्ण है। यह मुख्य रूप से अपनी अनूठी आदिवासी परंपराओं, लोकगीतों, नृत्यों, शिल्प कलाओं और मेलों के लिए जानी जाती है। प्रकृति के साथ गहरा जुड़ाव और सादगी यहाँ की जीवनशैली का प्रमुख हिस्सा है। लोक गीतों का छत्तीसगढ़ की संस्कृति में महत्वपूर्ण स्थान है। इन गीतों में जीवन के हर पहलू को अभिव्यक्ति दी जाती है। छत्तीसगढ़ के लोक गीतों में प्राकृतिक सौंदर्य, जीवन की कठिनाइयों, खुशियों और धार्मिक आस्था की अभिव्यक्ति होती है। यहाँ के लोक संगीत में ढोल, मंजीरा, बांसुरी जैसे पारंपरिक वाद्ययंत्रों का इस्तेमाल किया जाता है, जो संगीत को और भी मधुर बना देते हैं। छत्तीसगढ़ की लोक कथाएं विश्वभर में प्रसिद्ध हैं, इन लोककथाओं में यहाँ की संस्कृति और गौरवशाली इतिहास की परिकल्पनाएं झलकती हैं। रामायण और महाभारत इन लोक कथाओं के गायकों के सबसे प्रमुख कथ्य हैं जो फूलबासन और पंडवानी में लोकप्रिय हैं। छत्तीसगढ़ की पौराणिक लोक गाथाओं के अंतर्गत भरथरी और पंडवानी अधिक प्रसिद्ध हैं। भरथरी लोककठ में गुंजता एक लोक कथात्मक काव्य है जिसमें लोक जीवन की प्रचलित किवदंतियाँ समाहित हैं। पंडवानी छत्तीसगढ़ का एकल नाट्य है। पंडवानी का अर्थ है- पांडववाणी अर्थात् पांडवकथा। ये कथाएं छत्तीसगढ़ की परधान तथा देवार जातियों की गायन परंपरा हैं। पंडवानी, एक लोकप्रिय गायन शैली, महाभारत की कथाओं को गीत और नाटकीय प्रदर्शन के माध्यम से प्रस्तुत करती है। झाड़ू राम देवांगन, पुनाराम निषाद और तीजनबाई पंडवानी के लोक स्तंभ हैं। लोक प्रसिद्ध पंडवानी गायिका तीजनबाई ने इस कला को राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रसिद्धि दिलाई है। पंडवानी में छत्तीसगढ़ अंचल की लोकमान्यताओं, रूढ़ियों और परंपराओं को आत्मसात कर महाभारत की कथा के रूप में प्रस्तुत किया जाता है।

‘माता कुंती बार-बार समझावे।

अ सच में कहायौ ते मोर बेटा अस अतका बटन ला करन सुनन लागै भैयाजी।

काकरो दाई मोर कारि डारौ भैया मोर, ये दाई सुन ले कहे करण राजा दुर्योधन के में नमक खाय हौ, अतका दिन ले मोर दाई कहाँ चल दे रे हेस, आज अर्जन ल में मारहूँ कहाथौ तब तै मोला रिश्ता बनाय ल आय हस, ते काबर मन दुखी कथरस माता, तो पांच बेटा हा हमेसा जीवित रिही चाहे अर्जुन मरे, चाहे करण मरे अइसे बचन ला करण बोलन लागे भाई जेकर चन ला मइया कुंती सुने भाई, भरभर मैया मोर रोबन लागे भाई।’

अर्थ-माता कुंती कर्ण से कहती है- हे कर्ण तुम और पांडव भाई-भाई हो। सहोदर हो। गंगा के तट पर मैंने तुम्हें जन्म दिया था। तुम मेरे ज्येष्ठ पुत्र हो। तुम जाकर पांडवों से मिलकर रहो। लड़ाई झगड़े में नुकसान है बेटा। मैं सत्य बोल रही हूँ, तुम मेरे ही पुत्र हो। इतना सुनने के बाद कर्ण बोले-मैंने राजा दुर्योधन का नमक काया है, इतने दिन तक, जब मैं भटक रहा था। तब मेरी मां कहाँ थी? आज जब मैंने अर्जुन को मारने की कसम खाई है तब आप मुझे बेटा कहने आ गई। कोई बात नहीं, आपके पांच पुत्र जीवित रहेंगे-कर्ण या अर्जुन में से कोई एक नहीं रहेगा।

इसकी प्रस्तुति में तंबूरा, हारमोनियम, तबला, ढोलक, मंजीरा, बांसुरी आदि का प्रयोग किया जाता है। पंडवानी की गाथा में पूरा छत्तीसगढ़ समाया है। उसमें रहन-सहन, खान-पान, आचार-विचार, तीज-त्यौहार, उत्सव आदि संस्कार मिलते हैं। पंडवानी की गायन विधियों को दो भागों में विभक्त किया जाता है- वेदमती शैली और कपालिक शैली। वेदमती शैली जिसका आधार है शास्त्र। वेदमती शैली का आधार है खड़ी भाषा में सबलसिंह चौहान की महाभारत, जो पद्यरूप में है। वेदमती शैली के गायक-गायिका वीरासन पर बैठकर पंडवानी गायन करते हैं। पंडवानी की उक्त शैलियों पर विचार व्यक्त करते हुए छत्तीसगढ़ के विख्यात कला निदेशक राम हृदय तिवारी ने वर्णित किया है- “वेदमति और कपालिक शाखाओं के नाम से विभक्त इस पंडवानी के जिस स्वरूप से हम सब ज्यादा परिचित हैं-वह है कापालिक शैली, जो शास्त्रीय कथा को लोकरंग के नये परिधान देकर पूरे आत्मविश्वास के साथ हमारे सामने लाती है। ऐसा कहा जाता है कि कापालिक शाखा का अभ्युदय वेदमति शाखा की पारंपरिकता के विरोध स्वरूप हुआ। कापालिक शैली के गायकों ने समयानुकूल लोकरूचि के वाद्यों का समावेश अपनी प्रस्तुति में किया। अतः गायकी की नयी आक्रामक शैली का अविष्कार हुआ। इस शैली में गाथा को

अंचल की प्रचलित लोक धुनों में बांधा और पूरी सजधज के साथ प्रसंगानुकूल एक अभिनय की शुरुआत हुई, जिसका चरमोत्कर्ष आज भी विश्व विख्यात पंडवानी गायिका पद्मविभूषण तीजन बाई में देखा जा सकता है। पंडवानी की यह आकर्षक शैली गायन के साथ आंशिक नृत्य नाटक का भी आनंद प्रदान करने में सक्षम है। इस विधा में संगीत, भाव-अभिनय और कथा व्याख्या तीनों का अनुपातिक सम्मिश्रित सौंदर्य सचमुच सम्मोहन पाश में श्रोताओं को बांध लेता है।”

लोकप्रसिद्ध पंडवानी गायिका तीजनबाई का जन्म 1956 में छत्तीसगढ़ के गनियारी गांव में हुआ। वे पंडवानी लोकगायन के क्षेत्र में कापालिक शैली में उतरने वाली प्रथम महिला हैं जो उनकी प्रसिद्धि का कारण भी बनीं। वर्ष 1988 में पद्मश्री, वर्ष 2003 में पद्मभूषण से सम्मानित तीजनबाई को बिलासपुर विश्वविद्यालय द्वारा डी.लिट की मानद उपाधि से सम्मानित किया गया। वर्ष 1994 में संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार और वर्ष 2008 में नृत्य शिरोमणि से भी उन्हें सम्मानित किया गया।

तीजनबाई ने कभी औपचारिक शिक्षा प्राप्त नहीं की। वे अपने गायन और मंचन के दौरान अक्सर अपने सैकड़ों श्रोताओं के बीच कहती रहती- ‘हमारे जमाने में लड़कियों का स्कूल जाना अच्छा नहीं माना जाता था। लोग सोचते थे कि ऐसे भी खाना बना रही है, वैसे भी तो खाना ही बनाएंगी, कभी नहीं भेजा गया हमें पढ़ने। सो, भइया हम ठहरे निरच्छर, अंगूठा छाप। आप लोग पढ़े-लिखे हो, कोई भूल-चूक कथा हो जाए, कथा इधर-उधर हो जाए तो माफ कर देना। हममें भी हर कमी है, चोरी भी की है बचपन में, खाने के लिए करती थी। दरवाजे को खींचकर ऊपर की ओर उठा देना और घुसकर चौके में खा लेना, फिर उसी तरह बंद कर अपने भाई-बहनों के बीच भूखे बने बैठे रहते थे, यही हमारी चोरी थी। तो हम ठहरे निरच्छर, हिंदी बहुत टूटी है हमारी, छत्तीसगढ़ी बोलती हूं, तो भइया कौनो गलती होए तो माफ करना।’ (वाई एस हिंदी, 12 जून, 2018)

उन्होंने कला के एक ऐसे क्षेत्र में प्रवेश किया जिस पर पूरी तरह से पुरुषों का वर्चस्व था। ऐसे में तीजन बाई को परंपरा तोड़ने वाली स्त्री के तौर पर देखा गया, उनके ससुराल पक्ष को उनका गायन नगावार गुजरा, उन्हें उनके समुदाय से निष्कासित कर दिया गया। लेकिन उनकी सहनशक्ति और अंहम में तेज बाकी था। उन्होंने विपरीत परिस्थितियों में भी पंडवानी गायन जारी रखा। तीजन बाई की दूसरी शादी भी सफल नहीं रही, चूँकि पितृसत्ता से निर्मित इस समाज का एक स्त्री द्वारा वर्जनाओं को तोड़ना उनके अंहम को तार-तार करने के समान था। जिसे तीजन लगातार चुनौती देती थी। पितृसत्तामय समाज में वे ऐसे समय में पंडवानी कापालिका शैली की गायिका बनी जब महिलाओं का मंचों पर गायन अशोभनीय तथा प्रतिष्ठा के विरुद्ध था। एक बार पंडवानी प्रस्तुति के दौरान उनके पति ने मंच पर उनसे मारपीट की, जिसे तीजन ने कतई बर्दाश्त नहीं किया और वह अपने पति से विलग हो गई। किंतु उनके भाग्य में ऐसे व्यक्ति का साथ था जो जीवन भर उनके साथ रहा। उन्होंने हारमोनियम वादक तुकाराम वर्मा से शादी कर ली, जो उनका कार्यभार संभालते जिन्होंने उनके पूरे करियर में एक सच्चे जीवन साथी का रोल अदा किया।

रंगमंच के प्रसिद्ध व्यक्तित्व हबीब तनवीर ने उनकी प्रतिभा को सामने लाने में अहम भूमिका निभाई। निर्मल ने अपनी पुस्तक में वर्णित किया है कि- ‘कला-गुरु को कलासाधिका की प्रतिभा चीन्हते देर न लगी। 1980 में तनवीर ने उन्हें भारत महोत्सव में वर्ष प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी के सामने परफॉर्म कराया, जिससे उन्हें देश के भीतर और बाद में अंतरराष्ट्रीय स्तर पर बड़ी पहचान मिली।’ बाद में उन्होंने श्याम बेनेगल के ‘भारत एक खोज’ के लिए भी प्रस्तुतियां दीं जो जवाहरलाल नेहरू की पुस्तक ‘द डिस्कवरी ऑफ इंडिया’ का एक टेलीविजन रूपांतरण था।

नहीं तीजन अपने नाना ब्रजलाल को महाभारत की कहानियाँ गाते सुनाते देखतीं और धीरे धीरे उन्हें ये कहानियाँ याद होने लगीं। उनकी अद्भुत लगन और प्रतिभा को देखकर उमेद सिंह देशमुख ने उन्हें अनौपचारिक प्रशिक्षण भी दिया। 13 वर्ष की उम्र में उन्होंने अपना पहला मंच प्रदर्शन किया। सबलसिंह चौहान की छत्तीसगढ़ी महाभारत कंठस्थ करने के बाद उसने उमेद सिंह देशमुख से विधिवत प्रशिक्षण लिया। पंडवानी पुरुषों के वर्चस्व का क्षेत्र था। लेकिन जब वो मंच पर पंडवानी की प्रस्तुति देती तो पूरा परिवेश महाभारत के दृश्यों से गुंजायमान हो उठता। उनकी खनती आवाज और चेहरे के भाव दर्शकों में ओज भर देते थे। हाथ में फुंदने लगा तंबूरा लेकर जब वो गायन करती तो मंच का एक कोना जाया न जाता था। मानो मंच के हर एक कोने पर वे अपनी छाप छोड़ती चलती थी। तंबूरे से वह कई प्रयोजन साधती है। वह अर्जुन का बान है और भीम की गदा भी। तीजन वाचिक को आंगिक अभिनय में बदलने का माद्दा रखती थी। वह गायन, नृत्य, प्रलाप, वादन, संवाद और अभिनय से अपना परिवेश रचती है और दर्शकों को बांध लेती हैं। चिरहरण और दुःशासन वध उनके प्रिय प्रसंग हैं। चिरहरण के प्रसंग से वे स्त्रियों के प्रति समाज के दृष्टिकोण पर कुठाराघात करती थी। उनके कथ्य में स्त्री सशक्तिकरण का स्वर हमेशा गूंजता रहा।

छत्तीसगढ़ के संस्कृति विभाग के पूर्व निदेशक राहुल सिंह कहते हैं, “वे अपने और दर्शकों के बीच कोई दीवार नहीं चाहती थीं। एक बार जब लाइटें बंद कर दी गईं तो उन्होंने फिर से लाइट जलाने की मांग की ताकि वे दर्शकों के चेहरों के हाव-भाव देख सकें। उनका प्रदर्शन इसी प्रत्यक्ष प्रतिक्रिया के आधार पर बेहतर और संवरता जाता था।”

विश्व ख्याति प्राप्त करने के बाद भी वे गांव की परंपराओं से जुड़ी रहीं और उनकी जीवनशैली कभी नहीं बदली। उनमें गांव और गांव की संस्कृति सदैव जीवित रही। आज हमने पंडवानी की लोक कलाकार तीजनबाई को सदा के लिए खो दिया है। उनके साथ पंडवानी की एक विरासत जीवंत थी लेकिन उम्मीद कर सकते हैं की उनके शिष्य इस विरासत को विस्तार देकर पंडवानी को उसी तरह जीवित रखेंगे। वे पंडवानी की कापालिक की पर्याय रही, उनकी रिक्ति को भरना दुःकर है। पर वे हमेशा हमारे दिलों में जीवंत रहेंगी।

प्रबंधक (राजभाषा)  
प्रधान कार्यालय, राजभाषा विभाग

## वाराणसी : अनादि संस्कृति, आस्था और ज्ञान की शाश्वत नगरी



कमल नयन

**बैंक** प्रबंधन के निर्णयानुसार मेरा स्थानांतरण नव स्थापित अंचल बनारस में अंचल प्रमुख के तौर पर हुआ। चुनौतियां सदैव ही मुझे आकर्षित करती हैं इसलिए अंचल प्रमुख के रूप में मिली इस चुनौती को सहर्ष स्वीकार कर मैं बनारस के लिए प्रस्थान कर गया। बैंक की सेवा में स्थानांतरण पूर्व में भी होता रहा है परंतु इस बार के स्थानांतरण में कुछ बातें अलग थी। एक अंचल के रूप में वाराणसी को बिल्कुल शैशवास्था से शुरू करना था। आंचलिक कार्यालय का निर्माण, नई शाखाओं का स्थापन, बिजनेस के लक्ष्य को प्राप्त करना आदि ऐसे लक्ष्य थे जिसकी योजना मैं, स्थानांतरण की सूचना से ही करने लगा था। लेकिन एक बात जो भीतर ही भीतर मुझे अलग प्रकार की अनुभूति प्रदान कर रही थी वो यह की काशी की पावन धरती अब मेरी कर्मभूमि होगी। इससे पूर्व भी काशी आया था और यह ज्ञात होता था कि इस नगर में एक अद्भुत आकर्षण है। पिछले एक वर्ष में बैंक के बिजनेस को बढ़ाने के लिए वाराणसी में घूमा, वाराणसी को जाना। इस शहर में साहित्य है, इस शहर में अध्यात्म है, इस शहर में संगीत है, इस शहर में भारत की प्राचीन सभ्यता की गीत है, इस शहर में गंगा के घाट पर मोक्ष है तो गंगा की लहरों में प्रवाहित सांस्कृतिक चेतना और सौंदर्य है। काशी प्राचीनकाल से ही आर्यावर्त की सांस्कृतिक और आध्यात्मिक केन्द्र रही है। पुराणों में इस नगर को महादेव शिवशंकर का प्रिय नगर बताया गया है। मां गंगा और शिवशंकर यहां की चेतना में इस तरह मिले हुए हैं कि मानो यहां के जल-जल में गंगाजल है, यहां के कण-कण में शंकर हैं। काशी के अरुणोदय में योग, आध्यात्म और भक्ति का उदय होता रहा है। यहां काशी विश्वनाथ भी हैं, तों यहां मणिकर्णिका भी है। यहां जीवन का उल्लास भी है और यहां मृत्यु की खामोशी भी है। यहां बुद्ध के ज्ञान का प्रतीक सारनाथ भी है तो आधुनिक भारत में ज्ञान की ज्योति जलाने वाला काशी हिंदू विश्वविद्यालय भी है।

किसी भी देश के इतिहास की दो धाराएं होती हैं। एक राजनीतिक जिसे तथ्यात्मक इतिहास भी कहा जाता है और दूसरा सांस्कृतिक जिसे देश की आत्मा कहा जाता है। वाराणसी के अतीत के पन्नों में भारत का सांस्कृतिक इतिहास लिपिबद्ध है। भारत की सांस्कृतिक चेतना में वाराणसी का स्थान सबसे विशिष्ट और अविस्मरणीय है। वाराणसी केवल एक नगर नहीं, बल्कि भारतीय



सभ्यता, संस्कृति, धर्म, दर्शन, संगीत, साहित्य और आध्यात्मिकता का जीवंत प्रतीक है। इसे काशी और बनारस के नाम से भी जाना जाता है। कहा जाता है कि काशी संसार का सबसे प्राचीन जीवित नगर है, जहाँ हजारों वर्षों से जीवन, संस्कृति और परंपरा की धारा निरंतर प्रवाहित होती रही है। यह वह भूमि है जहाँ मृत्यु भी मोक्ष का द्वार मानी जाती है और जीवन का प्रत्येक क्षण आध्यात्मिक अर्थ से भर उठता है।

‘काशी’ शब्द संस्कृत की ‘काश’ धातु से बना है, जिसका अर्थ है— प्रकाश। इसलिए काशी का अर्थ है ‘प्रकाश की नगरी’ अर्थात् वह स्थान जहाँ अज्ञान का अंधकार मिटाकर ज्ञान का प्रकाश फैलता है। स्कंद पुराण में काशी को भगवान शिव की प्रिय नगरी कहा गया है। मान्यता है कि स्वयं भगवान शिव ने इसे अपने त्रिशूल पर धारण किया है, इसलिए प्रलय में भी इसका विनाश नहीं होता।

भौगोलिक दृष्टि से काशी उत्तर प्रदेश के पूर्वी भाग में गंगा नदी के अर्धचंद्राकार तट पर स्थित है। इसका नाम दो नदियों— वरुणा और असि—के बीच स्थित होने के कारण वाराणसी पड़ा।

वरुणा नदी का वर्णन वेदों में भी मिलता है। गंगा सभी जगहों पर अपने स्वभाववश उतर से दक्षिण बहती है लेकिन वाराणसी ही वो ऐसी जगह है जहां गंगा उत्तरवाहिनी होकर बहती है। इसे काशी का एक विलक्षण गुण माना गया है क्योंकि इसे धार्मिक दृष्टि से अत्यंत शुभ माना गया है। गंगा के किनारे बने लगभग चौरासी घाट इस नगर की सबसे बड़ी पहचान हैं। दशाश्वमेध घाट, मणिकर्णिका घाट, अस्सी घाट, पंचगंगा घाट, राजघाट और हरिश्चंद्र घाट न केवल धार्मिक आस्था के केंद्र हैं, बल्कि भारतीय संस्कृति की जीवंत धरोहर भी हैं। इन प्रत्येक घाटों की अपनी एक कहानी है, अपना एक इतिहास है। और इन सभी कहानियों का जीवंत प्रत्यक्षदर्शी कल कल बहती सुर सरिता गंगा है। इन्हीं घाटों के कारण ही वाराणसी को घाटों का शहर भी कहा जाता रहा है।

काशी का धार्मिक महत्व विश्वविख्यात है। यहाँ स्थित श्री काशी विश्वनाथ मंदिर बारह ज्योतिर्लिंगों में से एक है। प्रतिदिन लाखों श्रद्धालु भगवान विश्वनाथ के दर्शन के लिए आते हैं। मंदिर परिसर में विश्वनाथ मंदिर के प्रति भक्तों के हृदय में आदर, प्रेम, भक्ति और समर्पण देखने लायक होता है। मंदिर के शिखर पर स्वर्ण कलश इसकी दिव्यता को और अधिक बढ़ाते हैं। इसके अतिरिक्त अन्नपूर्णा मंदिर, कालभैरव मंदिर, संकटमोचन हनुमान मंदिर, दुर्गाकुंड, तुलसी मानस मंदिर तथा भारत माता मंदिर भी श्रद्धालुओं के प्रमुख आकर्षण हैं। यह नगर केवल हिंदुओं के लिए ही नहीं, बल्कि जैन, बौद्ध और सिख धर्म के अनुयायियों के लिए भी अत्यंत महत्वपूर्ण है।

काशी से कुछ ही दूरी पर स्थित सारनाथ वह स्थान है जहाँ भगवान बुद्ध ने ज्ञान प्राप्ति के बाद अपना प्रथम उपदेश दिया था, जिसे 'धर्मचक्र प्रवर्तन' कहा जाता है। यहीं से बौद्ध धर्म का विश्वव्यापी प्रचार प्रारंभ हुआ। अशोक द्वारा निर्मित सिंह स्तंभ आज भारत का राष्ट्रीय प्रतीक है। इस प्रकार काशी धार्मिक समन्वय और सहिष्णुता की अद्भुत उदाहरण प्रस्तुत करती है।

काशी सदियों से शिक्षा और ज्ञान की भूमि रही है। प्राचीन काल में यहाँ अनेक गुरुकुल और विद्या केंद्र स्थापित थे। आधुनिक समय में महामना पंडित मदन मोहन मालवीय द्वारा स्थापित काशी हिंदू विश्वविद्यालय (बीएचयू) विश्व के सबसे बड़े आवासीय विश्वविद्यालयों में गिना जाता है। यहाँ देश-विदेश से विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त करने आते हैं। इसके अतिरिक्त संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय भारतीय संस्कृति और संस्कृत अध्ययन का प्रमुख केंद्र है। काशी ने दर्शन, व्याकरण, न्याय, साहित्य और संगीत के क्षेत्र में असंख्य विद्वानों को जन्म दिया है।

साहित्य और संस्कृति के क्षेत्र में काशी का योगदान अतुलनीय है। संत कबीर, संत रविदास, गोस्वामी तुलसीदास, भारतेन्दु हरिश्चंद्र, जयशंकर प्रसाद, प्रेमचंद, आचार्य रामचंद्र शुक्ल और हजारी प्रसाद द्विवेदी जैसे महान साहित्यकारों का जीवन किसी न किसी रूप में काशी से जुड़ा रहा है। संत कबीर की साखियों में काशी का

वर्णन बार बार आता है। तुलसीदास ने यहीं रामचरितमानस की रचना का महत्वपूर्ण कार्य किया। भारतेन्दु हरिश्चंद्र ने आधुनिक हिंदी साहित्य को नई दिशा दी, जबकि जयशंकर प्रसाद ने हिंदी नाटक और कविता को नई ऊँचाइयाँ प्रदान कीं। हिंदी साहित्य के विख्यात आलोचक आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने भी इसी काशी नगर से कई कवियों कई लेखकों को संवारा, उनका रचनात्मक संवर्द्धन किया। हिंदी भाषा को नई दिशा और नई पहचान देने वाली काशी नागरी प्रचारिणी सभा इसी शहर की देन है। आज हिंदी भाषा हो या हिंदी साहित्य हो, काशी उसकी जन्मस्थली रही है।

संगीत के क्षेत्र में भी काशी का गौरव अनुपम है। बनारस घराना भारतीय शास्त्रीय संगीत और तबला वादन की प्रमुख परंपराओं में से एक है। भारत रत्न उस्ताद बिस्मिल्लाह खाँ की शहनाई ने काशी का नाम पूरे विश्व में अमर कर दिया। पंडित किशन महाराज, पंडित राजन-साजन मिश्र और गिरिजा देवी जैसे महान कलाकारों ने बनारस की संगीत परंपरा को वैश्विक पहचान दिलाई। यहाँ की गलियों में आज भी सुबह-शाम संगीत और भक्ति की स्वर लहरियाँ सुनाई देती हैं।

काशी की सांस्कृतिक पहचान केवल मंदिरों और घाटों तक सीमित नहीं है। यहाँ की बनारसी साड़ी विश्व प्रसिद्ध है। आज जब भी हमारे घरों में शादी-ब्याह आदि शुभ समारोह हों और तो बनारसी साड़ी की चर्चा न हो, ऐसा तो नहीं होता। महीन रेशमी वस्त्रों पर सोने-चाँदी के जरी कार्य की यह बनारसी कला भारतीय हस्तशिल्प की अमूल्य धरोहर है। बनारसी पान, लंगड़ा आम, ठंडई, कचौड़ी-जलेबी, चाट, मलाईयो और प्रसिद्ध बनारसी मिठाइयाँ यहाँ की खान-पान संस्कृति को विशेष बनाती हैं। यहाँ की संकरी गलियाँ, पुराने मकान, चौक बाजार और घाटों तक जाती पगडंडियाँ मानो सदियों पुरानी कहानियाँ सुनाती हैं।

काशी के पर्व और उत्सव इसकी सांस्कृतिक जीवंतता को और अधिक समृद्ध बनाते हैं। देव दीपावली का दृश्य विश्वभर में प्रसिद्ध है। कार्तिक पूर्णिमा की रात गंगा के घाट लाखों दीपों से जगमगा उठते हैं। गंगा महोत्सव, नाग नथैया, महाशिवरात्रि, श्रावण मास की कांवड़ यात्रा, अन्नकूट तथा विभिन्न धार्मिक आयोजनों में लाखों श्रद्धालु सम्मिलित होते हैं। प्रतिदिन होने वाली गंगा आरती श्रद्धा, संगीत, मंत्रोच्चार और दीपों की अनुपम छटा का अद्भुत संगम है, जिसे देखने देश-विदेश से पर्यटक आते हैं।

काशी के बारे में एक प्रसिद्ध मान्यता है कि यहाँ मृत्यु होने पर मोक्ष की प्राप्ति होती है। इसलिए अनेक वृद्ध लोग अपने जीवन के अंतिम समय में काशी आकर निवास करते हैं। मणिकर्णिका और हरिश्चंद्र घाट पर निरंतर जलती चिताएँ जीवन और मृत्यु के शाश्वत सत्य का स्मरण कराती हैं। यहाँ जीवन और मृत्यु विरोधी नहीं, बल्कि एक ही सत्य के दो आयाम माने जाते हैं। यहां जीवन ही नहीं बल्कि मृत्यु भी एक उत्सव है। पूरी दुनिया में ऐसा कोई

नगर नहीं है जहां मृत्यु का इंतजार इतने इत्मिनान और तैयारी के साथ की जाती है। यहां मृत्यु का भय नहीं है, इसे मोक्ष का अवसर माना जाता है।

आज का वाराणसी आधुनिक विकास की दिशा में भी निरंतर अग्रसर है। स्मार्ट सिटी परियोजना, काशी विश्वनाथ धाम कॉरिडोर, बेहतर सड़क और रेल संपर्क, आधुनिक हवाई अड्डा तथा गंगा नदी पर विकसित क्रूज पर्यटन ने इस नगर को नई पहचान दी है। धर्म, संस्कृति की अपार विरासत लिए हुए इस शहर में पर्यटन की असीम संभावनाएं हैं। इस कारण भारत सरकार हो या राज्य सरकार हो, जन सुविधाओं-सुरक्षा एवं सहजता के प्रति प्रयासरत है। विकास के कार्यों को प्रमुखता देने के बावजूद इसकी आत्मा आज भी अपनी प्राचीन परंपराओं, आध्यात्मिकता और सांस्कृतिक गरिमा में सुरक्षित है।

वर्तमान समय में काशी भारतीय संस्कृति और पर्यटन का वैश्विक केंद्र बन चुकी है। यहाँ प्रतिवर्ष लाखों विदेशी पर्यटक भारतीय दर्शन, योग, संगीत और आध्यात्मिक जीवन का अनुभव करने आते हैं। काशी विश्वनाथ धाम के निर्माण ने श्रद्धालुओं की

सुविधाओं में उल्लेखनीय वृद्धि की है तथा नगर की प्राचीन गरिमा को आधुनिक स्वरूप के साथ प्रस्तुत किया है।

अंततः कहा जा सकता है कि काशी भारत की आत्मा का मूर्त रूप है। यह नगर केवल ईंट-पत्थरों से बना शहर नहीं, बल्कि हजारों वर्षों की सभ्यता, संस्कृति, ज्ञान, भक्ति, दर्शन और मानवता की अमूल्य विरासत है। यहाँ गंगा केवल नदी नहीं, बल्कि जीवन का प्रवाह है; मंदिर केवल पूजा के स्थान नहीं, बल्कि आस्था के केंद्र हैं; घाट केवल सीढ़ियाँ नहीं, बल्कि इतिहास के जीवंत पृष्ठ हैं। काशी हमें सिखाती है कि परंपरा और आधुनिकता साथ-साथ चल सकती हैं, और आध्यात्मिकता ही जीवन को वास्तविक अर्थ प्रदान करती है। जब तक गंगा की धारा प्रवाहित रहेगी और विश्वनाथ की नगरी में श्रद्धा का दीप जलता रहेगा, तब तक वाराणसी भारत की सांस्कृतिक चेतना का शाश्वत आलोक बनी रहेगी। अटल, शाश्वत और अविनाशी, है हमारी काशी।

क्षेत्रीय प्रबंधक,  
वाराणसी

## कार्टून-कोना



प्रदीप कुमार राय  
सेवानिवृत्त मुख्य प्रबंधक



## हाथरस : ब्रज संस्कृति की मधुर पहचान



रूप कुमार

ब्रज की देहरी “हाथरस” एक पुराना औद्योगिक नगर है। यहां कपड़े व दालों के बहुत मिल थे। दाल मिल तो अभी भी हैं। पहले यह अलीगढ़ की एक तहसील था। पूर्व मुख्यमंत्री सुश्री मायावती जी ने इसे महामाया नगर नाम से अलग जिला बना दिया। बाद में आई दूसरी सरकार ने पुनः हाथरस कर दिया, मगर जिले वाला दर्जा कायम रहा।

हाथरस का नाम लेते ही अनायास काका हाथरसी का नाम याद आ जाता है। काका जी ने अपनी हास्य व्यंग्य कविताओं के माध्यम से हाथरस को अंतरराष्ट्रीय ख्याति दिलवाई। काका जी की प्रेरणा से सैकड़ों हास्य कवि हाथरस के आस-पास के क्षेत्र में हास्य कविता करने लगे। काका जी के समय में निर्भय हाथरसी, काका जी के शिष्य वीरेंद्र तरुण, संत हाथरसी, हीरा लाल सुमन नामचीन कवि रहे हैं। आजकल पदम सिंह अलबेला, मामा हाथरसी, बाबा देवी सिंह निडर, चमचा हाथरसी, सबरस मुड़सानी, घुमक्कड़ कवि गाफिल स्वामी जी, हास्य व्यंग्य लिख रहे हैं और मंचों पर पढ़ रहे हैं।

काका हाथरसी विनोद में कहते थे। पहले इस शहर का नाम हास्यरस ही था। अंग्रेज इसे हाट रस कहते थे और बाद में यह हाथरस हो गया। हाथरस में देशी घी की मंडी थी। यहां की सोहन-पपड़ी, बालू-शाही व रबड़ी तथा दही-बूरा भी बहुत प्रसिद्ध हैं। हींग के लिए भी यह शहर जाना जाता है।

सबसे बड़ी प्रसिद्धि की वजह यहां की लोक गायिकी ‘रसिया’ व लोक नाट्य ‘नौटंकी’ है। नौटंकी की दो शैलियाँ काफी प्रसिद्ध हैं, कानपुरी व हाथरसी। कानपुरी के लेखक निर्देशक कृष्ण पहलवान और हाथरसी के गुरु इंदरमन और नथाराम गौड़ माने जाते हैं। कानपुरी में संवाद व हाथरसी में संगीत प्रधान होता है। हाथरसी का प्रसिद्ध छंद चौबोला व प्रमुख वाद्य यंत्र नक्कारा है।

हाथरस के आम आदमी की प्रवृत्ति रसिक है। छोटी मोटी तुकबंदी हरेक आदमी कर लेता है। रसियाओं के दंगल हुआ करते थे जो रात-रात भर चला करते थे। चार पाँच रसिया अखाड़ों के दल आमंत्रण पर किसी एक शहर में खुला मंच बनाकर रसिया सुनाया करते थे। प्रत्येक अखाड़े में एक दो लोक कवि भी साथ में रहते थे और एक गायक मंडली होती थी जो रसिया को साज बाज के साथ प्रस्तुत करती थी। हाथरस, अलीगढ़, अतरौली, मथुरा, भरतपुर, राया, छाता आदि शहर रसिया दंगलों के गढ़ माने जाते

रहे हैं। आए दिन रसिया दंगल होते ही रहते थे। समय के अनुसार यह परंपरा धीरे-धीरे कम होती जा रही है। अब गाहे बजाहे कभी कभार ही यह दंगल होते हैं। हाथरस में आयोजित मेला देवछट (बलराम जयंती) पर अब भी हर वर्ष रसिया दंगल का आयोजन होता है। रसिया गायिकी के बारे में कहा जाता है कि शायद भरतपुर के आस पास से यह विधा निकली है। एक बार होली के अवसर पर सोनई गाँव के लल्लू और भजना भरतपुर आए थे। यहां इन्होंने रसिया गायिकी सुनी और फिर मुड़सान व हाथरस में बाकायदा रसिया अखाड़े बनाए और यह कहावत प्रचलित हो गई- ‘लल्लू भजना रसिया लाये, लाये जमुना पार ते’

रसिया गायिकी में खास बात यह होती है कि बिलकुल ज्वलंत मुद्दे पर एक मंडली ब्रज की लोक विधाओं और फिल्मी तर्जों पर तीन चार रसिया गाती है उसके बाद दूसरी मंडली उसका उत्तर देती है यानी कि कवि को तुरंत रसिया लिखना होता है। एक तरह से यह आशु कविता का एक जीवंत उदाहरण है जो विश्व में कहीं नहीं है। एक निर्णायक मंडली होती है जो सबेरे अपना निर्णय देती है।

हाथरस, अलीगढ़, मथुरा व अतरौली में काफी संख्या में अखाड़े थे। सबसे ज्यादा मशहूर अखाड़ा “खिच्चो आटे वाला” का रहा जो आज भी चल रहा है। अलीगढ़ का “गोटे वाला”, बीधा बाबू, काली पलटन भी अच्छे अखाड़े रहे हैं। सत्तो शर्मा, मनोज शर्मा, बी.के. मधुआ, नाथगोपाल व करण आदि अखाड़े अब भी चल रहे हैं। स्वर्गीय विजेंद्र शर्मा रसिया सम्राट व रसिया गायक बाबू लाल श्रेष्ठतम रसिया गायक के रूप में आज भी आदर्श माने जाते हैं। बाबू लाल जी का गाया एक बहुत ही लोकप्रिय रसिया है जो लोक विधा मल्हार के रूप में है। आकाशवाणी मथुरा वृंदावन से अभी भी श्रावण मास में हर वर्ष यह रसिया जरूर सुनाया जाता है-

बहुत दिना है गये भेजि देउ,

सावन सगुन मनाउँगी।

भैया आयो मोहि लिवाइवे,

में पीहर को जाउँगी

तीज सनूने हर कोई जाबे,

बड़ी पुरानी चल्ला है।

कुरता टोपी लै जाउँगी,  
मेरी भयो भवज के लल्ला है

द्वै रोटी डरवाइ खइयों,  
काऊ छोर जिठानी के।  
छोटो छोरा यों उठि बोलो,  
माँ हमहूँ चलिंगे नानी के

सो सखिअन के संग हिल मिल के में,  
गीत मल्हारें गाउँगी।  
भैया आयो मोहि लिवाइवे,  
मैं पीहर को जाउँगी

इस रसिया में एक विवाहित स्त्री की मनोभावनाओं का अत्यंत मार्मिक चित्रण किया गया है। सावन का महीना भारतीय लोकजीवन में प्रेम, हरियाली और उत्सव का प्रतीक माना जाता है। इस मौसम में विवाहित बेटियाँ अपने मायके जाने की इच्छा रखती हैं। गीत की नायिका अपने परिवार से कहती है कि उसे बहुत समय हो गया है मायके गए हुए। अब सावन आ गया है, इसलिए वह अपने भाई से आग्रह करती है कि वह उसे लेने आए। वह मायके जाकर सावन के शुभ त्योहार, झूले, गीत और परिवार के स्नेह का आनंद लेना चाहती है। इस रसिया में भाई-बहन का प्रेम, मायके के प्रति लगाव, सावन की सांस्कृतिक परंपरा तथा स्त्री की कोमल भावनाओं का सुंदर चित्रण मिलता है।

ब्रज क्षेत्र की होली विश्वप्रसिद्ध है और हाथरस की रसिया इस उत्सव का प्रमुख अंग मानी जाती है। होली के अवसर पर गाए जाने वाले रसिया गीतों में हास्य, श्रृंगार और उत्साह का अद्भुत मिश्रण मिलता है।

“आज बिरज में होरी रे रसिया” जैसे गीत पूरे ब्रज क्षेत्र में लोकप्रिय हैं। अधिकांश रसिया लोकगीतों के रचनाकार अज्ञात होते हैं क्योंकि ये लोक परंपरा में पीढ़ी दर पीढ़ी गाए जाते रहे हैं। सावन और होली के अवसर पर इनका विशेष महत्व होता है। इसी प्रकार के अन्य रसियाओं के उदाहरण हैं—

कारी बदरिया छाई रे,  
पपीहा बोले डारन में।  
भैया मोहे ले चलो अब,  
मन लागे ना ससुरारन में

झूला पड़े कदम की डारी,  
सखियाँ सब मिल आई हैं।  
पीहर की गलियन याद पड़ें,  
अखियन भर-भर आई हैं

नदिया किनारे सावन बरसे,  
भीज गई चुनरिया रे।  
भैया बिना सूना लागे,  
बाबुल की नगरीया रे

रसिया केवल गीत नहीं, बल्कि ब्रज संस्कृति की आत्मा है। हाथरस ने इस परंपरा को संरक्षित रखने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। आधुनिक समय में भी यहां के लोकगायक और कलाकार रसिया परंपरा को नई पीढ़ी तक पहुँचा रहे हैं। रसिया के माध्यम से लोकभाषा सुरक्षित रहती है, सांस्कृतिक परंपराएँ जीवित रहती हैं तथा समाज में प्रेम और उत्सव की भावना बनी रहती है, लेकिन आधुनिकता की चकाचौंध में नौटंकी, स्वांग, भगत, रसिया, दंगल व पिंगल शास्त्र पर आधारित जिकड़ी भजन, दंगल परंपराएँ धीरे-धीरे खत्म होती जा रही हैं।

अंत में कहा जा सकता है कि हाथरस केवल एक नगर नहीं, बल्कि ब्रज संस्कृति की जीवंत आत्मा है, ब्रज संस्कृति का गौरवशाली केंद्र है और इसकी रसिया परंपरा भारतीय लोकसंगीत की अमूल्य धरोहर है जो लोकजीवन की मधुरता, हास्य, प्रेम और सांस्कृतिक चेतना को आज भी जीवित रखे हुए है। ढोलक की थाप, ब्रजभाषा की मिठास और रसिया की अनोखी तान हाथरस को विशेष पहचान प्रदान करती है। आधुनिकता के इस दौर में भी यदि यह लोकधरोहर सुरक्षित है, तो इसका श्रेय उन लोक कलाकारों और रसिकों को जाता है जिन्होंने पीढ़ी दर पीढ़ी इसे संजोकर रखा। काका हाथरसी की हास्य-रसपूर्ण शैली की स्मृति में—

हाथरस की धरती बोले, रसिया इसकी शान।  
ढोलक नगाड़ों की धुन में, बसतौ ब्रज अभियान  
काका कहें सुनो भइया, मत इसको बिसराय।  
रसिया ब्रज की आत्मा है, इसे सदा अपनाय

प्रबंधक (राजभाषा)  
क्षेत्रीय कार्यालय, आगरा

## एकजुटता से ही जीत है, बंटवारे से हार....



डॉ. कौशलेन्द्र कुमार

**भा**रत की एकता, भारत की सबसे बड़ी पूंजी है। भारत के जिस राष्ट्रीय स्वरूप के प्रति हमारी चेतना स्पंदित होती है, एकता उसकी प्रमुख प्रहरी है। बड़ी से बड़ी विपदा के सामने जब 140 करोड़ जन एक होकर जूझने का साहस दिखाते हैं, तो अंततः भारत ही जीतता है। उर्दू के अज़ीम शायर अल्लामा इक़बाल जब 'तराना-ए-हिन्द' में लिखते हैं-

“कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी,  
सदियों रहा है दुश्मन दौर-ए-जहां हमारा”

तब “कुछ बात” से उनका अभिप्राय हमारी एकता से ही है। सभ्यता के विकास-क्रम में हम भारतीयों ने साथ-साथ रहने के महत्व को समझा और तदन्तर समाज, राष्ट्र तथा वसुधैव कुटुम्बकम् के सिद्धांत को प्रतिपादित किया। जहां तक राष्ट्र की बात है- भारत की संस्कृति में एकता के सूत्र सदैव से ही मौजूद रहे हैं। राष्ट्रकवि रामधारी सिंह ‘दिनकर’ ने ‘संस्कृति के चार अध्याय’ नामक प्रसिद्ध पुस्तक में इस ओर संकेत करते हुए भारत को प्राचीन काल से ही राष्ट्रीय एकता में बंधे होने का संकेत किया है। यह सच भी है क्योंकि हमारे आख्यानो में भी सदैव से उत्तर-दक्षिण दिशाओं का, अभिजात्य और देशज समाज का, जंगल में रहने वाले लोक-समाज तथा नगरीय समाज का सामंजस्य दिखलाया गया है। इन भिन्न भिन्न समाज एवं संस्कृतियों एक साथ लाकर, उनको ‘एक लक्ष्य-एक चेतना’ के रूप में संगठित करने का प्रयास दिखता है।

बहरहाल, यह सर्वविदित है कि एकता में बल होता है। इसे तस्दीक करती, पंचतंत्र की एक लोकप्रिय कहानी ‘एकता का बल’ है। इस कहानी में कबूतरों का एक झुण्ड जाल में फंस जाता है, परंतु आपसी सामंजस्य एवं सुझबुझ से सभी कबूतर मिलकर, उस फंसाने वाली जाल को ही ले उड़ चलते हैं। वहीं दूसरी तरफ हमारे इतिहास की ही एक घटना प्लासी का युद्ध भी है, जो आपसी फूट से होने वाली ऐतिहासिक-हानि का कष्टप्रद उदाहरण है। इसलिए, हम जब तक एक हैं, तब तक सशक्त हैं और ज्योंहि हमारी एकता टूटती है, हम अशक्त हो जाते हैं। हम कह सकते हैं कि जब हम एक होते हैं तो हम निखर जाते हैं और जब हम टूटते हैं तब हम बिखर जाते हैं। भारत की एकता के खतरे भी बहुत हैं, मसलन-प्रांतवाद, भाषायी-विवाद, संप्रदायवाद, जातिवाद। भारत एक बहुभाषीय, बहु-सांस्कृतिक देश है। संविधान ने भारत के इसी विविधता को संतुलित कर, भारत को विश्व में अद्वितीय देश बनाया। यहां भाषा, धर्म तथा संस्कृति के आधार पर किसी के साथ भेद-भाव नहीं किया जाता। दुर्भाग्यवश, हिन्दुस्तान के पड़ोस



में कुछ देश ऐसे भी हैं, जो हिन्दुस्तान की सामाजिक समरसता, सांप्रदायिक-सद्भाव एवं राष्ट्रीयता के भाव पर अनवरत संघात कर, इसकी एकता एवं अखंडता को खंडित करने का प्रयास कर रहे हैं। इतिहास साक्षी रहा है जब भी हम एक रहे हैं, देश पर आने वाला भीषण से भीषण संकट भी हम सफलतापूर्वक झेल लेते हैं। हमारी आंतरिक मजबूती ही हमारे भविष्य का आधार है।

भारत के एकीकरण में भाषा-संस्कृति की दृष्टि से कुछ विचार किया जा सकता है। कई चिंतकों खासकर पश्चिम के चिंतकों ने बारंबार यह दिखलाने का प्रयास किया है कि अंग्रेजों के भारत पर शासन करने से पूर्व भारत एक राष्ट्र के रूप में कभी नहीं रहा। वे मानते हैं कि क्योंकि राष्ट्र की अवधारणा एक आधुनिक अवधारणा है और भारत में आधुनिकता का अरूणोदय अंग्रेजों के द्वारा ही संभव हो पाया इसलिए भारत को एक देश बनाने का श्रेय अंग्रेजों को मिलना चाहिए। यह एक आम धारणा सी बन भी गई थी। परंतु कई विद्वानों ने खासकर डॉ. रामविलास शर्मा और राष्ट्र कवि रामधारी सिंह दिनकर ने तर्कों व तथ्यों के साथ इस मान्यता को खंडित किया और समग्र भारत के सांस्कृतिक एकता की प्राचीनता को स्थापित किया। डॉ. रामविलास शर्मा ने प्रमुखता से यह स्थापित किया कि भारत सदैव से एक ईकाई के रूप में रहा है। भारत के गांव सभी प्रकार की जरूरतों को पूरा करने में सक्षम थी। सभी भिन्न भिन्न प्रकार के लोग-व्यवसायी एक दूसरे

की जरूरतों को पूरा करते थे और गांव को स्वावलंबी बनाते थे। क्योंकि सभी समाज एक दूसरे के पूरक थे इसलिए सभी को एक-दूसरे के महत्व का ज्ञान था और इसलिए एक-दूसरे के प्रति सम्मान भी था। परस्पर सम्मान की यह भावना भारतीय समाज को एक रखती थी। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने भी हिंद स्वराज में इस विषय पर अपनी राय रखी है और कहा है कि भारत पुरातन काल से ही एक राष्ट्र रहा है। अतः इन चिंतकों ने भारत के इतिहास को, भारत की एकता और अखंडता को सिर्फ राजनैतिक घटनाक्रम के चश्मे से नहीं देखा बल्कि जनता की चितवृत्ति को परख कर देखा।

भारत जब आजादी के लिए संघर्ष कर रहा था तब कई प्रकार के पाश्चात्य चिंतक ऐसी अवधारणा प्रस्तुत कर रहे थे कि भारतीय कभी एक साथ नहीं रह सकते तथा राजे-राजवड़े-प्रांतों-ऊंच-नीच-बोलियों में विभाजित यह समाज कभी एक साथ नहीं रह सकता और जल्द ही एक राष्ट्र के रूप में अस्थिर हो विघटित हो जाएगा।

आजादी मिलने के पश्चात् नीति निर्धारकों ने भाषायी एकता और भाषायी विविधता के बारे में गंभीरता से विचार किया। आरंभ में देश के प्रांतों एवं राज्यों के निर्माण में भाषायी एकता को तरजीह न देकर प्रशासनिक आवश्यकता पर जोर दिया गया। लेकिन धीरे धीरे भाषा को अस्मिता के प्रश्न से जोड़ दिया गया एवं देश की राजनीति इसके इर्द-गिर्द घूमने लगी। तदंतर विवाद और आंदोलनों के कारण प्रांतों तथा राज्यों का गठन एवं पुनर्गठन भाषा के आधार पर किया जाने लगा। आज देश में कई राज्यों का गठन भाषा के आधार पर ही हुआ है। परंतु यहां हमें यह समझने की जरूरत है कि इन तमाम राज्यों की सीमाएं किसी अन्य राज्य के दूसरे भाषी लोगों को अपने यहां आने और बसने से मना नहीं कर सकते। यहां स्पष्ट है कि भाषायी विविधता राष्ट्रीय अखंडता में कहीं भी बाधक नहीं हो सकता। पूरे देश में प्रत्येक प्रांत के लोग कहीं भी बिना किसी रोक टोक के आ-जा सकते हैं, जीविका का साधन अपना सकते हैं, आवास बना सकते हैं और इसी से भाषायी विविधता में एकता का सूत्र निहित है। ऐसा विधान करना नितांत आवश्यक भी है। भारत राज्यों का संघ है, अतः केन्द्रीय रूप से भारत की पूरी भूमि समस्त नागरिकों के लिए समान अधिकार एवं समान अवसर उपलब्ध कराती है। भाषा के नजरिए से कहीं भी किसी भी प्रकार का कोई भेदभाव नहीं है।

भारत के संविधान को ध्यान से देखने पर यह सहज ही प्रतीत होता है कि संविधान में सभी वर्गों का, संप्रदायों का यथोचित ख्याल रखा गया है। जहां एक तरफ मौलिक अधिकार सभी नागरिकों के लिए हैं तो वहीं वंचित वर्गों के लिए विशेष उपबंध किए गए हैं। देश के गौरव प्रतीक, इतिहास के प्रति सम्मान भाव रखना, एक दूसरे के प्रति बंधुता रखना इत्यादि जैसे मूल कर्तव्य नागरिकों के लिए हैं वहीं लोकतांत्रिक समाजवादी कार्य करने की सलाह नीति निर्देशक तत्वों के माध्यम से सरकारों के लिए हैं। अतः संविधान ने सरकार और नागरिकों दोनों के लिए कुछ कर्तव्य निर्देशित किए हैं। जहां एक तरफ सरकार को प्रशासनिक तौर पर कई शक्तियां प्रदान की गई हैं वहीं नीति निर्देशक तत्वों

के माध्यम से कई महत्वपूर्ण दायित्व भी सरकार को दिए गए हैं जोकि एक कल्याणकारी राज्य की अवधारणा को पुष्ट करते हैं। आम नागरिकों को जहां मूल अधिकारों की गारंटी दी गई है वहीं उन्हें मूल कर्तव्यों का पाठ भी पढ़ाया गया है। अतः सरकार और नागरिकों के मध्य अधिकार एवं कर्तव्यों का ऐसा ताना बाना बुना गया है जिससे देश में आपसी विश्वास और प्रशासनिक सहजता का माहौल बना रहे। यहां कहने का तात्पर्य यह है कि समाज को बिखरने से बचाने के लिए, देश यहां कहने का तात्पर्य यह है कि समाज को बिखरने से बचाने के लिए, देश की एकता और अखंडता को अक्षुण्ण रखने के लिए संविधान ने मार्ग दिखलाया है। हमें भी इन्हीं मार्गों पर नियम एवं अनुशासन से चलना है।

लेकिन यहां यह उल्लेख करना भी आवश्यक है कि चुनौतियां भी कम नहीं हैं। भारत के दुश्मन कभी भी भारत को शांति से प्रगति करने देना नहीं चाहते। कश्मीर एवं उत्तर-पूर्व में होने वाली उग्रवादी घटनाएं हों, देश में भाषा के नाम पर अथवा जाति-धर्म के नाम पर उन्मादी और विभाजनकारी संघर्ष हो, इसने कई मर्तबा हमारी अखंडता को गंभीर चुनौती दी है और सर्वाधिक खेदजनक बात यह है कि देश के भीतर भी कुछ लोग अपने संकीर्ण स्वार्थ के लिए इन मसलों पर राष्ट्र के मूल स्वभाव के साथ खड़े नहीं हो पाते। यहां हमारी एकता कमजोर पड़ती दिखती है। हमें यह भली भांति समझ लेनी चाहिए कि कोई भी मत, विचारधारा, राष्ट्र से बढ़कर नहीं होता। “नेशन फर्स्ट” के पार्श्व में क्रियाशील चिंतन की जरूरत को समझना होगा, उसे आत्मसात् करना होगा। ‘लौह पुरुष’ सरदार वल्लभभाई पटेल ने शक्ति एवं संवाद के स्पृहणीय कौशल से ‘एक भारत-सशक्त भारत’ की नींव रखी है। आजादी के पश्चात् हमने नियम कायदे वैसे ही बनाए जिससे राष्ट्र की एकता, अखंडता और मजबूत हो सके। कुछ विषयों में निर्णय का अधिकार विशुद्ध रूप से केन्द्र सरकार के पास है, कुछ विषयों में राज्यों के पास और कुछ विषयों में दोनों के पास। प्रशासनिक रूप से यह ढांचा देश की एकता के लिए बेहद आवश्यक है। इसमें राज्यों को निर्णय लेने की छूट तो है परंतु उनकी निगरानी की शक्ति केन्द्र सरकार की है। केन्द्र सरकार शक्तिशाली तो है परंतु सामान्य तौर पर राज्यों के कार्यों में हस्तक्षेप नहीं कर सकती। कहने का तात्पर्य है कि भारत में केन्द्र सरकार और राज्य सरकार के मध्य शक्तियों के संतुलन भारत के भविष्य के लिए बेहद आवश्यक है। संविधान में निहित प्रावधानों को ध्यान से देखे तो पाएंगे कि यह स्पष्ट संकेत है कि राज्य सरकारें और केन्द्र सरकार मिलकर कार्य करें, उनके मध्य शक्तियों का टकराव न हो बल्कि संतुलन हो।

अतः एक होकर भारत की प्रत्येक प्रशासनिक ईकाई और जनता कार्य करे तो आने वाला कल भारत का होगा। आज जरूरत है, ‘एक भारत-सशक्त भारत’ के महत्व को दर्शाते हुए भारत की एकता को अक्षुण्ण रखना क्योंकि एकजुटता से ही जीत है, बंटवारे से हार।

वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा),  
क्षेत्रीय कार्यालय वाराणसी

மூல தமிழ் லேख

## ஆளுமை உருவாக்கத்தில் புத்தகங்களின் பங்கு



பி சண்முகம்

அடிப்படையில், புத்தகம் என்றால் என்ன? பரவலாக அறியப்பட்ட, செல்வாக்கு மிக்க மற்றும் நம்பகமான இலக்கியப் படைப்பு ஒன்று அச்ச வடிவில் கிடைக்குமானால், அதுவே புத்தகம் என்று அழைக்கப்படுகிறது. பொதுவாக, உயரிய இலக்கியத் தரத்தை எட்டும் இத்தகைய படைப்புகள், சிறந்த நூல்கள் அல்லது கவிதைப் படைப்பின் உள்ளதப் படைப்புகள் (masterpieces) என்று போற்றப்படுகின்றன. புத்தகங்கள் வாயிலாகப் பெறப்படும் பரந்த சிந்தனைகளும், பொருத்தமான உதாரணங்கள் மூலம் விளக்கப்படும் அறநெறி சார்ந்த நடைமுறைகளும் ஒருவரின் ஆளுமையை வடிவமைக்கும் கூறுகளாகத் திகழ்கின்றன; பிற ஊடக வடிவங்களில் இவற்றை அரிதாகவே காண முடியும். இவற்றின் கூட்டு விளைவு, மனித உணர்வுகளையும் நடத்தையையும் தனித்துவமான வழிகளில் பாதிக்கிறது.

இப்போது, புத்தகங்கள் ஒரு தனிநபரின் ஆளுமையை எவ்வாறு வடிவமைக்கின்றன என்பதை நாம் ஆராய்வோம்:

**அறிவுசார் கட்டமைப்பு மற்றும் உலகப் பார்வை:** புத்தகங்கள் வாழ்க்கை, தத்துவச் சிந்தனைகள் மற்றும் விழுமியக் கோட்பாடுகள் ஆகியவற்றை வழங்குகின்றன... வாசகர்கள் ஏற்றுக்கொண்டு, மனதளவில் மதிப்பிட்டு, தங்கள் சொந்தக் கண்ணோட்டங்களில் இணைத்துக்கொள்ளக்கூடிய கருத்துகளை அவை முன்வைக்கின்றன. மனிதநேயம் அல்லது குடிமைக்கடமைகள் போன்ற குறிப்பிட்ட கோட்பாடுகளுடனான தொடர்புசியான அறிமுகம், முன்னுரிமைகளின் அடிப்படையில் முடிவெடுக்கும் ஒருவரின் திறனை மாற்றியமைக்கிறது. மேம்பட்ட கற்பனைத்திறன் மற்றும் பச்சாதாபம்: புனைக்கதை மற்றும் புனைவல்லாத கதைகளைப் படிக்கும் வாசகர்கள், மற்றவர்களின் சூழ்நிலைகளை நன்கு புரிந்துகொள்ளும் திறனைப் பெறுகிறார்கள். வெவ்வேறு கண்ணோட்டங்களை மீண்டும் மீண்டும் ஏற்றுக்கொள்வது பச்சாதாபத்தை வளர்க்கிறது, தப்பெண்ணங்களைக் குறைக்கிறது, மற்றும் அறநெறிச் சிந்தனையை ஊக்குவிக்கிறது—இதனால் நீடி வாழ்க்கையில் மற்றவர்களுடன் உறவாடுவது எளிதாகிறது.

**உதவேகத்தின் மூலங்கள் (முன்மாதிரிகள்) மற்றும் பழக்கவழக்கங்கள்:** வாழ்க்கை வரலாறுகள், சுயசரிதைகள் மற்றும் கதாபாத்திரங்களை மையமாக்கக் கொண்ட புனைக்கதைகள் ஆகியவை உறுதியான முன்மாதிரிகளையும் நடைமுறைச் செயல்வடிவங்களையும் வழங்குகின்றன. கதாபாத்திரங்கள் சவால்களை எதிர்கொள்ளும் விதத்தைக் கவனிப்பது, தைரியம், நேர்மை மற்றும் பணிவு ஆகியவற்றிற்கான ஒரு வழிகாட்டியாக அமைகிறது.

**அறிவார்ந்த பயிற்சி மற்றும் சுய ஒழுங்குமுறை:** தொடர்ச்சியான வாசிப்பு, கவனம், பொறுமை மற்றும் உடனடி இன்பத்தைத் தள்ளிப்போடும் திறன் போன்ற முக்கிய நிர்வாகச் செயல்பாடுகளை வளர்க்கிறது. இவை நெறிசார்ந்த நடத்தைக்கும், நீண்டகாலத் திட்டங்களில் விடாமுயற்சிக்கும் துணைபுரிகின்றன. சீரான வாசிப்பு, உடனடி இன்பத்திற்கான வேட்கையைக் கட்டுப்படுத்துவதோடு, ஒருமுகத்தன்மையையும் பொறுமையையும் மேம்படுத்துகிறது.

**சுய-சிந்தனை மற்றும் அடையாளத்தை வடிவமைக்கும் செயல்பாடு:** வாசிப்பு ஒரு உள்-உரையாடலைத் தூண்டுகிறது. புத்தகங்கள் குறித்துக் குறிப்பேட்டில் எழுதுதல், உரைப்பகுதிகளில் குறிப்புகளை இடுதல் அல்லது ஆசிரியர்களின் கருத்துகள் குறித்து மனதிற்குள் விவாதித்தல் போன்ற செயல்பாடுகள், ஆழமான சுய-ஆய்வு, விழுமியங்களைத் தெளிவுபடுத்துதல் மற்றும் ஒருவரின் சொந்த அடையாளத்தைப் பற்றிய உண்மையான புரிதல் ஆகியவற்றை ஊக்குவிக்கின்றன.

**பேச்சாற்றல் மற்றும் உரையாடல் திறன்கள்:** புத்தகங்கள் மீதான ஆர்வம்—கூட்டு வாசிப்பு மற்றும் உரையாடல்களுடன் இணையும்போது—சமூகத் தாக்கம் மற்றும் பொறுப்புணர்வு உள்ளிட்ட தலைமைத்துவப் பண்புகளை வளர்க்கிறது.

**உணர்ச்சிகளைக் கையாளுதல்:** இலக்கிய வாசிப்பு ஒரு பாதுகாப்பான சூழலில் துயரம், தோல்வி மற்றும் தார்மீகச் சிக்கல்களை எதிர்கொள்ளும் வாய்ப்பை அளிக்கிறது. இது அத்தகைய அனுபவங்கள் சார்ந்த உணர்ச்சிகளைப் புரிந்துகொள்ளவும், உணர்வுரீதியான மன உறுதியுடன் திகழவும் உதவுகிறது.

கதாபாத்திர உருவாக்கத்தில் அதிகபட்ச தாக்கத்தை ஏற்படுத்தும் வாசிப்பு முறைகள்.

பாரதத்தின் தேசத் தந்தை என புகழப்படும் மகாத்மா காந்தி ஒரு முன்மாதிரியான ஆளுமையாகத் திகழ்கிறார். பகவத் கீதையை ஒதுதல், 'ஷ்ரவண்-பித்ரி-பக்தி' (பெற்றோர் மீதான பக்தி) எனும் நூலை வாசித்தல் மற்றும் எல்லாவற்றிற்கும் மேலாக 'ஹரிச்சந்திரா' நாடகத்தைக் காணுதல் ஆகியவற்றின் மூலம் உண்மை மற்றும் அகிம்சை மீதான தனது நம்பிக்கை வளர்க்கப்பட்டதாக அவர் தனது சுயசரிதையில் குறிப்பிட்டுள்ளார். இது போன்ற பிற உதாரணங்கள் கீழே கொடுக்கப்பட்டுள்ளன. இதனாலேயே காந்திஜி உலகம் முழுவதும் அகிம்சைப் போராணியாகப் போற்றப்படுகிறார்.

போர்க்காலத் தலைவர்களின் ஏராளமான வாழ்க்கை வரலாறுகளைப் படித்த ஒரு பெருநிறுவன மேலாளர், சவாலான காலங்களில் தெளிவான தினசரி வழக்கத்தைக் கடைப்பிடித்தாலும், அழுத்தத்தின் கீழ் அமைதியாக இருந்தாலும் பயனடைந்தார்.

பல்வேறு கலாச்சாரங்களைச் சேர்ந்த நாவல்களைப் படித்த ஒரு இளைஞர், ஒரு மனிதவன நிபுணராகத் தனக்கு அதிக பச்சாதாபம் இருந்ததாகவும், ஆட்சேர்ப்புச் செயல்பாட்டில் மாற்றங்களைக் கொண்டு வந்ததாகவும் பகிர்ந்துகொண்டார். போர்க்காலத் தலைவர்களின் ஏராளமான வாழ்க்கை வரலாறுகளைப் படித்த ஒரு பெருநிறுவன மேலாளர், சவாலான காலங்களில் தெளிவான தினசரி வழக்கத்தைக் கடைப்பிடித்தாலும், அழுத்தத்தின் கீழ் அமைதியாக இருந்தாலும் பயனடைந்தார். புத்தகங்கள் புதிய கதவுகளையும் பாதைகளையும் திறந்து வைப்பதோடு, சிந்தனையில் தெளிவையும் கண்ணோட்டத்தில் துல்லியத்தையும் கொண்டுவரும் சிறப்பான ஆற்றலைக் கொண்டுள்ளன. வாசிப்பு மொழித்திறனை மேம்படுத்திச் சொற்களஞ்சியத்தை விரிவுபடுத்துவதுடன், கல்விசார் வெற்றியை அடைவதற்குத் தேவையான ஆழமான புரிதலையும் வளர்க்கிறது. மேலும், வாசிப்புப் பழக்கமானது கற்பனைத் திறனைத் தூண்டி, விமர்சன ரீதியான சிந்தனையை கூர்மைப்படுத்தி, பல்வேறுபட்ட அனுபவங்களின் வாயிலாகப் பிறர் மீதான புரிதலையும் அனுதாபத்தையும் வளர்க்கிறது. மேலும், தனிப்பட்ட வளர்ச்சிக்கு நூல்கள் ஒரு முக்கிய கருவியாகத் திகழ்கின்றன; அவை ஆர்வத்தைத் தூண்டுவதோடு, வாழ்நாள் முழுவதும் கற்கும் மீதான ஈடுபாட்டையும் வளர்க்கின்றன. ஒருவரின் சொந்தக் கண்ணோட்டங்களை வலுப்படுத்தும் பல்வேறு தலைப்புகளையும் அவை உள்ளடக்கியுள்ளன. கருக்கமாகச் சொன்னால், வேகமாக மாறிவரும் இவ்வுலகில், உடனடிச் சவால்களை எதிர்கொள்ளத் தேவையான தகவல்களை வழங்குவதோடு மட்டுமல்லாமல், கிடைக்கும் வாய்ப்புகளைச் சிறப்பாகப் பயன்படுத்திக்கொள்வதற்கான ஆழமான புரிதலையும் நூல்கள் அளிக்கின்றன.

வாசிப்புப் பழக்கத்தை வளர்த்துக்கொள்வது, குறிப்பாக மாணவர்களுக்கு, எண்ணற்ற நன்மைகளை வழங்குகிறது. ஏனெனில் அது அவர்களை வகுப்பறைப் பாடத்திட்டத்தின் எல்லைகளுக்கு அப்பால் அழைத்துச் செல்கிறது. பல்வேறு இலக்கிய நடைகளிலும் வடிவங்களிலும் தங்களை ஈடுபடுத்திக்கொள்வது, மாணவர்கள் வெவ்வேறு கலாச்சாரங்களையும் கண்ணோட்டங்களையும்

புரிந்துகொள்ள உதவுகிறது. புத்தகங்களை வாசிப்பது ஆளுமை வளர்ச்சிக்கு எவ்வாறு பங்களிக்கிறது என்பதை பின்வரும் குறிப்புகள் விளக்குகின்றன:

மொழி மற்றும் சொல்லகராதித் திறன்கள் மேம்படுகின்றன.

புத்தகங்களை வாசிப்பது ஒருவரின் சொல்லகராதியை விரிவுபடுத்துவதோடு, மொழிப் புரிதலையும் மேம்படுத்துகிறது.

புதிய சொற்களை-அவற்றின் அர்த்தங்களுடன்-பல்வேறு சூழல்களில் அடையாளம் காணவும், அவற்றின் சரியான பயன்பாட்டைப் புரிந்து கொள்ளவும், தனிநபர்கள் தங்கள் எண்ணங்களை இன்னும் தெளிவாகவும் துல்லியமாகவும் வெளிப்படுத்த உதவுகிறது.

வாசிப்பு இலக்கணம் மற்றும் தொடரியல் பற்றிய ஒருவரின் புரிதலை மேம்படுத்துகிறது. இதனால் எழுதுவது மிகவும் பயனுள்ளதாக இருக்கும்.

இறுதியில், புத்தகங்களைப் படிப்பது ஒட்டுமொத்த தகவல் தொடர்புத் திறனை மேம்படுத்துகிறது மற்றும் உண்மையான அறிவைப் பெறுவதை ஊக்குவிக்கிறது. நல்ல வாசிப்புப் பழக்கம் உண்மையான அறிவை வளர்க்கும் அதே வேளையில் விமர்சன சிந்தனை மற்றும் சிக்கலைத் தீர்க்கும் திறன்களை வளர்க்கிறது.

துன்பங்களை எதிர்கொள்ளும் போது ஒருவரின் மீள்தன்மை மற்றும் மாற்றியமைக்கும் திறனை அவை மேம்படுத்துகின்றன.

ஒட்டுமொத்தமாக, வாசிப்புப் பழக்கம் அறிவாற்றல் திறன்களைக் கூர்மையாக்கும் மற்றும் அதிகரிக்கும் மனப் பயிற்சியாகச் செயல்படுகிறது.

உணர்வு மற்றும் சமூக வளர்ச்சியை புத்தகங்கள் எவ்வாறு பாதிக்கின்றன என்பதை இப்போது பாப்போம்.

புத்தகங்கள், பலதரப்பட்ட கதைகளின் மூலம் மனித வாழ்வின் அடிப்படைக் கூறுகளை வெளிச்சம் போட்டுக் காட்டி, உணர்ச்சி மற்றும் சமூக வளர்ச்சியை வளர்ப்பதில் முக்கியப் பங்கு வகிக்கின்றன. அவை தனிநபர்கள் தங்களின் தனிப்பட்ட உணர்ச்சிகளையும் பல்வேறு கருத்துக்களையும் புரிந்துகொள்ள உதவுவதோடு, பச்சாதாப உணர்வையும் வளர்க்கின்றன.

புத்தகங்களில் சித்தரிக்கப்பட்டுள்ள களங்கள் மற்றும் சூழல்களின் மூலம், ஒருவர் எளிதாகப் பச்சாதாப உணர்வை வளர்த்துக்கொண்டு, கதைப்புத்தகங்கள் வாயிலாக, அடிப்படை மனித நடத்தையின் நுணுக்கங்கள், சிக்கலான தார்மீக இக்கட்டான சூழல்கள் மற்றும் மக்கள் எதிர்கொள்ளும் உணர்வுப்பூர்வமான சவால்கள் ஆகியவற்றைப் புரிந்துகொண்டு, அவை குறித்த ஆழமான பார்வையைப் பெற முடியும்.

புத்தகங்களை வாசிப்பது சுய-பரிசீலனை செய்யும் திறனை வளர்க்கிறது.

புத்தகங்கள் மற்றும் கதைகளில் வரும் கதாபாத்திரங்களின் பண்புகள் வாசகர்களுக்கு உத்வேகம் அளிப்பதோடு, சுய-பரிசீலனையை ஊக்குவித்து, பல்வேறு சவால்களைக் கையாள்வதற்கும் உதவுகின்றன. கதாபாத்திரங்களுடன் ஆழமான பிணைப்பை ஏற்படுத்திக்கொள்ள முடியும்.

புத்தகங்களில் சித்தரிக்கப்பட்ட கதாபாத்திரங்கள் தரும் உத்வேகம் மற்றும் அவற்றின் விளைவுகள் குறித்துச் சிந்திப்பதன் மூலம், வாசகர்கள் தங்கள் சொந்த வாழ்க்கையை எளிதாக மதிப்பிடவும் சீர்தூக்கிப் பார்க்கவும் முடியும்.

புத்தகங்கள் சுய-அறிதல் உணர்வை வளர்ப்பதோடு, இவ்வுலகில் ஒருவரின் இடம் மற்றும் நோக்கம் குறித்த புரிதலையும் அதிக தன்னம்பிக்கையையும் ஏற்படுத்துகின்றன.

## கல்வியார் சாதனை.

கவனத்தைச் சிதறடிக்கும் பல விஷயங்கள் நிறைந்த இன்றைய வேகமான உலகில், புத்தகங்களை வாசிப்பது கவனத்தைக் குவிக்கும் திறனை மேம்படுத்துகிறது. குறிப்பாக மாணவர்களுக்கு, தங்களுக்கு ஒதுக்கப்பட்ட பணிகளில் நீண்ட நேரம் கவனத்தைச் செலுத்த புத்தகங்கள் உதவுகின்றன.

புத்தகங்கள், கதைசொல்லல் மூலம் அறநெறிகளை வளர்த்து, அடிப்படை விழுமியங்களை ஊட்டி, தார்மீக முடிவெடுக்கும் திறனை மேம்படுத்துவதன் வழியாக, குணநலன்களை உருவாக்குவதில் முக்கியப் பங்கு வகிக்கின்றன. அவை விமர்சன சிந்தனையை ஊக்குவித்து, உணர்ச்சிச் சார்ந்த நுண்ணறிவை வளர்த்து, வாசகர்களுக்குப் பலதரப்பட்ட கண்ணோட்டங்களை வழங்குவதன் மூலம் ஆளுமையை வடிவமைக்கின்றன—இவை அனைத்தும் தார்மீக வளர்ச்சிக்கு நேரடியாகத் துணைபுரிகின்றன.

குணநலன்களை உருவாக்குவதில் புத்தகங்களின் முக்கியப் பங்கு:

**நன்னெறிகளை வளர்த்தல்:** புத்தகங்கள் அறநெறி வழிகாட்டிகளாகச் செயல்படுகின்றன, அவை தைரியம், நேர்மை மற்றும் கருணை ஆகியவற்றை எடுத்துக்காட்டும் கதைகளை வழங்குவதன் மூலம், வாசகர்கள் இந்த நற்பண்புகளை வளர்த்துக்கொள்ள உதவுகின்றன.

**விமர்சன சிந்தனையை ஊக்குவித்தல்:** பகுப்பாய்வு ரீதியான வாசிப்பு, சூழ்நிலைகளைப் புரிந்துகொள்ளவும், பகுத்தறியும் திறனைச் செம்மைப்படுத்தவும், சிந்தனைமிக்க, பரந்த மனப்பான்மையை வளர்த்துக்கொள்ளவும் உதவுகிறது.

**உத்வேகத்தின் ஆதாரங்களை வழங்குதல்:** வாழ்க்கை வரலாறுகள், சுயசரிதைகள் மற்றும் இலக்கியங்கள், வலுவான நன்னெறிக் குணங்களைக் கொண்ட கதாபாத்திரங்களை வாசகர்களுக்கு அறிமுகப்படுத்துவதோடு, பின்பற்றுவதற்கான நேர்மறையான எடுத்துக்காட்டுகளையும் வழங்குகின்றன.

**கற்பனைத்திறனை வளர்த்தல்:** இலக்கியம், பல்வேறு சூழ்நிலைகளையும் விளைவுகளையும் மனக்கண்ணில் காண வாசகர்களை ஊக்குவிப்பதன் மூலம், அறநெறி சார்ந்த பகுத்தறிவை மேம்படுத்துகிறது.

**முடிவுரை:** புத்தகங்கள் ஆளுமை வளர்ச்சிக்கு சக்திவாய்ந்த கருவிகளாகும். ஏனெனில், அவை மனதைப் பயிற்றுவிக்கின்றன, மனித நேயத்தை வளர்த்து இச்சமுதாயத்திற்கு நல்ல முன்மாதிரிகளை வழங்குகின்றன, மற்றும் நடைமுறை ஞானத்தை அளிக்கின்றன. அவற்றின் தாக்கம், புத்தகங்களின் தேர்வு, தீவிர ஈடுபாடு, சுயசிந்தனை மூலம் பெறப்படுகின்ற புரிதல்களை செயல் வடிவமாக்குவது ஆகியவற்றைப் பொறுத்தே அமைகிறது.

हम वो हैं, जो हमें हमारी सोच ने बनाया है इसलिए इस बात का ध्यान रखिए कि आप क्या सोचते हैं। शब्द गौण हैं, विचार रहते हैं, वे दूर तक यात्रा करते हैं।

—स्वामी विवेकानंद

## चरित्र निर्माण में पुस्तकों की भूमिका

(मूल तमिल लेख का हिंदी अनुवाद)



पी. एस. वी.

**वा**स्तव में पुस्तक माने क्या है? प्रचलित प्रभावित और जो प्रमाणित साहित्यिक सामाग्री मुद्रित रूप में उपलब्ध होती है वही पुस्तक या किताब कहलाती है। आम तौर पर साहित्यिक स्तर पर पहुंचने वाली ऐसा जो भी पुरस्कार रूप में उपलब्ध है। उसे महान ग्रंथ या काव्य का नामकरण दिया जाता है।

पुस्तकों द्वारा प्राप्त विस्तारणीय विचार, उचित नमूनाओं सहित नैतिक अभ्यास ये सब तो किसी व्यक्ति के चरित्र को निर्माण करने वाला विषय हैं, जिनको बहुत कम मात्रा में किसी अन्य माध्यम में नकल किया जा सकता है। इसका असर जमा होते हुए कई साफ तरीकों से भावना (इमोशन) और मानवीय व्यवहार पर प्रभाव डालता है।

अब यह देखते हैं कि किताबें व्यक्ति के चरित्र को कैसे बनाती हैं?

**संज्ञानात्मक ढांचा और दुनिया को देखने का नजरिया:** किताबें ऐसे तर्क, दार्शनिक विचार और मूल्य प्रणाली (वैल्यू सिस्टम) पेश करती हैं जिन्हें पढ़ने वाले अपना सकते हैं, दिमाग में परख सकते हैं और अपने व्यक्तिगत नजरिए में शामिल कर सकते हैं। कुछ खास फ्रेमिंग, जैसे कि मानवतावाद, नागरिक के कर्तव्य वगैरह के बार-बार संपर्क में आ जाने से प्राथमिकता पर फ़ैसले लेने की क्षमता बदल जाती है।

**ज्यादा कल्पना और हमदर्दी:** कल्पनाग्रस्त आख्यान एवं गैर-कल्पनाग्रस्त सामाग्री पढ़ने वालों तो किसी दूसरे लोगों के हालात को पहचानने में समर्थक बन जाते हैं। बार-बार नजरिया अपनाने से हमदर्दी बढ़ती है, भेदभाव कम होता है और नैतिक सोच अग्रसर होती है - जिससे असल जिंदगी में दूसरों की पहचान आसान हो जाता है।

**प्रेरणा स्रोत (रोल मॉडल) और आदर्श:** जीवन चरित, स्मृति और चरित्र या पात्र पर आधारित फ़िक्शन ठोस रोल मॉडल और व्यावहारिक फार्मा या टेम्पलेट देते हैं। यह देखना कि चरित्र की चुनौतियों का सामना कैसे करते हैं, हिम्मत, ईमानदारी और विनम्रता के लिए आलेख (स्क्रिप्ट) देता है।

**संज्ञानात्मक अभ्यास और स्वनियमन (सेल्फ-रेगुलेशन):** लगातार पढ़ने से ध्यान, धैर्य और खुशी में देरी जैसे कोर एग्जीक्यूटिव फंक्शन बनते हैं, जो लंबे समय के प्रोजेक्ट्स में नैतिक व्यवहार और लगन को सपोर्ट करते हैं। लगातार पढ़ने से एकाग्रता और धैर्य बढ़ता है और तात्कालिक संतुष्टि की लालसा दूर होती है।

**सोच-विचार और पहचान का काम:** पढ़ने से मन में बातचीत होती है। किताबों के बारे में जर्नीलिंग करना या डायरी लिखना, टीका-टिप्पणी या एनोटेट करना, या लेखकों के दावों पर मन में बहस करना, सोच-समझकर खुद को परखने, मूल्यों को साफ करना और आत्म पहचान की एक सही समझ को बढ़ावा देता है।

**प्रवचन कौशलता या संवाद कौशलता:** पुस्तकीय शौक साझा वाचन संवादी संसाधन को बनाते हुए सामाजिक प्रभाव और जिम्मेदारी सहित एक नेतृत्व की क्षमता को उपलब्ध करवाती है। **भावनात्मक विनियमन (इमोशनल रेगुलेशन):** साहित्य को अक्सर पढ़ने वाले लोगों को सुरक्षित माहौल में दुख, नाकामी और नैतिक उलझनों से रूबरू कराता है, जिससे उन्हें ग्रस्त भावनाएं को समझने और भावनात्मक तौर पर मजबूत रहने में मदद मिलती है। किताब पढ़ने के तरीके जो केरेक्टर बनाने के असर को ज्यादा से ज्यादा करते हैं।

**अलग-अलग जॉनर मिलाएं:** नैतिक ढांचा पाने के लिए, ऐतिहासिक संदर्भों के साथ दर्शन या फिलॉसफी, जीवनी और साहित्यिक कल्पना का संयोजन मौजूद है। किताबों की वजह से व्यक्ति के चरित्र में बदलाव के कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं—

हमारे बापू महात्मा गांधी खुद ही एक आदर्श के रूप में खड़े हैं। उन्होंने अपनी आत्मकथा में यही वर्णित किया कि उनकी सत्यवादिता और अहिंसा में आस्था तो भगवद गीता पाठ से, श्रवण-पितृ भक्ति नामक पुस्तक पढ़ने से और खासकर हरिश्चंद्र नाटक देखने से ही पनपी है। वैसे ही कुछ अन्य उदाहरण भी नीचे प्रस्तुत किए गए हैं। गांधीजी को विश्व भर में एक अहिंसात्मक योद्धा के रूप में मानते आ रहे हैं।

एक कॉर्पोरेट मैनेजर जिसने युद्ध के समय के नेताओं की कई जीवनी पढ़ीं, इससे लाभ यह हुआ कि उसने मुश्किल समय में ज्यादा साफ दिनचर्या अपनाया और दबाव में भी अपने को ज्यादा शांत रह सका।

एक युवा जो अलग-अलग संस्कृति के उपन्यास पढ़ता था, उसने बताया कि मा.सं. प्रोफेशनल के तौर पर उसके अंदर ज्यादा हमदर्दी थी और नियुक्ति प्रणाली के तरीके में बदलाव आया।

पुस्तकों में एक ऐसी अद्भुत क्षमता है जो हर व्यक्ति अपने जीवन में नए द्वार, न्यूनतम रास्ते, स्पष्ट विचार और विशिष्ट दृष्टिकोण में सटीकता ला सकती हैं। पुस्तक पढ़ने से भाषा कौशल विकसित होते हैं, शब्दावली बढ़ती है और शैक्षणिक सफलता की देरी को दूर करने के लिए व्यापक समझ विकसित होती है। पुस्तक पढ़ने की आदत को बढ़ावा देने से कल्पना की नई शुरुआत मजबूत बन जाती है, आलोचनात्मक चिंतन बढ़ जाता है और विभिन्न अनुभवों के साथ सहानुभूति भी बढ़ती जाती है। इसके अलावा किताबें इंसान की व्यक्तिगत तरक्की के लिए विशिष्ट साधन का काम करती हैं, जिज्ञासा जगाती हैं और जिंदगी भर सीखने के शौक में बढ़ावा देती हैं। साथ ही साथ अपनी ही अवधारणा पर जोर देने वाले अन्य विषय भी इसके अंदर निहित हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि इस तेजी से बदलती दुनिया में, पुस्तकों को तत्काल चुनौतियों को निपटने के लिए जरूरी जानकारी प्रदान करते हुए

उपलब्ध मौकों का फायदा उठाने की तरीका भी सूचित करती है। पुस्तक पढ़ने की आदतें बनाने से कई फायदे होते हैं खासकर छात्रों की हिसाब से उनके अपनी कक्षा से आगे भी ले जाते हैं। छात्रों को अलग-अलग कलेवर और रचना पद्धति में तल्लीन होने से उन्हें अलग-अलग संस्कृति और नजरिए को समझने में मदद मिलती है। निम्नलिखित तथ्यों से हमें पता चलता है कि पुस्तकों किस तरीके से चरित्र निर्माण से जुड़ी हुई है।

भाषा और शब्दावली कौशल बेहतर होती है  
किताबें पढ़ने से शब्द ज्ञान बढ़ती है और भाषा की समझ बेहतर होती है।

विभिन्न सामाग्री पेश करने की अलग-अलग शैली को अपनाने की क्षमता प्राप्त होती है और वाक्यों की बनावट भी बढ़िया बन जाता है।

अलग-अलग संदर्भ में अर्थ-सहित नए शब्दों की पहचान और उनकी सही इस्तेमाल को समझने में मदद करती हैं, जिससे वे अपने विचार को ज्यादा साफ और स्पष्ट तौर पर बता पाते हैं। पढ़ने से व्याकरण और वाक्यविन्यास की समझ बढ़ती है, जिससे लेखन असरदार बन जाता है।

आखिर किताबें पढ़ने से पूरी तरह से संवाद कौशलता बेहतर होती है और वास्तविक ज्ञान का बढ़ावा भी हो जाता है

अच्छी तरह से पढ़ने की आदतें आलोचनात्मक चिंतन और विभिन्न समस्याओं का समाधान करने की कुशलता उपलब्ध करवाते हुए वास्तविक ज्ञान को बढ़ावा देती हैं।

किसी भी मुसीबत में समायोजिकता के साथ मजबूती को बनाए रखने की कोई भी मजबूती की क्षमता बढ़ा सकता है।

कुल मिलाकर यह किताबी शौक दिमागी काबिलियत को बढ़ाने और तेज करने के लिए एक मानसिक व्यायाम का काम करती है। आगे यह देखते हैं कि किताबें किस प्रकार से भावनात्मक और सामाजिक विकास पर असर डालती हैं।

किताबें लोगों के बीच भावनात्मक और सामाजिक विकास को बढ़ावा देने में अहम भूमिका निभाती हैं, क्योंकि वे खुद अलग-अलग कहानियों के जरिये मानव जीवन के मौलिक पहलुओं पर प्रकाश डालती हैं। इससे उन्हें व्यक्तिगत संवेदनाएं और अलग-अलग अवधारणाओं को समझने में मदद मिल सकती है और सहानुभूति भी बढ़ती है।

किताबों में मौजूद परिवेश और स्थितियों से कोई भी बहुत अच्छी तरह से सहानुभूति बढ़ा सकता है और किरदारों से बहुत अच्छी तरह जुड़ सकता है।

कहानियों की किताबों में जटिल, नैतिक दुविधाओं और मौजूदा भावनात्मक चुनौतियों के आधार पर, कोई भी बुनियादी इंसानी व्यवहार की बारीकियों को समझ पाएगा और उनके बारे में जान पाएगा।

व्यक्ति को आत्मा विश्लेषण करने की क्षमता पुस्तक की पढ़ाई से प्राप्त होती है।

किताबों या कहानियों के पात्रों की चरित्रिक विशेषताएँ से पढ़ने वालों को प्रेरणा और खुद के बारे में सोचने के साथ अलग-अलग तरह की चुनौतियों का सामना करने में मदद मिलती है।

किताब में दिखाए गए पात्रों से प्राप्त प्रेरणा और नतीजों को विवेचन करते हुए पढ़ने वाले अपनी जिंदगी को बहुत ही आसानी

से नाप तौल कर सकते हैं।

किताबें दुनिया में अपनी जगह और मकसद के बारे में ज्यादा भरोसा और समझ के साथ खुद को खोजने का एहसास कराती हैं।

### शैक्षणिक उपलब्धि:

आज की तेज रफ्तार वाली दुनिया में, जहाँ ध्यान भटकने वाला माहौल है, किताबें पढ़ने से ध्यान लगाने की क्षमता और एकाग्रता कौशल बढ़ती है।

खास तौर पर छात्र के लिए, किताबें उनके दिमाग को उनके दिए गए काम पर ज्यादा देर तक ध्यान केंद्र करने में मदद करती हैं। किताबें पढ़ने में बड़ा असर है।

पढ़ने का तरीका।

पढ़ने के लिए अच्छा माहौल बनाना।

पढ़ने की आदत को बनाए रखना।

अलग-अलग तरह की किताबें का चयन करना।

बुक क्लब बनाना।

परिवार के साथ पढ़ने के लिए बढ़ावा देना।

पढ़ने में मिली कामयाबी का जश्न मनाना।

किताबी शौक को प्रोत्साहन देना।

किताबों के चयन पर सुझाव बांटना।

किताबें, सहानुभूति पैदा करके, बुनियादी मूल्यों को सिखाकर और कहानियों के जरिए नैतिक फैसले लेने में सुधार करके, कहानी के पात्रों की बनावट में एक जरूरी साधन का काम करती हैं। वे समालोचनात्मक सोच (क्रिटिकल थिंकिंग) को बढ़ावा देकर, भावात्मक बुद्धि (इमोशनल इंटेलिजेंस) को भी विकसित करके और पढ़ने वालों को अलग-अलग नजरिए देखने का मौका देकर पर्सनैलिटी को बनाती हैं, जो सीधे नैतिक विकास पर असर डालती हैं। केरेक्टर बनाने में किताबों की खास भूमिकाएँ:

**महत्व बढ़ाना:** किताबें मोरल गाइड का काम करती हैं, ऐसी कहानियाँ देती हैं जो हिम्मत, ईमानदारी और दयालुता दिखाती हैं, जिससे पढ़ने वालों को ये गुण अपनाने में मदद मिलती है।

**आलोचनात्मक सोच को बढ़ावा देना:** एनालिटिकल रीडिंग सिचुएशन को समझने, जजमेंट बढ़ाने और एक सोच-समझकर खुले दिमाग वाला नजरिया बनाने में मदद करती है।

**प्रेरणास्रोत देना:** जीवन वृत्तांत (बायोग्राफी), आत्मकथा (ऑटोबायोग्राफी) और काव्य या साहित्य पढ़ने वालों को मजबूत चरित्रिक पात्रों से मिलवाते हैं और उन्हें अनुकरण करने के लिए सकारात्मक उदाहरण देते हैं।

**कल्पनाशक्ति को बढ़ावा देना:** साहित्य (लिटरेचर) पढ़ने वालों को अलग-अलग परिस्थितियों और नतीजों की कल्पना करने के लिए बढ़ावा देता है, जिससे नैतिक तर्क (एथिकल रीजनिंग) बेहतर होती है।

**उपसंहार:** पुस्तकें चरित्र निर्माण के लिए शक्तिशाली उपकरण हैं क्योंकि वे मन को प्रशिक्षित करती हैं, सहानुभूति को बढ़ाती हैं, आदर्श मॉडल प्रदान करती हैं और व्यावहारिक बुद्धिमत्ता देती हैं। उनका प्रभाव चयन, सक्रिय भागीदारी, चिंतन और अंतर्दृष्टियों को अदतन व्यवहार के बदलाव पर निर्भर करता है।

सेवानिवृत्त अधिकारी

पंजाब एण्ड सिंध बैंक

## सब कुछ पहले से तय है



पीयूष वालिया

हम सबने कभी न कभी यह सुना है— “जो लिखा है, वही होगा।” यह वाक्य हमारे जीवन का एक बहुत बड़ा सच है। जन्म से लेकर मृत्यु तक, सफलता से लेकर असफलता तक, जीवन के कई मोड़ ऐसे होते हैं जिन्हें हम चाहे जितनी कोशिश कर लें, बदल नहीं पाते। इसीलिए यह विश्वास हमारे मन में गहराई से बैठा हुआ है कि सब कुछ पहले से तय है।

लेकिन क्या इसका मतलब यह है कि हमें हाथ पर हाथ रखकर बैठ जाना चाहिए? बिल्कुल नहीं। जीवन में जो भी लिखा है, वह अपने समय पर हमें मिलेगा। हमारा काम केवल मेहनत करना है और बाकी का काम भाग्य पर छोड़ देना है।

### भाग्य क्या है?

भाग्य यानी डेस्टिनी — वह अदृश्य शक्ति जो हमारे जीवन की दिशा तय करती है। कब हम पैदा होंगे, किस परिवार में पैदा होंगे, कौन हमारा मित्र बनेगा, कौन हमसे अलग हो जाएगा ख़र ये सब पहले से तय होता है।

कई बार हम सोचते हैं कि हम अपनी जिंदगी के फ़ैसले खुद लेते हैं। हाँ, फ़ैसले तो हम खुद लेते हैं, पर विकल्प हमारे सामने कौन रखता है? परिस्थिति कौन बनाता है? यह सब भाग्य तय करता है।

### क्या सब कुछ पहले से तय है?

नहीं, सब कुछ नहीं।

कुछ बातें तय हो सकती हैं — जैसे जन्म और मृत्यु।

लेकिन हम क्या करेंगे, कैसे सोचेंगे, कितना मेहनत करेंगे — यह हमारे हाथ में है।

### कर्म और भाग्य का संबंध

कर्म यानी हमारे काम, हमारी मेहनत। अगर भाग्य पहले से लिखा है, तो कर्म का क्या मतलब? दरअसल कर्म ही वह माध्यम है जिससे भाग्य पूरा होता है।

### समर्पण का महत्व

जब हम यह मानकर मेहनत करते हैं कि “जो होना है, वही होगा,” तो हमारे मन से डर और तनाव चला जाता है। हम शांति से अपना सर्वश्रेष्ठ प्रयास कर पाते हैं। यही जीवन जीने का सबसे सुंदर तरीका है।

### आइए इस विचार को विस्तार से समझते हैं।

गाँव का एक बुजुर्ग व्यक्ति हर शाम पीपल के पेड़ के नीचे बैठकर बच्चों को जीवन की बातें समझाता था। एक दिन मोहन नाम का लड़का आया और बोला —

“बाबा! ये लोग कहते हैं कि सब कुछ पहले से लिखा है। अगर ऐसा है, तो हमें मेहनत क्यों करनी चाहिए? जो होना है, वो तो वैसे भी होगा।”

बाबा मुस्कराए और बोले —

“बेटा, आज मैं तुझे कुछ कहानियाँ सुनाता हूँ। फिर तू खुद समझ जाएगा कि सब कुछ कैसे पहले से तय है और हमें क्या करना चाहिए।”

### पहली कहानी — उड़ान का छूट जाना और जीवन का बच जाना

बाबा ने कहा —

“कई साल पहले एयर इंडिया का एक विमान क़ैश हो गया था। सौ से ज्यादा लोग उसमें सवार थे। सबकी मौत हो गई। यह बहुत दुखद घटना थी।

पर सोचने वाली बात ये है कि कई लोग ऐसे थे जिन्हें उसी विमान में बैठना था, लेकिन वे लेट हो गए। किसी का पासपोर्ट घर पर रह गया, किसी की टैक्सी खराब हो गई, किसी का बच्चा अचानक बीमार हो गया और वह एयरपोर्ट ही नहीं पहुँच सका।

उस समय उन्हें गुस्सा आया होगा कि हम क्यों लेट हो गए, पर बाद में उन्हें समझ आया कि ये लेट होना ही उनकी जान बचाने का कारण बना।

देखा मोहन, जो जाने वाले थे, वे चले गए। जो बचने वाले थे, वे बच गए। यही भाग्य है।”

मोहन की आँखें बड़ी हो गई —

“मतलब बाबा, किसी की मौत तक पहले से लिखी होती है?”

बाबा ने सिर हिलाया —

“हाँ बेटा। जन्म और मृत्यु तय है। हमें बस इतना करना है कि हम अपना जीवन अच्छे कर्मों से भर दें।”

### दूसरी कहानी — गरीब से करोड़पति

बाबा ने फिर कहा —

“सुन, एक और कहानी सुन। एक छोटे से कस्बे में एक गरीब आदमी रहता था। वह दिनभर मजदूरी करता था, मुश्किल से घर का खर्च चलता था। एक दिन उसने मजाक में एक लॉटरी का टिकट खरीद लिया।

सोचो, क्या हुआ? वह टिकट निकला और वह आदमी रातों-रात करोड़पति बन गया।

क्या उसने टिकट इसलिए खरीदा क्योंकि उसे पता था कि वह जीतेगा? नहीं। उसने तो बस मजाक में कोशिश की।

जीतना या हारना उसके भाग्य में पहले से लिखा था। पर जीत का रास्ता तभी खुला क्योंकि उसने टिकट खरीदा यानी कर्म किया।”

मोहन मुस्कराया –

“तो बाबा, कोशिश करनी जरूरी है!”

“हाँ बेटा,” बाबा बोले –

“भाग्य वह बीज है जो पहले से बोया जा चुका है। पर पौधा तभी निकलेगा जब तू पानी डालेगा यानी कर्म करेगा।”

### तीसरी कहानी – बाढ़ का कहर और किस्मत का खेल

बाबा ने आगे कहा –

“हर साल भारत में कई जगह बाढ़ आती है। नदी का पानी गाँव-गाँव में घुस जाता है। कई लोग अपनी जान गंवा देते हैं, कई लोग बेघर हो जाते हैं।

पर आश्चर्य की बात यह होती है कि कभी-कभी एक ही घर के दो लोग होते हैं, एक की जान बच जाती है और दूसरा बह जाता है।

क्या ये इंसान के बस में था? नहीं बेटा, यह भी भाग्य था। जो बचने वाला था, वह बच गया। जो जाने वाला था, वह चला गया।”

मोहन चुप हो गया। उसे समझ आ रहा था कि जीवन में कई चीजें हमारे नियंत्रण से बाहर होती हैं।

### कर्म का महत्व

बाबा बोले –

“अब तू सोच रहा होगा कि अगर सब पहले से तय है तो हम मेहनत क्यों करें?”

सुन बेटा, अगर किसान यह सोच ले कि जो लिखा होगा वही होगा, और खेत में बीज ही न डाले, तो उसे फसल कैसे मिलेगी?

भाग्य बीज है, पर बीज को अंकुरित करने के लिए मेहनत करनी पड़ती है। कर्म करना पड़ता है। इसलिए हमें हमेशा अपनी पूरी कोशिश करनी चाहिए।”

### तनाव से मुक्ति का मंत्र

बाबा ने समझाया –

“जब हमें पता होता है कि जो होना है वही होगा, तो हमारे मन का डर और तनाव खत्म हो जाता है। अगर असफलता मिली तो समझो कि यही लिखा था। अगर सफलता मिली तो धन्यवाद दो। अगर मुश्किल आई तो धैर्य रखो, क्योंकि यह भी समय बीत जाएगा। ऐसा सोचने से मन हल्का हो जाता है।”

### मोहन की सीख

मोहन ने गहरी सांस ली और बोला –

“बाबा, अब मुझे समझ आया। सब कुछ पहले से लिखा है,

लेकिन कोशिश करना मेरा काम है। अगर मेहनत करूंगा तो जो भी मिलेगा, चैन से स्वीकार कर पाऊँगा।”

बाबा मुस्कराए और बोले –

“सही कहा बेटा। यही जीवन का रहस्य है। मेहनत कर, पर परिणाम की चिंता मत कर। जो तेरे लिए लिखा है, वह तुझे तक आकर रहेगा – चाहे तू भागे, चाहे छुपे।”

### निष्कर्ष –

#### जीवन एक किताब की तरह

बाबा उठे और आसमान की ओर देखकर बोले –

“जीवन एक किताब की तरह है। उसके पन्ने पहले से लिखे जा चुके हैं। हम बस उन्हें एक-एक करके पढ़ते हैं।

इसलिए बेटा, मेहनत कर, सच्चाई से जी, जो मिला उसे खुशी से स्वीकार कर, और भरोसा रख कि जो तेरे लिए है, वह तुझे जरूर मिलेगा।”

मोहन के चेहरे पर मुस्कान थी। उसके मन का डर और चिंता दोनों गायब हो गए थे। अब वह जान चुका था कि भाग्य पर विश्वास और कर्म का संतुलन ही सुखी जीवन का सबसे बड़ा राज है।

“सब कुछ पहले से तय है” – यह सोच हमें जीवन को समझने में मदद करती है। यह हमें सिखाती है कि कुछ चीजें हमारे हाथ में नहीं होतीं, लेकिन कुछ चीजें हम खुद तय कर सकते हैं।

हमें यह मानना चाहिए कि:

- कुछ बातें पहले से तय होती हैं, जैसे जन्म, परिवार, कुछ घटनाएँ।
- लेकिन हमारी मेहनत, सोच और कर्म से हम अपने जीवन को बेहतर बना सकते हैं।

इसलिए हमें हमेशा कोशिश करते रहना चाहिए। अगर हम यह सोचें कि सब कुछ पहले से तय है और कुछ न करें, तो हम जीवन में पीछे रह जाएंगे। लेकिन अगर हम यह मानें कि कोशिश करना भी नियति का हिस्सा है, तो हम आगे बढ़ सकते हैं।

### उपसंहार

मनुष्य को चाहिए कि वह भाग्य पर विश्वास करते हुए भी कर्म को सर्वोपरि माने। यदि हम यह मान लें कि सब कुछ पहले से तय है, तो हम प्रयास करना छोड़ देंगे। लेकिन यदि हम यह मानें कि हम अपने कर्मों से अपना भविष्य गढ़ सकते हैं, तो हम न केवल अपने जीवन को बेहतर बना सकते हैं, बल्कि समाज और राष्ट्र के विकास में भी योगदान दे सकते हैं।

इसलिए, जीवन में संतुलन आवश्यक है – भाग्य को स्वीकार करें, परंतु कर्म को न छोड़ें। यही जीवन का सार है।

अंत में यही कहना सही होगा – “कर्म करते रहो, फल की चिंता मत करो।”

वरिष्ठ प्रबंधक  
निरीक्षण एवं लेखापरीक्षा विभाग

## संसदीय समिति का निरीक्षण दौरा



माननीय संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उप-समिति के माननीय सदस्यों द्वारा दिनांक 10.06.2026 को आंचलिक कार्यालय, चंडीगढ़ का राजभाषा निरीक्षण किया गया।

## साक्ष्य समिति का निरीक्षण दौरा



माननीय संसदीय राजभाषा समिति की आलेख एवं साक्ष्य उप समिति द्वारा दिनांक 17.06.2026 को शाखा पूर्णिया का राजभाषा संबंधी निरीक्षण किया गया।

ੴ ਸ੍ਰੀ ਵਾਹਿਗੁਰੂ ਜੀ ਕੀ ਫਤਹਿ

ਪੰਜਾਬ ਐਂਡ ਸਿੰਧ ਬੈਂਕ  
(ਭਾਰਤ ਸਰਕਾਰ ਦਾ ਉਪਕਰਮ)



Punjab & Sind Bank  
(A Govt. of India Undertaking)

ਜहाँ सेवा ही जीवन - ध्येय है

Where service is a way of life

— हर जरूरत के लिए तत्काल धनराशि! —  
**पीएसबी आभूषण ऋण**



सोने/चांदी के आभूषणों पर ऋण के लिए  
सर्वोत्तम मूल्य प्राप्त करें



लचीली पुनर्भुगतान शर्तें



₹50.00 लाख तक का ऋण



न्यूनतम प्रसंस्करण प्रभार



कृषि/एमएसएमई उधारकर्ताओं के लिए  
आकर्षक ब्याज दरें

#पीएसबी आभूषण ऋण

टोल फ्री नंबर

1800 419 8300

हमें फॉलो करें @psbindofficial



• सिक्का ₹ 500 का